वैश्विक संवाद

13.1

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

समाजशास्त्र पर बातचीत औलेनबैकर और क्लाउस डोरे के साथ

ब्रेनो ब्रिंगेल
कैरोलिना वेस्टेना
विटोरिया गोंजालेज

XX आईएसए विश्व कांग्रेस की ओर

साड़ी हनाफी
अनाही विलाड्रिच
जेफ्री प्लीर्स
रोसाना पिनहेरो–मचाडो
तातियाना वर्गास–मैया

प्लूरिवर्स और सामाजिक–पारिस्थितिक बदलाव

मैरिस्टेला स्वाम्पा
अल्बर्टो अकोस्टा
एनरिक वायले
ब्रेनो ब्रिंगेल
मिरियम लैंग
रफाएल होइतमर
कारमेन अलीगा
लिलियाना बुइट्रागो
वंदना शिवा
मोनिका चूजी
ग्रिमाल्डो रेंगिफो
एडुआर्डो गुडिनास
लेस्ली ले ग्रेंज
क्रिस्टेल टेरेब्लांचे
कॉर्मेक कुलिनन

सैद्धांतिक दृष्टिकोण

जोस मौरिसियो डोमिंग्यूज

खुला अनुभाग

> सामाजिक विज्ञानों को (पुन:) खोलना: खुले विज्ञान की चुनौतियां
> एकाधिक समाजशास्त्रों के लिए एक दक्षिणी अवधारणा
> लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र और समकालीन सभ्यता का संकट
> बिखरा हुआ ब्राजील
> ईरान: यह विरोध नहीं है, यह एक क्रांति है

पत्रिका
GD
अंक 13 / क्रमांक 1 / अप्रैल 2023
https://globaldialogue.isa-sociology.org/
isa International Sociological Association

> सम्पादकीय

ग्लोबल डायलॉग में हमारी नई संपादकीय टीम के पहले और 2023 के इस पहले अंक में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। 2022 के अंत में, आईएसए के प्रकाशन उपाध्यक्ष एलोइसा मार्टिन से नए संपादक के रूप में अपनी नियुक्ति के बारे में सुनकर मैं रोमांचित था। ब्रिगिट औलेनबैकर और क्लाउस डोरे के नेतृत्व वाली पिछली संपादकीय टीम ने एक सुचारु परिवर्तन सुनिश्चित किया। मैं उन्हें और उनके सहायक संपादक राफेल डिंडल, जोहाना ग्रुबनेर, वालिद इब्राहिम और क्रिस्टीन शिकर्ट को पिछले वर्षों में उनके समर्थन और शानदार काम के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। सलाहकार संपादकों के रूप में संस्थापक संपादक माइकल बुरावॉय के साथ प्रोफेसर औलेनबैकर और डोरे शामिल रहेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आवश्यक परिवर्तनों के साथ परियोजना के चल रहे इतिहास के मिलान में यह महत्वपूर्ण होगा।

हमारे प्रबंध संपादक लोला बुसुत्तिल, जो शुरुआत से ही *ग्लोबल डायलॉग* के साथ काम कर रही हैं, एक सुरक्षित परिवर्तन के लिए सबसे अच्छी गारंटी रही हैं। अगस्त बगा, टोफा इवांस और क्षेत्रीय संपादकों की बड़ी और समर्पित टीम के साथ उनका समर्थन बुनियादी है।

2010 में लॉन्च होने के बाद से *ग्लोबल डायलॉग* प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ रहा है। एक कलात्मक प्रारूप और अपेक्षाकृत सीमित दायरे के साथ यह एक न्यूजलेटर के रूप में प्रारम्भ हुआ। केवल दस वर्षों में, यह दुनिया भर से लेखकों की प्रभावशाली संख्या के साथ, एक दर्जन से अधिक भाषाओं में प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका बन गई, जिससे दुनिया के सभी क्षेत्रों के समाजशास्त्रियों के लिए समकालीन दुनिया की अन्य वास्तविकताओं, शोध परिणामों और चिंताओं के बारे में अधिक अधिक जानना संभव हुआ है।

इस महत्वपूर्ण कार्य को समेकित और विस्तारित करने की आवश्यकता है। हमने आने वाले वर्षों में *वैश्विक संवाद* को और विकसित करने के लिए तीन मुख्य चुनौतियों की पहचान की हैः आईएसए से और इसके परे भी, सार्वजनिक और वैश्विक समाजशास्त्र का निर्माण करना, वैश्विक संवाद के संपादकीय अनुभागों को पुनर्गठित करना और स्थिरता प्रदान करना, और संचार और प्रसार रणनीतियों को पुनः परिभाषित करना।

इनमें से प्रत्येक चुनौती के लिए मेरे पास कई विचार हैं, लेकिन उन्हें लागू करने से पहले, मैं आपसे सुनना चाहता हूं। इसके लिए, अब और आगामी जून में मेलबर्न में बीसवीं आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी के मध्य, मैं अपने सहायक संपादक कैरोलिना वेस्टेना और विटोरिया गोंजालेज की मदद से आईएसए समुदाय के भीतर एक व्यापक संवाद शुरू करूंगा। दोनों प्रतिभाशाली युवा वैश्विक सामाजिक वैज्ञानिक हैं जिनके पास संपादकीय अनुभव है और जन समाजशास्त्र के प्रति व्यापक प्रतिबद्धता है। कैरोलिना कासेल, जर्मनी और विटोरिया, रियो डी जनेरियो, ब्राजील में स्थित है।

यह अंक पूर्व संपादक औलेनबैकर और क्लॉस डोरे के साथ एक साक्षात्कार के साथ शुरू होता है, जिसमें वे बताते हैं कि कैसे वे जन समाजशास्त्र को अपने शोध एजेंडे में अनुवादित करते हैं, वैश्विक संवाद के संपादकों के रूप में उनकी चुनौतियों और वैश्विक समाजशास्त्र को आगे बढ़ाने के लिए उनके दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं।

पहली संगोष्ठी ऑस्ट्रेलिया में होने वाली आगामी आईएसए कांग्रेस को ध्यान में रख रहे विभिन्न पाठों को एक साथ लाती है। सारी हनाफी अपने कुछ केंद्रीय विषयों पेश करते हैं और अनाही विलाड्रिच ऑनलाइन और आमने–सामने के प्रारूपों के बीच परिवर्तन के वर्तमान क्षण पर चिंतन करते हैं। इसके मुकाबले में, जेफ्री प्लीयर्स, वैश्विक समाजशास्त्र के सामने आने वाली कुछ मुख्य कुछ चुनौतियाँ और उनको सम्बोधित करने में आईएसए की भूमिका पर चर्चा करते हैं। रोसाना पिनहेरो–मचाडो और तातियाना वर्गास–मैया कांग्रेस के केंद्रीय विषयों में से एक, समकालीन अधिनायकवाद को लेते हैं और यह खोजने का प्रयास करते हैं कि हमें समकालीन चरम दक्षिणपंथ का अध्ययन करने के लिए एक नए ढाँचे की आवश्यकता क्यों है।

दूसरी संगोष्ठी आशीष कोठारी, एरियल सलेह, आर्टुरो एस्कोबार, फ़ेडेरिको डेमारिया और अल्बर्टो अकोस्टा द्वारा नियोजित एक सामूहिक वैश्विक प्रयासः पोस्ट–डेवलपमेंट डिक्शनरी *प्लुरिवर्स*, को दृश्यता देने का प्रयास करती है। आलेखों के रोमांचक संग्रह के बीच, हमने विकास के विकल्प (वंदना शिवा), अच्छे से जीना (मोनिका चूजी, ग्रिमालदो रेंगिफॉनड एडुआर्डो गुदीनस), उबुन्टु (लेस्ली ले ग्रांगे), पारिस्थितिक–नारीवाद (क्रिस्टेल टेर्रेबलांचे), और प्रकृति के अधिकार (कर्मक कुलिनन) जैसे विषयों पर वैश्विक संवाद की सम्भावना पर प्रमुख कार्यकर्त्ता और बुद्धि जीवियों के लघु पाठ को प्रकाशित करने का फैसला किया। इसके अलावा, दक्षिण के इको सोशल और इंटरकल्वरल पैक्ट के सदस्य (मैरिस्टेला स्वाम्पा, अल्बर्टो अकोस्टा, एनरिक विया, मरियम लैंग, राफेल होएट्मर, कारमेन अलीगा, लिलियाना बुइट्रागो, और मैं) यह सवाल करते हुए कि उत्तर में प्रभुत्वशाली कर्त्ताओं का प्राधान्य पारिस्थितकीय परिवर्तनध्संक्रमण किस प्रकार एक नए हरित निष्कर्षण को आकारित कर रहे हैं। यह हरित निष्कर्षण पारिस्थितिक ऋण को तीव्र करता है, हरित उपनिवेशवाद की संभावना प्रबल करता है और वैश्विक दक्षिण में त्याग के क्षेत्रों का विस्तार करता है। इस परिदृश्य के विकल्प भी इस आलेख के और संगोष्ठी का मुख्य फोकस हैं।

सैद्धांतिक खंड में, जोस मौरिसियो डोमिंग्यूज पूछते हैं कि क्या महामारी के बाद की दुनिया ने आधुनिकता के एक नए चरण का उदय किया है। राज्य के विकास, अर्थव्यवस्था और सामाजिक नीतियों के कुछ रुझानों का उनका ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण हमें महामारी से उपजी जल्दबाजी की व्याख्याओं से परे जाने में मदद करता है।

अंत में, खुला अनुभाग समकालीन समाजशास्त्र के लिए विभिन्न चुनौतियों का परिचय देने वाले तीन लेखों को एक साथ लाता है। फर्नांडा बेगेल चर्चा करते हैं कि सामाजिक विज्ञान वैज्ञानिक अनुसंधान के परिण ाामों और प्रक्रिया को खोलने के लिए खुले विज्ञान की अनिवार्यताओं का सामना कैसे करते हैं। महमूद धौदी बहुल समाजशास्त्रों के लिए एक दक्षिण ाी अवधारणा का दावा करते हैं। और लैटिन अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन (ALAS) के सदस्य समकालीन सभ्यतागत संकट और इस क्षेत्र में समाजशास्त्र की भूमिका का निदान करते हैं। दो और आलेख विशेष रूप से ब्राजीलियाई और ईरानी वास्तविकता को संबोधित करते हैं। पहले में, एलिसियोएस्टैंक और एग्नाल्डो डी सूसा बारबोसा का तर्क है कि ब्राजील के वर्तमान ध्रुवीकरण को समझने के लिए अल्पावधि से परे एक व्याख्या की आवश्यकता है। अपने लेखक के जीवन की रक्षा के लिए एक छद्म नाम के तहत प्रकाशित दूसरा आलेख, ईरान में हाल की लामबंदी का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हम न तो इन स्थितियों को सामान्य कर सकते हैं और न ही हम बड़े पैमाने पर सत्तावाद के सामने चुप रह सकते हैं। वैश्विक अन्याय के खिलाफ खड़े होने के साथ वैश्विक संवाद कठोर समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए प्रतिबद्ध रहेगा! हम नवीनीकृत अंतर्राष्ट्रीयतावाद के लिए खड़े हैं! ■

ब्रेनो ब्रिंगेल, ***ग्लोबल डायलॉग*** के संपादक

> वैश्विक संवाद जी.डी. वेबसाइट पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।

> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रेनो ब्रिंगेले

सह–सम्पादक : विटोरिया गोंजालेज, कैरोलिना वेस्टेना

सहयोगी सम्पादक : क्रिस्टोफर इवांस

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे, ब्रगिट औलेनबैकर, क्लाउस डोरे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोहडा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, दांते मार्चिसिओ।

बांग्लादेशः हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, बिजॉय कृष्णा बनिक, अब्दुर रशीद, सरकर सोहेल राणा, मोहम्मद शाहिदुल इस्लाम, हेलल उद्दीन, मसुदुर रहमान, यास्मीन सुल्ताना, रुमा परवीन, शर्मिन अख्तर शप्ला, सालेह अल ममून, एकरामुल कबीर राणा, फरहीन अख्तर भुइयां, खदीजा खातून, आयशा सिद्दीकी हुमायरा, आरिफुर रहमान, इस्तियाक नूर मोहित, मोहम्मद शाहीन अख्तर।

ब्राजील : फेबरिसियो मासिएल, एंड्रेजा गली, रिकार्डो वासीर, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज्जिनी मेंडिस।

फ्रॉस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, राकेश राणा, मनीष यादव, प्रज्ञा शर्मा।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, एलहम शुशत्राजिदे।

कजाकिस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल, मदियार एल्दियारोव।

पोलैंडः अलेक्सांद्रा बिएरनका, जोआना बेडनारेक, अन्ना टर्नर, मार्टा बास्ज़िज़्स्का, उर्स्जुला जारेका।

रोमानिया : रलुका पॉपेस्कू, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, बियांका मिहायला, डायना मोगा, लुईता नीस्टोर, रुक्सान्द्रा पादुरारु, मारिया व्लासेनु।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, डारिया खोलोडोवा।

ताईवान : वान–जू ली, ताओ–युंग लु, यू–वेन लिओ, पो–शुंग होन्ग, यी–शुओ हुआंग, चिएन–यिंग–चिएन, जी हाओ केर्क, मार्क यी–वेई लाई, यूं–जो लिन, यूं–हुआन चाउ।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

इस साक्षात्कार में, ब्रिगिट औलेनबैकर और क्लाउस डोरे सार्वजनिक और वैश्विक समाजशास्त्र के लिए कुछ चुनौतियों पर जोर देते हैं, और ये दो अवधारणाएं उनके शोध एजेंडे और वैश्विक संवाद में कैसे काम करती हैं।

बीसवीं आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी को समर्पित अनुभाग इस आयोजन के कुछ केंद्रीय विषयों पर विचार प्रस्तुत करता है, जैसे हाइब्रिड और इन–पर्सन सम्मेलनों की चुनौतियां, वैश्विक समाजशास्त्र और वैश्विक संवाद का नवीनीकरण, और चरम दक्षिणपंथ का विकास।

लुरिवर्स और सामाजिक–पारिस्थितिक संक्रमण पर विषयगत खंड कुछ मूल अवधारणाओं की छान बीन करता है, जैसे कि बुएन विविर, विकास, पारिस्थितिक नारीवाद, ग्रीन पैक्ट्स, प्रकृति के अधिकार और उबंटू।

कवर चित्र का श्रेयः पिक्साबे

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

संपादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

सार्वजनिक और वैश्विक समाजशास्त्र के लिए चुनौतियां : औलेनबैकर और क्लाउस डोरे के साथ एक साक्षात्कार
ब्रेनो ब्रिंगेल, ब्राजील/स्पेन; कैरोलिना वेस्टेना, जर्मनी; और विटोरिया गोंजालेज, ब्राजील द्वारा 5

> XX आईएसए विश्व कांग्रेसकी ओर

XX आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी, मेलबोर्न में आपका स्वागत है
साड़ी हनाफी, लेबनान द्वारा 8

महामारी पश्च (लगभग) के बाद की दुनिया में इन–पर्सन कॉन्फ्रेंस को फिर से जगाना
अनाही विलाड्रिच, यूएसए द्वारा 11

एक नवीनीकृत वैश्विक संवाद के रूप में वैश्विक समाजशास्त्र
जेफ्री प्लीर्स, बेल्जियम द्वारा 13

वैश्विक दक्षिण में चरम दक्षिणपंथ का अध्ययन करने के लिए हमें एक नए ढाँचे की आवश्यकता क्यों है
रोसाना पिनहेरो–मचाडो, आयरलैंड और तातियाना वर्गास–मैया, ब्राजील द्वारा 16

> प्लूरिवर्स और सामाजिक–पारिस्थितिक बदलाव

हरित समझौतों एवं पारिस्थितिक–सामाजिक बदलाव की भू–राजनीति
मैरिस्टेला स्वाम्पा और एनरिक वायले, अर्जेंटीना; अल्बर्टो अकोस्टा और मिरियम लैंग, इक्वाडोर; ब्रेनो ब्रिंगेल, ब्राजील/ स्पेन; रफाएल होइतमर, पेरू; कारमेन अलीगा, बोलीविया; और लिलियाना बुइट्रागो, वेनेजुएला 19

एक फीसदी के लिए विकास
वंदना शिवा, भारत द्वारा 23

ब्यून विविर : वंशावली और क्षितिज
मोनिका चूजी, इक्वाडोर; ग्रिमाल्डो रेंगिफो, पेरू; और एडुआर्डो गुडिनास, उरुग्वे द्वारा 25

उबंटू: एक न्यायसंगत और सशक्त अवधारणा और जीने का तरीका
लेस्ली ले ग्रेंज, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 27

पारिस्थितिकी नारीवादी बहस का मानचित्रण
क्रिस्टेल टेरेब्लांचे, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 29

प्रकृति अधिकार और पृथ्वी न्यायशास्त्र
कॉर्मैक कुलिनन, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 31

> सैद्धांतिक दृष्टिकोण

महामारी के बाद की प्रवृत्तियाँ और आधुनिकता के चरण
जोस मौरिसियो डोमिंग्यूज, ब्राजील द्वारा 33

> खुला अनुभाग

सामाजिक विज्ञानों को (पुनः) खोलनाः खुले विज्ञान की चुनौतियां
फर्नांडा बेइगेल, अर्जेंटीना द्वारा 36

एकाधिक समाजशास्त्रों के लिए एक दक्षिणी अवधारणा
महमूद धौदी, ट्यूनीशिया, द्वारा 39

लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र और समकालीन सभ्यता का संकट
लैटिन अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन द्वारा 40

बिखरा हुआ ब्राजील
एलीसीओ एस्तानक्यू, पुर्तगाल, और अगनाल्डो दे सौसा बारबोसा, ब्राजील द्वारा 42

ईरानः यह विरोध नहीं है, यह एक क्रांति है
ईरानीयन वाईसेज, द्वारा 44

समाज में अधिक पदानुक्रमित धुरुवीकरण के साथ, हम ऐसे समय में रह रहें हैं जब उचित सार्वजनिक बहस अक्सर असंभव होती है।

साड़ी हनाफी

> सार्वजनिक और वैश्विक

समाजशास्त्र के लिए चुनौतियां

औलेनबैकर और क्लाउस डोरे के साथ एक साक्षात्कार

ब्रेनो ब्रिंगेल, ग्लोबल डायलॉग के आगामी संपादक, और **कैरोलिना वेस्टेना** और **विटोरिया गोंजालेज**, ग्लोबल डायलॉग के आगामी सहायक संपादक द्वारा

| *ब्रिगिट औलेनबैकर। साभारः व्यक्तिगत संग्रह*

| *क्लाउस डोरे। साभारः व्यक्तिगत संग्रह*

ग्लोबल डायलॉग एडिटर्स (जीडीई): आप अपने स्थानीय अनुसंधान नेटवर्क और आईएसए के भीतर अपने अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव दोनों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक समाजशास्त्र की अवधारणा को अपने शोध एजेंडे में कैसे स्थानांतरित करते हैं?

ब्रिगिट औलेनबैकर (बीए): सार्वजनिक समाजशास्त्र एक ऐसी अवधारणा है जो वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार की अनुमति देती है और शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक दर्शकों के बीच विमर्श को उत्तेजित करती है, विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों से चर्चित विषयों को उठा कर समाजशास्त्रीय कार्य को प्रेरित करती है। जिस प्रकार माइकल बुरावॉय ने इस शब्द को गढ़ा है, यह समाजशास्त्रियों के वैज्ञानिक ज्ञान को उपलब्ध कराने (''पारंपरिक'' सार्वजनिक समाजशास्त्र) या नागरिक समाज से उभरने वाली पहलों में उनकी संलग्नता (''ऑर्गेनिक'' सार्वजनिक समाजशास्त्र) का वर्णन करने वाली एक व्यापक अवधारणा है। एक विवेचनात्मक समाजशास्त्री के रूप में, मैं समाज के सिद्धांत के संयोजन के दोहरे एजेंडे पर काम करती हूं, विशेष रूप से, डिजिटलाइजेशन, घरेलू काम और वरिष्ठ होम केयर, आवासीय देखभाल या विश्वविद्यालयों का बाजारीकरण जैसे मुद्दों को कवर करते हुए कार्य, श्रम, देखभाल और विज्ञान के रूपांतरण की अनुभवजन्य जांच के साथ नारीवादी और परस्परछेदी दृष्टिकोण से समकालीन पूंजीवाद का विश्लेषण करना। यदि हम वैश्वीकरण के दूसरे युग (1990 के दशक से) को एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में लेते हैं, तो हम पूंजीवाद के परिवर्तन को आर्थिक, पारिस्थितिक, सामाजिक और राजनीतिक संकटों में परिणत होते देख रहे हैं और बहुत सारे विरोधों को जन्म दे रहे हैं।

मेरे दृष्टिकोण से यह घटनाक्रम जिसे मैं पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक लापरवाही कहती हूं, के कारण होता है। मानव के आधुनिक यूरोकेंद्रित और एंड्रोकेन्द्रित विचार एवं मानवीय और गैर–मानवीय प्रकृति और प्रतिस्प्रर्धा एवं वृद्धि दोनों में महारत हासिल करने में प्रयासरत वैज्ञानिक–प्रौद्योगिक प्रगति में जड़, पूंजीवादी

> >

व्यवस्था संचय–, लाभ– और उत्पादन की बाजार संचालित प्रणाली के द्वारा पारिस्थितिक और सामाजिक आवश्यकताओं से स्वयं को उपेक्षित, अधीनस्थ या मूल्यांकित करके दूर करती है। यह लिंग, जाति और वर्ग के संबंधों में प्रभुत्व के साथ–साथ चलता है। जलवायु परिवर्तन के व्यापक दायरे और बढ़ती गरीबी और असमानताओं के साथ–साथ राजनीतिक प्रतिक्रियाओं में दृश्यमान विनाशकारी प्रभाव जैसे दुनिया भर में सत्तावादी बदलाव, स्पष्ट हैं। ऑस्ट्रिया में, हमने कार्ल पोलान्यी के आधुनिक क्लासिक कार्यों को पुनः खोजा और इंटरनेशनल कार्ल पोलैनी सोसाइटी की स्थापना की, जो ''डबल मूवमेंट'' के परिणाम के रूप में बाजार पूंजीवाद के इतिहास की उनकी समझ का उपयोग करती हैः प्रकृति, श्रम, धन के विनाशकारी बाजार–कट्टरपंथी वस्तुकरण की ''चाल'' और, हम देखभाल, ज्ञान और अन्य ''काल्पनिक वस्तुओं'' को जोड़ सकते हैं के साथ में ''विरोधी आंदोलन'', उदाहरण के लिए श्रम संघों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए श्रम और सामाजिक आंदोलन, फ्राइडेस फॉर फ्यूचर, देखभाल की पहलें और कई अन्य, नवउदारवादी बाजार पूंजीवाद के विनाशकारी प्रभावों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। मेरे स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क में और नवउदारवाद के तहत पूंजीवाद, काम और श्रम, देखभाल और विज्ञान के रूपांतरण का विश्लेषण करने वाले ग्लोबल डायलॉग के खंडों में सार्वजनिक समाजशास्त्र समाजशास्त्रीय सिद्धांत पर केंद्रित है, लेकिन साथ ही व्यावहारिक या राजनीतिक सिफारिशों पर भी।

हमारे विषय में, इस बात पर सहमति की काफी कमी है कि समाजशास्त्र को क्या और कैसे सार्वजनिक किया जाना चाहिएः क्या विषय को सामाजिक घटनाक्रमों का निरीक्षण, विश्लेषण और वर्णन करना चाहिए या इसे हस्तक्षेप करना चाहिए? चूँकि समाजशास्त्र उस समाज का हिस्सा है जिसका वह अध्ययन करता है, ऐसा कोई विशेषाधिकार प्राप्त दृष्टिकोण नहीं है जो हमें लोगों को – या तो समकालीन विकास के बारे में उनके विचारों और विश्लेषण के संबंध में या उनकी गतिविधियों के संबंध में– यह बताने की अनुमति देता है कि उन्हें क्या करना चाहिए। लेकिन समाजशास्त्री वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान कर सकते हैं और बहस को प्रोत्साहित कर सकते हैं और शोधकर्ताओं के रूप में भावी परिपेक्ष्यों और धारणीय आजीविका को बनाए रखने के तरीकों पर बातचीत करने वाले विभिन्न कर्त्ताओं के गठजोड़ का हिस्सा हो सकते हैं। मेरे अनुसंधान क्षेत्रों में, संग्रहालयों, सार्वजनिक शिक्षा संस्थानों (वोल्शोचस्चुलेन), चर्चों, श्रम संघों और कई अन्य लोगों के साथ कई सहयोग हैं। दुनिया भर के आलेखों को एक साथ लाता, वैश्विक संवाद स्थानीय के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं के लिए भी रुचिकर है।

क्लॉस डोरे (केडी): मेरे मामले में, 2012 में जोहान्सबर्ग में SWOP सम्मेलन के दौरान मैं पहली बार माइकल बुरावॉय की सार्वजनिक समाजशास्त्र अवधारणा से परिचित हुआ। तब तक, यह जर्मन भाषी समाजशास्त्र में लगभग अज्ञात था। मैं तुरंत उत्तेजित हो गया क्योंकि, जोहान्सबर्ग में पब्लिक सोशियोलॉजी ग्रुप के साथ बहस के दौरान, मुझे एहसास हुआ कि यह एक ऐसा दृष्टिकोण था जो नवाचारी तरीके से अवधारणात्मक स्तर पर शोध को मजबूत कर सकता है, जैसा कि मेरी टीम पहले से ही कुछ हद तक कर रही थी। मैंने ब्रिगिट औलेनबैकर और अन्य लोगों के साथ सार्वजनिक समाजशास्त्र के बारे में बहस को अभी तक अनभिज्ञ जर्मन भाषी समाजशास्त्र की दुनिया में लाने के लिए कोशिश की। हम सफल रहे, भले ही विषय के क्षेत्रों के अंतर्गत दुराव अभी भी महत्वपूर्ण हैं। जेना में, सार्वजनिक समाजशास्त्र की अवधारणा अब मानकीय बन गई है। यह मेरे अपने अनुसंधान समूह पर भी लागू होता है, जो, उदाहरण के लिए, सावयवी सार्वजनिक समाजशास्त्र के अर्थ में श्रम संबंधों और श्रम संघों का अध्ययन करता है।

सावयवी सार्वजनिक समाजशास्त्र के साथ मेरा सबसे महत्वपूर्ण वर्तमान अनुभव जलवायु आंदोलन के वामपंथी खंड के साथ घनिष्ठ सहयोग पर आधारित है। जर्मन शहर लीपजिग में 1,500 प्रतिभागियों के साथ स्टूडेंट्स फॉर फ्यूचर की स्थापना से प्रेरित होकर, मैंने Die Utopie des Sozialismus: Kompass fur eine Nachhaltigkeitsrevolution (द यूटोपिया ऑफ सोशलिज्मः कम्पास फॉर ए सस्टेनेबिलिटी रेवोल्यूशन) पुस्तक लिखी, जिसकी जलवायु आंदोलनों के भीतर व्यापक रूप से चर्चा हो रही है। उन छात्रों के साथ, मैंने ''रिन्यूईगं सोशियोलिस्ट पॉलिटिक्स फ्रॉम ब्लो'' परियोजना शुरू की। हम उन मामलों का अध्ययन कर रहे हैं जो स्थानीय या क्षेत्रीय रूप से मुक्तिदायक समाजवादी राजनीति को सफलतापूर्वक और कुछ मामलों में प्रचलित प्रवृत्ति के खिलाफ और जहां संभव हो, दुनिया भर में लागू कर रहे हैं। जर्मनी में कार्य समूहों के अलावा, ब्राजील, अर्जेंटीना, चिली, फ्रांस, ग्रीस, इटली, पुर्तगाल और कुछ अन्य देशों में पहले से ही इच्छुक लोग हैं। हम नेटवर्क का विस्तार करना चाहते हैं और यदि संभव हो तो इसे हर महाद्वीप तक विस्तारित करना चाहते हैं। हमारी योजना अनुभवजन्य व्यैक्तिक अध्ययनों को पियरे बॉर्डियू के La misère du monde की तर्ज पर एक अध्ययन में एक साथ लाने की है, हालांकि हम उन दृष्टिकोणों की खोज में रुचि रखते हैं जो दुनिया के दुख को दूर करने में मदद करते हैं। हम संपत्ति के नए सामूहिक रूपों और वर्ग संघर्ष और पारिस्थितिक सामाजिक संघर्ष के मध्य अंतर्क्रिया में विशेष रुचि रखते हैं। हम सभी इच्छुक लोगों को सहयोग करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

जीडीई : *ग्लोबल डायलॉग के संपादक के रूप में जब पत्रिका के एजेंडे को बढ़ावा देने और इसे विश्व स्तर पर प्रसारित करने की बात आई तो आपको कौनसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?*

बीएः यद्यपि हमारी मुख्य संपादकीय टीम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत मजबूती से जुड़ी हुई है, इतने सारे देशों के समाजशास्त्रों को कवर करने के लिए यह अकेले पर्याप्त नहीं होता। इसमें कम से कम तीन चुनौतियाँ हैं। सबसे पहले, प्रसार, मान्यता और प्रभाव के मामले में विषय के भीतर आधिपत्य, पदानुक्रम और शक्ति संबंध वैश्विक उत्तर और पश्चिम के समाजशास्त्रों को विशेषाधिकार देते हैं। यदि क्षेत्रीय संपादकीय टीम या उनके बाहर के युवा विद्वानों ने ग्लोबल डायलाग में कंट्री फोकस या ''समाजशास्त्र पर बातचीत'' जैसे खंड को आयोजित करने के लिए आवेदन किया, तो उन्होंने अक्सर यह तर्क दिया कि उनके संबंधित राष्ट्रीय समाजशास्त्रों में महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय परिणाम हैं जो कभी भी अंतरराष्ट्रीय बहस में नहीं पहुंचे हैं। दूसरा, आईएसए अध्यक्ष के साथ–साथ सलाहकार संपादकों के रूप में कार्यकारी समिति के मजबूत समर्थन ने वैश्विक समाजशास्त्र को प्रस्तुत करना संभव बना दिया है। अपनी यात्राओं के दौरान, साडी हनाफी ने विभिन्न देशों के सहयोगियों को योगदान देने के लिए आमंत्रित किया, या कार्यकारी समिति के सहयोगियों ने अलग–अलग देशों पर ध्यान केंद्रित किया। तीसरा, ज्ञान उत्पादन में एक और अंतर है, और इससे निपटना सबसे कठिन हैः वैश्विक उत्तर और पश्चिम के दृष्टिकोण से वैश्विक दक्षिण और पूर्व में विकास में बहुत सारे शोध हैं, लेकिन इसके विपरीत काफी कम हैं। परवर्ती परिपेक्ष्य से आलेखों को हासिल करना एक चुनौती है।

> >

केडीः मेरे विचार में, एक केंद्रीय समस्या प्रांतीय संकीर्णता है जो अभी भी जर्मन–भाषी और अलग–अलग डिग्री में, (पश्चिमी) यूरोपीय समाजशास्त्र की विशेषता है। हम अपने स्वयं के रस में बहुत अधिक पकाते हैं, और लंबे समय से क्षय हो रहे पश्चिमी यूरोपीय सामाजिक पूंजीवाद की सीमाओं के भीतर शोध करते हैं। मेरे लिए इस संकीर्णता से मुक्त होना आसान नहीं है। ग्लोबल डायलॉग और लैटिन अमेरिकन काउंसिल ऑफ सोशल साइंसेज (CLACSO) नेटवर्क के बीच सहयोग में यह मेरे लिए तेजी से स्पष्ट हो गया है। यूरोकेन्द्रीयता का आरोप बारम्बार सुना गया और अक्सर यह उचित भी था। यह वैश्विक समाजशास्त्रीय आदान–प्रदान में बाधा डालता है। यद्यपि, ऐसे यूरोपीय दृष्टिकोण हैं जो वैश्विक स्तर पर समाजशास्त्रीय रूप से भी पूरी तरह से वैध हैं। उदाहरण के लिए, जब मैंने यूक्रेन में युद्ध के लिए ग्लोबल डायलॉग के एक विशेष अंक को समर्पित करने का सुझाव दिया, तो मुझे संशय और अस्वीकृति का सामना करना पड़ा। इस तरह का संशय गलत हैः यह तर्क कि दुनिया भर में होने वाले बीस से अधिक युद्धों में हताहतों की संख्या अधिक होने के बावजूद समान ध्यान नहीं दिया जाता है समझ में आता है लेकिन विश्लेषणात्मक रूप से गलत है। यूक्रेन पर युद्ध एक नई विश्व व्यवस्था के लिए युद्ध है, जिसमें परमाणु शक्तियों के बीच टकराव का खतरा शामिल है। यह अपने परिणामों में एक वैश्विक युद्ध है, जिससे ईपी थॉम्पसन की ''विनाशवाद'' की अवधारणा को पुनर्जीवित करना और इसे नई सामग्री से भरना आवश्यक हो गया है। अतिवादवाद अर्थव्यवस्थाओं, राजनीतिक व्यवस्थाओं और विचारधाराओं के उस तंत्र को संदर्भित करता है जो एक दिशा में एक जोर के रूप में कार्य करता है जिसका परिणाम अनिवार्य रूप से बड़े पैमाने पर लोगों का विनाश होता है। जॉन बेलामी फोस्टर के शब्दों में, यूक्रेन युद्ध ''दोहरे विनाशवाद'' को उत्प्रेरित करता है। चाहे परमाणु युद्ध से बचा जा सकता है, तो त्वरित आयुध और उत्पादन के निकासीवादी तरीकों को जारी रखने से इकोसाइड के जोखिम में नाटकीय रूप से वृद्धि होती है।

जीडीईः दोनों के लिए एक अंतिम प्रश्नः भविष्य के एजेंडे के बारे में सोचते समय, आपकी राय मके वैश्विक समाजशास्त्र के कौन से दृष्टिकोण संबोधित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं? आइए क्रम को उलटते हैं और क्लॉस, तुमसे प्रारम्भ करते हैं ?

केडी : दोहरे विनाशवाद के खतरे एक विषय के रूप में समाजशास्त्र को भी छूते हैं, जिसमें ग्लोबल डायलॉग भी सम्मिलित है। हमें स्वयं से यह पूछना चाहिए कि दुनिया को जिसकी तत्काल आवश्यकता हैः एक सामाजिक और पारिस्थितिक स्थिरता क्रांति को लाने के लिए हम समाजशास्त्र के साधनों और तरीकों के साथ क्या कर सकते हैं। नवपाषाण क्रांति के बाद से विद्यमान गैर–मानव प्रकृति और अन्य जीवित प्राणियों के साथ यंत्रवत संबंधों को दूर करना चाहिए। यह केवल उन समाजों में ही संभव होगा जो समकालीन पूंजीवाद के तहत आज के समाज की तुलना में कहीं अधिक समतावादी और लोकतांत्रिक हैं। यदि ऐसा रूपांतरण विफल हो जाता है, तो ''स्वयं को बचाओ !'' वाला अधिनायकवाद हावी होता है। इस नए अधिनायकवाद या यहां तक कि फासीवाद के उभरने की संभावना हमारे आर्थिक–पारिस्थितिकीय मेटा–संकट से बाहर निकलने के प्रगतिशील तरीकों से कहीं अधिक है। हमें वैश्विक समाजशास्त्रीय आदान–प्रदान के केंद्र में रूपांतरण की समस्या को और अधिक मजबूती से रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम रोम के क्लब की पहली रिपोर्ट के बाद से जानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग और संसाधनों के दोहन के कारण दुनिया ''रसातल'' की ओर बढ़ रही है। ऐसा क्यों है कि, 50 साल बाद भी और अधिक किए जाने की आवश्यकता है, और केवल गैर–स्थिरता ही टिकाऊ रही है? इसे कैसे बदला जा सकता है? धारणीय क्रांति का समर्थन करने के लिए किस प्रकार के समाज की आवश्यकता है? इस संदर्भ में, हमें स्पष्ट होना चाहिएः अन्यायपूर्ण भूले–बिसरे जर्मन समाजशास्त्री कार्ल हरमन जादेन के अनुसार धारणीयता हिंसा की प्रतिरोधी है। हिंसा युद्धों और लैंगिक संबंधों, जातीय समूहों के बीच संबंधों या वर्ग–आधारित शोषण में अपनी अभिव्यक्ति पाती है।

क्रांतिकारी धारणीयता हम समाजशास्त्रियों से समाज में अपनी भूमिका पर पुनर्विचार करने की मांग भी करती है। हमें न केवल अपने आइवरी टावर से बाहर निकलने की जरूरत है, जैसा कि वर्षों पहले माइकल बुरावॉय ने सुझाया था, हमें यह भी विचार करना चाहिए कि सार्वजनिक समाजशास्त्र को कैसे पुनर्निर्देशित किया जाए। अपनी नई पुस्तक में, कार्ल वॉन होल्ड ने ''विवेचनात्मक संलग्नता'' को सार्वजनिक समाजशास्त्र के एक मुक्तिकारी संस्करण के रूप में प्रस्तावित किया है जो यथास्थिति बनाए रखने वाले विषय की पेशेवर मुख्यधारा को गंभीर रूप से संबोधित करने से नहीं कतराता है। विश्वव्यापी बहस के योग्य यह फलदायी दृष्टिकोण को छात्र उत्साहित हो कर देखते हैं क्योंकि एक सार्वजनिक समाजशास्त्र जो ''दक्षिणपंथी'' भी हो सकता है, उनके लिए बहुत खराब परिभाषित है। यह तथ्य कि प्रतिबद्ध छात्र अपने करियर की सभी बाधाओं के बावजूद इस तरह सोचते हैं, यह मेरे लिए आशा का संकेत है।

बीएः मैं दो पहलुओं का उल्लेख करना चाहूंगी। सबसे पहले, मेरे दृष्टिकोण से, समाजशास्त्र और कला के बीच सहयोग की काफी संभावनाएं हैं। कला अनुसंधान की नई धारा और समाज के समकालीन और भावी विकास के बारे में बहस में कलाकारों का योगदान उल्लेखनीय है। हमारी संपादकीय टीम ने फोटो स्टोरी, फोटो, चित्र और कला अनुसंधान का अनुरोध करके कुछ सहयोग शुरू किया। हालाँकि, बहुत कुछ संभव है और स्थानीय और साथ ही वैश्विक स्तर पर समाजशास्त्र और कलाओं के मिश्रण से अकादमिक और गैर–शैक्षणिक दर्शकों तक पहुँचने के नए रास्ते खुल सकते हैं। दूसरा, ग्लोबल डायलॉग दुनिया भर में अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों से समकालीन सामाजिक विकास के विश्लेषण और निदान को एक साथ लाकर विमर्श को प्रोत्साहित कर सकता है। हालाँकि, जिन कदमों को उठाने या प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, वे अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान नेटवर्क हैं जो विभिन्न समाजशास्त्रों और देशों के दृष्टिकोणों को स्थान देते हैं, और हमारे समय के सबसे अधिक चिंतनीय मुद्दों के सामाजिक विकास और समाधानों में आम अंतर्दृष्टि की खोज करते हैं। मेरे दृष्टिकोण से, सार्वजनिक समाजशास्त्र–प्रसार रणनीतियों के विकास के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग– को इस तरह के एक शोध एजेंडे और अनुसंधान नेटवर्क का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। ■

सभी पत्राचार ब्रिगिट औलेनबैकर को <Brigitte.Aulenbacher@jku.at> पर एवं क्लाउस डोरे को <klaus.doerre@uni-jena.de> पर प्रेषित करें।

> XX आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी, मेलबोर्न में आपका स्वागत है

साड़ी हनाफी, अमेरिकी विश्वविद्यालय बेरूत, लेबनान और आईएसए अध्यक्ष (2018–23) द्वारा

अंततः हम व्यक्तिगत रूप से मिलेंगे। अंततः इस XX आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी के लिए तारीख तय करते समय, कई सवाल बने रहेः क्या इसे ऑनलाइन, हाइब्रिड या इन–पर्सन में होना चाहिए? इसमें कौन भाग नहीं ले पायेगा? कौन अभी भी दूसरों के बहुत करीब आने से डरते हैं ? कोविड–19 महामारी के कारण लगभग तीन वर्षों की ऑनलाइन बैठकों के बाद, यह प्रमुख इन–पर्सन घटना एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में दिखाई देती है।

हमने अलग–अलग परिदृश्यों की कल्पना की थी, लेकिन अभी के लिए परिणाम बहुत उत्साहजनक है, जहाँ 7,126 सार प्रस्तुत किए गए हैं। उनमें से दो–तिहाई की व्यक्तिगत रूप से और अन्य एक–तिहाई की वर्चुअल प्रस्तुत करने की योजना है। कार्यक्रम समन्वयकों ने प्रस्तुतियाँ का आकलन करने और 124 देशों से 6,408 सार को स्वीकार करने का एक अच्छा काम किया है। टोरंटो (2018) में आयोजित पिछली विश्व कांग्रेस की तुलना में स्वीकृत सार की संख्या में 19% की वृद्धि हुई है। हम उन सभी को आमंत्रित करते हैं जिन्हें इस बार 22 मार्च, 2023 से पहले पंजीकरण करने के लिए स्वीकार किया गया है, जो प्रस्तुतकर्ताओं के पंजीकरण की अंतिम समय सीमा है।

कांग्रेस कार्यक्रम कार्यक्रम समिति की कई बैठकों का विषय रहा है, जो हमारे चार उपाध्यक्षों (फिलोमिन गुटिरेज, एलोइसा मार्टिन, जेफ्री प्लीयर्स, और सवको शिराहासे), अध्यक्ष, स्थानीय आयोजन समिति (डैन वुडमैन), अनुसंधान समन्वय समिति के चार सदस्य (हिरोशी इशिदा, एलीसन लोकोंटो, सुसान मैकडैनियल, और नाजनीन शाहरोकनी), राष्ट्रीय संघ संपर्क समिति के अन्य चार (एलीना ओइनास, बंदना पुरकायस्थ, सेली स्कालन, और बोरुत रॉन सेविक), हमारे आमंत्रित अतिथि सदस्य, अरमांडो सल्वाटोर, और मुझसे बनी है। डैन वुडमैन की अध्यक्षता वाली स्थानीय आयोजन समिति ने जबरदस्त कार्य किया है। मैं उन सभी बेहतरीन कार्यों के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूं जो वे कर रहे हैं। हमने एक अद्भुत कार्यक्रम तैयार किया है, जिसमें अधिकांश वक्ता व्यक्तिगत रूप से भाग लेने की योजना बना रहे हैं। मैं कुछ मुख्य बातें यहाँ साझा करता हूँ ।

जब हमने इस आईएसए विश्व कांग्रेस की थीम के लिए विषय चुना, *रिसर्जेंट ऑथरिटेरियनिज्मः सोशियोलॉजी ऑफ न्यू एंटैंगलमेंट्स ऑफ रिलिजंस, पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमीज* को चुना था, तब अधिनायकवाद उतना व्यापक नहीं हुआ था जितना अब है, जिसमें ग्लोबल नॉर्थ भी शामिल है। इसकी वृद्धि चरम राष्ट्रवादी और धार्मिक उत्साह के संयोजन के माध्यम से सार्वजनिक संस्कृति के क्रमिक ''प्रतीकात्मक स्थूलन'' से सुगम हुई है, विशेष रूप से जब एक राष्ट्रीय रूढ़िवादी परियोजना उदार राजनीतिक परियोजना की जगह लेती है, और सार्वजनिक तर्क या न्याय की एकीकृत अवधारणा से निपटने में असमर्थ हो जाता है या समाज में अच्छाई की विभिन्न अवधारणाओं से। समाज में अधिक पदानुक्रमित ध्रुवीकरण के साथ, हम ऐसे समय में रह रहें हैं जब उचित सार्वजनिक बहस अक्सर असंभव होती है। यह प्रजानायक समय है जो लोकलुभावनवाद के तेजी से उदय और धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष के मध्य, हमारी विद्वता और मीडिया में, राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति से उनके संबंधों में गलतफहमी के कई स्तरों से अनुप्राणित है। अधिकांश क्षेत्रों में धार्मिकता बढ़ रही है, और धर्मनिरपेक्षता, कुछ देशों में, अन्य धर्मों के विरुद्ध स्थापित एक नागरिक धर्म बन गया है, विशेष रूप से प्रवासन से उत्पन्न होने वाली आबादी के लिए।

> अध्यक्षीय पैनल और प्लेनरी

इस सैद्धांतिक ढांचे के भीतर, हमने समाजशास्त्र को नैतिक और राजनीतिक दर्शन से जोड़ने में रुचि रखने वाले दो अध्यक्षीय पैनलों के साथ एक कार्यक्रम की कल्पना की।

''उदारवाद, अन्य और धर्म'' शीर्षक वाले पहले में, दो दार्शनिक और दो समाजशास्त्री इस थीम पर बहस करते हैं। फ्रांसीसी दार्शनिक सेसिल लेबोर्डे न्यूनतम धर्मनिरपेक्षता का बचाव करते हैं, जबकि फिलिस्तीनी दार्शनिक आजमी बिशारा का तर्क है कि व्यापक उदारवाद को बढ़ावा दिया जा सकता है यदि उसके बुनियादी मूल्य जैसे नागरिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वायत्तता को प्रचलित संस्कृति के संदर्भ में पुनरुत्पादित किया जा सकता है। ब्राजील–बेल्जियम के समाजशास्त्री फ्रेडरिक वैंडेनबर्ग के लिए, सामाजिक अन्याय और सामाजिक विकृतियों की समाजशास्त्रीय आलोचना ''उदार समुदायवाद'' के प्रदर्शनों का पालन करती हैः कभी–कभी यह पहचान और प्रामाणिकता के साम्यवादी छोर की ओर अधिक झुकती है, और कभी–कभी स्वायत्तता और न्याय के उदारवादी छोर की ओर। अंत में, के लिए आस्ट्रेलियन समाजशास्त्री अन्ना हलाफॉफ के लिए, धर्म की भूमिका धार्मिक राष्ट्रवाद के उदय में प्रकट हुए विश्वव्यापी विरोधी आतंक को सक्षम और प्रतिरोध करना है।

दूसरा पैनल "बिल्डिंग ए जस्ट पोस्ट–कोविड–19 वर्ल्ड" के बारे में है। कोविड–19 महामारी के स्वप्निल माहौल ने मनुष्यों, देशों, नागरिकों और सरकारों के बीच भरोसे की खामियों को उजागर किया है। इसने हमें अपने बारे में, अपने सामाजिक संबंधों और जीवन के बारे में बड़े प्रश्न उठाने के लिए धकेला है। संकट का यह क्षण इस नई वास्तविकता को संबोधित करने का और साथ आई व्यापक अनिश्चितता को सक्रिय रूप से बढ़ाने का एक अवसर हो सकता है। जबकि उनके वैश्विक संकट ने शोषण, बेदखली और नवउदारवादी पूंजीवाद को मजबूत करने के लिए नई रणनीतियों को प्रेरित किया है, और हमारे लालच और स्वार्थ की पहुंच को भी बढ़ाया है, इसने हमें अपनी मानवता और सामाजिक न्याय को समझने और पुनः प्राप्त करने के नए तरीके तलाशने और प्रदान

>>

करने की भी अनुमति दी है। सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक असमानताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए डिडिएर फासिन महामारी के अनछुए पाठों की ओर इशारा करते हैं। उनके लिए, स्वास्थ्य संकट ने अधिकांश देशों में सार्वजनिक स्वास्थ्य की खामियों और देशों के भीतर और उनके मध्य सामाजिक असमानताओं की गहराई को उजागर किया। जैसा कोविड– पश्च का समय खुलासा करता है, इवा इलुज की रूचि भय के लोकतान्त्रिक–विरोधी भावना के रूप में है। इस बीच, एफे एडोगमे, घाना की अपनी संवेदनशीलता के साथ, धर्म, विज्ञान और महामारी के मध्य की सांठगांठ को उजागर करते हैं जो असंख्य तरीकों से दिखाई देता है। जबकि विज्ञान सुरक्षा, उपचार, सुरक्षा और आशा प्रदान करने में धर्म की वैधता और सामर्थ्य को चुनौती देता है, बदले में धर्म एक रामबाण के रूप में विज्ञान की प्रभावकारिता और सत्ता का सामना करता है। अंत में, कोविड –19 के प्रभाव के सामने, ली पैलिन तर्क देते हैं कि आधुनिक विश्व–व्यवस्था सिद्धांत, शीत युद्ध सिद्धांत और सभ्यताओं के टकराव का सिद्धांत क्षेत्रीय संघर्षों और विश्व आर्थिक मंदी के खतरे को समझने में अक्षम हैं। इसलिए वे शांति की विश्व व्यवस्था स्थापित करने में योगदान देने के लिए अधिक समावेशी उत्तर–पश्चिमी समाजशास्त्र का आह्वान करते हैं।

इन पैनलों के अलावा, चार थीम से सम्बंधित आठ अधिवेशन हैं: उत्तर–धर्मनिरपेक्षता या बहु–धर्मनिरपेक्षता के परिप्रेक्ष्य से धर्मनिरपेक्षताय अधिनायकवाद, विशेष रूप से इसके क्रूर संस्करण और ज्ञान और उत्तर–तथ्यात्मकता पर इसके प्रभावों में; लोकलुभावनवाद और एक वैश्विक घटना के इसके विभिन्न स्थानीय रूप, और ''लोगों'' के निर्माण को समझने के लिए एक अंतर–दृष्टिकोण के लिए निमंत्रण; और नवउदारवाद, जो जीवन के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक अधिकारों दोनों को खतरे में डालते हुए इतनी सारी असमानताएँ उत्पन्न करता है।

> स्पॉटलाइट सत्र

जैसा कि इस कांग्रेस का उद्देश्य न केवल अन्य विषयों के साथ बल्कि मीडिया, नागरिक समाज के अभिनेताओं और नीति निर्माताओं के साथ बातचीत करना हैं, हमने तीन ज्वलंत प्रवृत्तियों और संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करते हुए तीन स्पॉटलाइट सत्रों की कल्पना की।

पहला नस्लवाद और इस्लामोफोबिया के बारे में है। नागरिक अधिकारों के युग के बाद, प्रत्यक्ष नस्लवाद की व्यापक रूप से निंदा की गई थी, हम इसकी अधिक सूक्ष्म और व्यापक वर्तमान अभिव्यक्तियों को कैसे अवधारणा के रुप में बनाते है और मापते हैं? यह सत्र विशेष रूप से इस्लामोफोबिया के उदय पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगा। नासिरा गुएनिफ बहस करेंगी कि यह सोचने की बजाय कि एकीकरण नस्लवाद का समाधान हो सकता है और इस्लामॉफोबिआ का एक *फोर्टियरी* हो सकता है, फ्रांस और अन्य जगहों में एकीकरण के शब्दाडम्बर ने नस्लीय व्यवहारों और विमर्शों को भड़काया है, खारिज करने वाली नीतियों को अनुमति दी है और एक स्थायी इस्लामॉफोबिआ का मार्ग खुला छोड़ दिया है। फ्रेंकोइस बर्गट के लिए, यूरोप और मुस्लिम दुनिया के बीच तनाव और दरार, चाहे वह घरेलू हो या क्षेत्रीय, विभिन्न ऐतिहासिक गतिकी के परिणामस्वरूप विश्लेषण किया जा सकता है। उनके लिए, इन दरारों में से सबसे महत्वपूर्ण का वैश्विक धार्मिक मामलों से बहुत कम लेना–देना है, बल्कि वे हैं जो आंतरिक और राजनीतिक हैं। रंडा अब्देल–फतह एक समाजशास्त्री और कार्यकर्ता के रूप में इंगित करेंगे कि कैसे ऑस्ट्रेलिया में हाशिए पर रहने वाले समुदायों को मुस्लिम ''नेतृत्व'' द्वारा धोखा दिया जाता है, जो कि ''उदारवादी/अराजनैतिक/एकीकृत'' मुस्लिमों के बारे में आम समझ के विचारों और स्क्रिप्ट की स्थायी और सम्मोहक शक्ति के आगे झुक जाते हैं। यह विचार दो दशकों के आतंक पर युद्ध और इस्लामॉफोबिआ से लड़ने के समावेशी उदार बहु–सांस्कृतिक ढांचे पर शक्तिशाली रूप से जमे हैं। अंत में, फरीद हाफिज मुसलमानों को विनियमित करने और अनुशासित करने के तरीके के रूप में, मुस्लिम समाजों में इस्लामोफोबिया पर ध्यान केंद्रित करेंगे, इस प्रकार इसे राजनीतिक रूप दिया जाएगा। कई मुस्लिम देशों में (उदाहरण के लिए पश्चिम एशिया में कुछ), राज्य संस्थाएं उन मुसलमानों के खिलाफ भेदभाव करने के लिए कानून बना रही हैं जो राजनीतिक रूप से सत्ता में रहने वालों के विरोध में हैं। हाफिज इस प्रकार बहुसंख्यक–अल्पसंख्यक संबंध गतिकी के आगे बढ़ते हैं।

दूसरा स्पॉटलाइट सत्र यूक्रेन में युद्ध पर समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करेगा। यूक्रेन पर रूसी आक्रमण ने दुनिया को चौंका दिया। यह कोई अकेला युद्ध नहीं है; यह तीसरे विश्व युद्ध, संभवतः एक परमाणु युद्ध में आगे बढ़ने की अपनी क्षमता के कारण असाधारण है। इसके भू–राजनीतिक प्रभाव से परे जाकर, चार पैनलिस्ट, निकोलाई जेनोव, ओल्गा कुत्सेंको, लारिसा टिटारेंको, और तमारा मार्टसेन्युक रूसी और यूक्रेनी समाजों के परिवर्तनों का पता लगाएंगे, जिन्होने युद्ध को विकसित करने के लिए सामाजिक परिस्थितियों को सक्षम बनाया। वे दोनों समाजों के भावी परिवर्तन पर इस युद्ध के संभावित प्रभावों पर भी विचार करेंगे। युद्ध के व्यापक यूरोपीय प्रभाव भी हैं

>>

और यूरोप के विचार के विकास, शरणार्थी संकट के निहितार्थ, भोजन और ऊर्जा की कमी के वैश्विक सामाजिक प्रभावों, गंभीर रूप से युद्ध का आकलन करने के लिए अकादमिक स्वतंत्रता आदि जैसे विविध प्रश्न हैं।

अंतिम स्पॉटलाइट सत्र अरब–इजरायल संघर्ष के बारे में है। कुछ लोग इस संघर्ष को एक बसने वाली–औपनिवेशिक परियोजना के रूप में पढ़ते हैं जो 1948 से जारी है और जिसने फिलीस्तीनियों के खिलाफ एक रंगभेद प्रणाली की स्थापना की है, जबकि अन्य इसे अरब और इजरायली यहूदियों के बीच परस्पर विरोधी राष्ट्रवाद के रूप में पढ़ते हैं। इस संघर्ष को कैसे भी पढ़ा जाये, कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों में एक रेंगने वाली "स्पेसियो–साइड" प्रक्रिया सभी स्तरों पर स्पष्ट है। शांति प्रक्रिया (ओस्लो प्रक्रिया के रूप में जानी जाती है) ने इसे रोका नहीं। कई इजरायली और फिलिस्तीनी विद्वानों का तर्क है कि ओस्लो प्रक्रिया की विफलता के साथ दो–राज्य समाधान ध्वस्त हो गया है और हमें अपने सभी नागरिकों के लिए एक धर्मनिरपेक्ष राज्य का लक्ष्य रखना चाहिए। चार पैनलिस्ट फिलिस्तीनी समाजशास्त्री मोहम्मद बमयेह और अरिज सबबाग–खुरी, और इजराइली समाजषास्त्री इयान लुस्टिक और लेव ग्रिनबर्ग इस विषय पर विचार करेंगें।

> पूर्व अध्यक्षीय पैनल और आईएसए का इतिहास

जून 2023 में, मेलबर्न में, हम आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी के बीसवें संस्करण का जश्न मनाएंगे। इस महत्वपूर्ण वर्षगांठ को उजागर करने के लिए, मैंने अपनी अध्यक्षीय परियोजना के एक हिस्से को पिछली सभी कांग्रेसों के सार को प्रकाशित करने और जेनिफर प्लैट के हिस्ट्री ऑफ आईएसए 1948–1997 के इतिहास के उत्कृष्ट कार्य को अद्यतन करने पर केंद्रित किया है। दो अध्ययन कमीशन किए गए थे। एक गिसेले सपिरो द्वारा आयोजित किया गया था, जिसमें पिछले कांग्रेस में चयनित अनुसंधान समितियों के पूर्ण कार्यक्रमों और कार्यक्रमों को देखा गया था, और विषयों, सिद्धांतों और कार्यप्रणाली के संदर्भ में उनके बदलते रूपों और सामग्रियों का विश्लेषण किया गया था। टॉम ड्वायर ने 1997 से आज तक हिस्ट्री ऑफ आईएसए को अद्यतन करने के लिए अन्य अध्ययन किया । आईएसए के पूर्व अध्यक्ष मार्गरेट आर्चर, टीके ओमन, अल्बर्टो मार्टिनेली, पिओट्र स्जटोम्पका, माइकल बुरावॉय और मार्गरेट अब्राहम भी इन दो अध्ययनों पर टिप्पणी करेंगे।

> लेखक आलोचकों से मिलते हैं

इन सत्रों के लिए, हमने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के समाजशास्त्रियों द्वारा रोमांचक और सामयिक विषयों पर लिखी या संपादित छह उत्कृष्ट पुस्तकों का चयन किया है:

- *Critical Engagement with Public Sociology: A Perspective from the Global South* edited by Andries Bezuidenhout, Sonwabile Mnwana, Karl von Holdt
- *The Gift Paradigm: A Short Introduction to the Anti-Utilitarian Movement in the Social Sciences* by Alain Caillé
- *Aesthetic-Cultural Cosmopolitanism and French Youth: The Taste of the World* by Vincenzo Cicchelli and Sylvie Octobre
- *After the Arab Uprisings: Progress and Stagnation in the Middle East and North Africa* by Shamiran Mako and Valentine M. Moghadam
- *Diaspora as Translation and Decolonisation* by Ipek Demir
- *Refuge beyond Reach: How Rich Democracies Repel Asylum Seekers* by David Scott FitzGerald

> और अधिक

इस सम्मेलन की थीम के बारे में अनुसंधान समितियों की अपनी समझ है और उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ पत्रों का चयन किया है। इसके अतिरिक्त, हमारे पास ऑस्ट्रेलिया में स्थानीय आयोजन समिति द्वारा दमदार विषयों पर आयोजित चार शानदार ऑस्ट्रेलियाई विषयगत सत्र हैं: शरणार्थी, जलवायु परिवर्तन, स्वदेशी विद्वता और ऑस्ट्रेलिया में समकालीन असमानताएँ। कार्यक्रम में बेशक, एकीकृत सत्र, विभिन्न राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, भाषाई और विषयगत संघों के सत्रों के साथ–साथ तदर्थ सत्र और पेशेवर विकास सत्र भी हैं। कांग्रेस से पूर्व, हमने विभिन्न अनुसंधान समितियों और ऑस्ट्रेलियाई समाजशास्त्रीय संघ (हमारे स्थानीय मेजबान) द्वारा कुछ पूर्व–कांग्रेस कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं। मैं विशेष रूप से कनिष्ठ समाजशास्त्रियों के लिए आईएसए वर्ल्डवाइड प्रतियोगिता के विजेताओं और फाइनलिस्ट के लिए संगोष्ठी पर प्रकाश डालना चाहूंगा, जो चौदह देशों के पंद्रह कनिष्ठ समाजशास्त्रियों को एक साथ लाएगा।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मेलबोर्न मिलने के लिए एक बढ़िया शहर है: सार्वजनिक कला, कई पार्क और बढ़िया भोजन, और कुछ किफायती आवास विकल्पों के साथ यह एक जीवंत और मैत्रीपूर्ण शहर है । जून 2023 के अंत में, मैं आप सभी से मिलने की उम्मीद करता हूँ !■

सभी पत्राचार साड़ी हनाफी को <sh41@aub.edu.lb> एवं Twitter: @hana_1962 पर प्रेषित करें।

> महामारी पश्च (लगभग) के बाद की दुनिया में इन–पर्सन कॉन्फ्रेंस को फिर से जगाना

अनाही विलाड्रिच, द सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क (CUNY), यूएसए द्वारा

साभारः अनस्प्लैश।

अगस्त 2022 में मैंने 117वीं अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन की वार्षिक बैठक में शामिल होने के लिए लॉस एंजिल्स के लिए उड़ान भरी। मैंने पहली बार दो साल से अधिक समय में व्यक्तिगत रूप से कार्यक्रम में भाग लिया। यद्यपि मैं अपने सहयोगियों से मिलकर खुश था लेकिन 4,500 से अधिक लोगों की उपस्थिति वाले इस चार दिवसीय आमने–सामने के कार्यक्रम में भाग लेने के बारे में मुझे गंभीर संदेह था। पूरी तरह से टीकाकरण और बूस्टर लगवाने और पहले से ही कोविड–19 से कई बार संक्रमित (मैं दो बार बीमार हो गया था) होने के बावजूद, मुझे हजारों सहयोगियों के साथ बंद जगह में रहने में संकोच महसूस हुआ– भले ही सबने मास्क लगा रखे थे।

अपने विकल्पों को देखते हुए, मैंने आभासी बनाम व्यक्तिगत बैठकों के नफा और नुकसान पर आत्म–चिंतन किया, और वही करने का फैसला किया जो सामाजिक वैज्ञानिकों को सबसे अच्छा लगता हैः प्रत्येक के लाभों पर शोध। इस लेख में, मैंने जो सीखा उसकी समीक्षा की है और महामारी के बाद (लगभग) युग के दौरान इन–पर्सन कॉन्फ्रेंस को बेहतर बनाने के बारे में कुछ अनुभवात्मक सबक साझा किये हैं।

> चक्र पूर्ण होना

कोविड–19 के शुरुआती प्रकोप के तुरंत बाद, जूम सम्मेलनों को ज्ञान और नेटवर्किंग के अवसरों तक हमारी पहुंच का लोकतंत्रीकरण करने के लिए मान्यता दी गई थी। अगले ढाई वर्षों के लिए, ऑनलाइन बैठकें अकादमिक और पेशेवर समुदायों को एक साथ लाने का सबसे सस्ता और आसान तरीका साबित हुई। हमारे अपने होम ऑफिस– यहां तक कि हमारे बेडरूम भी। स्ट्रीमिंग का मतलब न केवल यह है कि हम दुनिया में कहीं से भी कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं, बल्कि ये छोटे कार्बन फुटप्रिंट छोड़ते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है। कोविड–19 से पहले , हम सभी को सम्मेलनों, जो अक्सर दूर–दूर के स्थानों पर आयोजित किए जाते थे, में भाग लेने के लिए यात्रा के लिए समय निकालना पड़ता था जिसमें पंजीकरण, हवाई किराए और रहने और खाने के लिए फंडिंग पाने के लिए आमतौर पर कॉलेज प्रशासन के साथ हमारी लंबी बातचीत होती थी।

मार्च 2020 में हमारे ऑनलाइन होते ही इनमें से अधिकांश चुनौतियाँ गायब हो गईं। यद्यपि जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे, हम स्क्रीन थकावट के परिणामस्वरूप तेजी से थकने लगे

>>

(और ज़ूम आउट हो गए)। इसके साथ कभी न खत्म होने वाली तकनीकी गड़बड़ियां थीं और माइक के अजीब मुद्दे थे जो समय समय पर हम सबने अनुभव किये हैं। इनमें से शौचालयों के फ्लश होने की या किसी की ऑनलाइन प्रस्तुति के दौरान बच्चों के रोने की कहानियां बहुत आम और सर्वव्यापी हैं। आभासी सम्मेलनों का अधिकतम लाभ उठाने का अर्थ अक्सर अपने सहयोगियों की प्रस्तुतियों और ब्रेकआउट सत्रों में भाग लेने के लिए कम समय व्यतीत करना भी होता है। वास्तव में, कई संस्थान उम्मीद करते हैं कि उनके संकाय सदस्य आभासी सम्मेलनों में भाग लेने के दौरान अपने दैनिक कार्यों को जारी रखेंगे।

एक संभावित सुपर–स्प्रेडर कार्यक्रम में होने के मेरे भय के साथ मिलकर इस वर्ष एएसए की बैठक में भाग लेने में मेरी प्रारंभिक हिचक आमने–सामने की अंतर्क्रिया के प्रति मेरी तीव्र इच्छा से प्रति–संतुलित हो गई। व्यापक सलाह और सुझाव साहित्य ने मेरी चिंताओं को कम करने में मदद की। मैंने क्या सीखा और अंत में क्या हुआ के बारे में सारांश नीचे दिया गया है।

1. **सुरक्षा मार्गदर्शिका –** यह जानना कि क्या हो सकता है: अधिकांश पेशेवर संगठनों, जो वर्तमान में इन–पर्सन इवेंट आयोजित कर रहे हैं, की तरह एएसए ने सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और पूरे समय कोविड–19 प्रोटोकॉल लागू रहे। सम्मेलन के आयोजकों और उपस्थित होने वाले लोगों के मध्य कार्यक्रम–पूर्व संचार न केवल एक सुरक्षा रणनीति की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण था, बल्कि इसने प्रस्तुतकर्ताओं को उनकी अपेक्षाओं को प्रबंधित करने में भी मदद की। पहुंचने से पहले, हमें अपने टीकाकरण कार्ड को इलेक्ट्रॉनिक रूप से अपलोड करने की आवश्यकता थी, जिसे आगमन पर सम्मेलन स्थल पर भी चेक किया गया था। परिणामस्वरूप हम सभी जानते थे कि क्या उम्मीद करनी चाहिए: टीकाकरण या मास्क नहीं होने का मतलब नो एंट्री है।

2. **जवाबदेही और सम्मान संहिता –** हालांकि खतरनाक वायरस से संक्रमित होने और प्रसारित करने के जोखिम को निश्चित रूप से समाप्त नहीं किया जा सकता था, हमने एक दूसरे के प्रति जवाबदेह बनकर अपने जोखिम को कम करने की कोशिश की। परिणामस्वरूप, हमने शारीरिक दूरी बनाए रखी और खाने या पीने के अलावा अंदर भी मास्क पहनना जारी रखा – यहां तक कि प्रस्तुति करते समय भी। एलए में गर्मियों के खूबसूरत मौसम के कारण, कई कार्यक्रम बाहर आयोजित किए गए थे, इसलिए हमारे पास बातचीत करने के लिए पर्याप्त जगह थी।

3. **क्षेत्र को समतल करना –** हम में से कई सामूहिक ''विचित्रता'' की साझा भावना से प्रतिरक्षित नहीं थे : जहाँ हम दूसरों के साथ बात करने के अवसर के लिए आभारी थे, शारीरिक दूरी बनाये रखने के सन्दर्भ में असमान सुविधा के साथ निपटते हुए अपने सहयोगियों से कैसे संपर्क किया जाये और हमसे कोई कैसे संपर्क करे, के बारे में हमने कुछ अनिश्चितता को महसूस किया। इसके आलावा, सामान्य बातचीत के मामले में हम में से कई के थोड़ा जंग लग गया था। एएसए में, मेरे कुछ छोटे और कम अनुभवी सहयोगियों ने मुझे बताया कि वे ''चुप्पी तोड़ने'' में सहज महसूस नहीं करते थे। अन्य कौशल की तरह, सामाजिक रूप से समझदार होने के लिए भी अभ्यास की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से यह उन लोगों के लिए सही है जो गम से पीड़ित थे या चल रही रुग्णता से परेशान थे, जिनके लिए अंदर की जगह कीटाणु–पूर्ण खेल के मैदान से कुछ अधिक बन गए हों। सौभाग्य से, सम्मेलन बैज में केवल उपस्थित लोगों के पहले और अंतिम नाम शामिल थे – उनके संस्थागत या पेशेवर संबद्धता के बारे में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं थी। इस उपाय ने प्रस्थिति, रैंक और विश्वविद्यालय संबद्धता के बारे में पूर्व धारणाओं से बचने में मदद की, इस प्रकार उपस्थित लोगों के बीच सहज संचार सुगम हुआ। इसके अलावा, हम में से अधिकांश ने अपने साथियों के साथ बातचीत करने और इस बात का किस्सा साझा करने के लिए कि हम कैसे शारीरिक और भावनात्मक रूप से महामारी से बचे रहे, अंदर से तीव्र इच्छा को महसूस किया। वास्तविक जीवन के मनुष्यों से बात करना और एक–दूसरे से हाथ मिलाना कुछ ऐसा है जिसे हम अब सामान्य नहीं समझते थे। अंत में, हमारी कोविड–19 कहानियों, छोटी और बड़ी, ने हमें अनोखे तरीकों से एक–दूसरे से जुड़ने के लिए सामान्य आधार प्रदान किया।

4. **पूरी तरह से उपस्थित होने के लिए वापस –** कोई भी आभासी मंच वास्तविक जीवन के रिश्तों के जादू को पूर्ण रूप से प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है: समाजशास्त्रीय शब्दजाल में जिसे बुनियादी रूप से ''सामाजिक पूंजी'' *in situ* कहा जाता है। सादी अंग्रेजी में, वास्तविक सम्मेलन स्थलों का ''चिट चैट'' प्रकार्य लगभग गति डेटिंग की तरह है: आप कॉफी की लाइन में खड़े विभागाध्यक्ष, संपादक या एक कनिष्ठ सहकर्मी से टकराते हैं, और थोड़ी देर बाद देखते हैं कि एक आकस्मिक बातचीत एक नई नौकरी या एक पुस्तक अनुबंध के लिए आपका जरिया बन जाती है या फिर कुछ चिंगारी भड़केंगी और आपको अपने जीवन का प्यार मिल जाएगा। सहकर्मियों की प्रस्तुतियों के दौरान संबंधित परियोजनाओं के बारे में सीखने से नए विचार प्राप्त हो सकते हैं, किसी की विद्वता में वृद्धि हो सकती है, और कॉफी ब्रेक या सम्मेलन रिसेप्शन के दौरान उत्पादक बात चीत में परिवर्तित हो सकती है।

> आगे का मार्ग

मैं इस वर्ष व्यक्तिगत रूप से एएसए की बैठक में लगभग चूक गया था। पीछे मुड़कर देखें, तो मुझे खुशी है कि मैंने ऐसा नहीं किया। पुरानी कहावत कि सम्मेलनों में भाग लेना केवल अपने काम को प्रस्तुत करने से कहीं अधिक है, मेरे लिए पहले से कहीं अधिक स्पष्ट हो। हालांकि, आमने–सामने की घटनाएँ पेशेवर संगठनों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं, फिर भी वे प्रमुख संरचनात्मक असमानताओं को दर्शाती हैं जो कोविड–19 से पहले स्थानिक थीं । इनमें वह शामिल है जिसे मैं ''फाइव–स्टार–होटल कॉन्फ्रेंस मोड'' कहता हूं, जो कम संपन्न विश्वविद्यालयों, अल्पसंख्यकों और स्नातक छात्रों की हानि के लिए संस्थागत संसाधनों (पढ़ें: पैसा) के पक्ष में है। सौभाग्य से, विकासशील देशों के प्रतिभागियों का स्वागत करने सहित सभी के लिए आमने–सामने कार्यक्रमों को सुलभ बनाने का आह्वान एएसए सहित कई पेशेवर संगठनों के लिए प्राथमिकता बन गया है।

भविष्य क्या है यह अभी भी स्पष्ट नहीं है, और संभावित महामारी परिदृश्यों के बावजूद, स्ट्रीमिंग और ऑनलाइन इवेंट्स (समकालिक और अतुल्यकालिक दोनों) निश्चित रूप से रहने वाले हैं– भले ही हाइब्रिड रूप में। इस मध्य, मैं अगले इन–पर्सन इवेंट के लिए इंतजार नहीं कर सकता हूँ, जहाँ ''यहाँ और अभी'' में होना शायद हमे एक प्रतिबद्ध शिक्षाविद और दयालु इंसान दोनों के रूप में अपना बेहतर संस्करण साझा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। ■

सभी पत्राचार अनाही विलाड्रिच को <Anahi.Viladrich@qc.cuny.edu> पर एवं Twitter: @prof_anahi पर प्रेषित करें।

> एक नवीनीकृत वैश्विक संवाद के रूप में वैश्विक समाजशास्त्र

जेफ्री प्लीर्स, यूनिवर्सिटी कैथोलिक डी लोवेन, बेल्जियम और आईएसए उपाध्यक्ष अनुसंधान (2018–23) द्वारा

फोटो असेंबलः अर्बू, 2023

लगभग 1990 के दशक में अपने उत्कर्ष के बाद, वैश्विक समाजशास्त्र उन दृष्टिकोणों से कठोर आलोचना के दायरे में आ गया है, जिसमें उपाश्रित, उत्तर औपनिवेशिक, वि–उपनिवेशी, नारीवादी और लिंग अध्ययन, और दक्षिणी सिद्धांतों के साथ ''दक्षिण की अन्य ज्ञान मीमांसा'' सम्मिलित हैं। उनकी विविधता और विस्तार से परे, ये दृष्टिकोण वैश्विक समाजशास्त्र की वैधता को चुनौती देने में एक साथ आते हैं, जिसे यूरोकेन्द्रीयता और उत्तरी/पश्चिमी समाजशास्त्रियों के प्रभुत्व के साथ पहचाना गया है।

इन महत्वपूर्ण सिद्धांतों द्वारा प्रतिपादित ज्ञानात्मक एजेंडा दो चरणों को जोड़ता है। पहला अंतर्निहित यूरोकेंद्रवाद का विखंडन है, जिस पर वैश्विक समाजशास्त्र और हमारे विषय के अधिकांश संज्ञानात्मक ढांचे निहित हैं, जैसा कि सुजाता पटेल ने तर्क दिया है। यह ज्ञान के उत्पादन और प्रसार के पश्चिमी–वर्चस्व वाले रूपों को उतना ही चुनौती देता है जितना कि यूरोकेन्द्रिक विश्वदृष्टि को। एनरिक डसेल ने दिखाया है कि उपनिवेशवाद और अमेरिका की विजय आधुनिकता का एक गौण मुद्दा नहीं है, बल्कि एक बुनियादी प्रघटना है जिस पर आधुनिकता का निर्माण किया गया है और जिसके माध्यम से यह खुद को पुनः उत्पन्न करती रहती है। पश्चिमी विषयों ने खुद को ''दूसरों'' पर प्रभुत्व के संबंध में निर्मित किया है। सामाजिक और ज्ञानशास्त्रीय प्रभुत्व के इन रूपों का निर्माण, रखरखाव, पुनरुत्पादन और अद्यतन करने वाले सामाजिक कर्त्ताओं, तंत्रों और संस्थानों का विश्लेषण करना आज के सामाजिक विज्ञानों के लिए एक आवश्यक कार्य है। इसमें इस सामाजिक और ज्ञानात्मक प्रणाली को पुनः उत्पन्न करने में अपने स्वयं के अतीत और वर्तमान भूमिका का चिंतनशील विश्लेषण शामिल है।

दूसरा कदम विश्वदृष्टि, अनुभवों और ज्ञान पर ध्यान देना और उन्हें दृश्यता प्रदान करना है जिन्हे आधुनिकीकरण प्रक्रिया द्वारा ''अदृश्य'' कर दिया गया है और अस्वीकार कर दिया गया है। स्वदेशी, पारिस्थितिक, नारीवादी, किसान और अल्पसंख्यक आंदोलनों ने इसे अपने मुक्ति संघर्षों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है। यह ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ के समाजशास्त्रियों के लिए भी एक जरूरी काम है। पेशेवर समाजशास्त्रियों के लिए, इस कदम में विशेष रूप से हमारे विषय के शोधकर्ताओं, कर्त्ताओं, लेखकों और विद्वानों के योगदानों का खुलासा करना शामिल है, जिन्हें बहुत लंबे समय से अनदेखा किया गया है।

> सामाजिक और महामारी संघर्ष

वे मुख्य विचार जिन पर इस तरह के महत्वपूर्ण दृष्टिकोण निर्मित हुए अकादमिक समाजशास्त्र के साथ साथ या उसकी परिधि पर उभरे। लैटिन अमेरिका में, ''डिकोलोनिअल दृष्टिकोण'' का उभार स्वयं इस तथ्य का आश्चर्यजनक उदहारण है कि समाज विज्ञानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बहस अकादमिक जगत में उत्तरोत्तर प्रवेश करने से पूर्व सामाजिक आंदोलनों के मध्य प्रारम्भ हुई, विशेषकर स्वदेशी आंदोलनों में। गत तीन दशकों में, वैश्विक दक्षिण और ''उत्पीड़ित पृष्ठभूमि'' (विशेष रूप से नारीवादी और अल्पसंख्यक) से

> >

महत्वपूर्ण कर्त्ताओं, सामाजिक आंदोलनों और विद्वानों ने दुनिया, आधुनिकता, इक्विटी और ''प्रगति'' को देखने के हमारे तरीकों को गहराई से बदल दिया है। वैश्विक दक्षिण से लघु स्तरीय किसानों, स्वदेशी लोगों, कार्यकर्ताओं और आंदोलनों ने पारिस्थितिक नारीवाद और ''अच्छे जीवन'' (जैसे इक्वाडोर का सुमक कवासे दृष्टिकोण) जिन्होंने पारिस्थितिकी, प्रकृति (जिससे हम सम्बंधित हैं) और स्वयं को हम कैसे देखते हैं को गहराई से प्रभावित किया है। इसी तरह की प्रक्रियाएं ग्लोबल नॉर्थ में हुई हैं। ''परस्परछेदन'' की अवधारणा नारीवादी और अश्वेत आंदोलनों से निकली। ये अवधारणा क्रेनशॉ की कलम से निकली जो न तो समाजशास्त्री थीं और न ही कार्यकर्त्ता और अधिवक्ता। इस प्रकार हमारी कई प्रमुख अवधारणाएँ ''नीचे से'' सामाजिक आंदोलनों से उत्पन्न हुई हैं।

ग्लोबल साउथ से सीखने, रुख और सबक के लिए उत्तरी ज्ञानशास्त्र को खोलने से सामाजिक कर्त्ताओं को ज्ञान के निर्माता के रूप में मान्यता मिलती है, जिसमें व्यावहारिक ज्ञान के साथ–साथ सैद्धांतिक दृष्टिकोण, ज्ञानमीमांसा और विश्वदृष्टि (''कॉस्मोविजन'') शामिल हैं । दरअसल, स्वदेशी, किसान, या नारीवादी आंदोलन स्पष्ट रूप से वैकल्पिक विश्व दृष्टियों की रक्षा को सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं। ''हमारा संघर्ष राजनीतिक और ज्ञान सम्बन्धी है,'' यह लुइस मैकास ने उस समय कहा जब वे कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिजेनस नेशनलिटिज ऑफ इक्वेडोर (CONAIE) के नेता थे। इन संघर्षों को अकादमिक क्षेत्र में अनुवादित करते हुए, बोआवेंचुरा डी सूसा सैंटोस का दावा है कि ''ज्ञानशास्त्रीय न्याय के के बिना कोई सामाजिक न्याय नहीं है'' और ''संज्ञानात्मक साम्राज्य के अंत'' के लिए संघर्ष ।

विद्वानों के मध्य अकादमिक ज्ञानमीमांसा संबंधी वाद–विवाद के घेरे टूट गए हैं। ये ''सामाजिक और ज्ञानमीमांसा संबंधी संघर्ष'' न केवल हमारे शोध की वस्तु हैं, वे हमारे संपूर्ण विषय को पार करते हैं। ज्ञानमीमांसा और समाजशास्त्र इन मुक्ति परियोजनाओं के युद्ध–क्षेत्र का हिस्सा हैं और इसलिए आंशिक रूप से उनके द्वारा परिवर्तित हो गए हैं।

> क्या वैश्विक समाजशास्त्र अभी भी प्रासंगिक है?

आलोचना की इस तीव्र लहर के बाद भी क्या वैश्विक समाजशास्त्र की परियोजना वैध है? या ''वैश्विक समाजशास्त्र'' आंतरिक रूप से यूरोकेंद्रित (औपनिवेशिक, पितृसत्तात्मक और पूंजीवादी) आधुनिक परियोजना और विश्वदृष्टि से जुड़ा हुआ है? क्या समाजशास्त्र को स्थानीय अनुभवों, संघर्षों और विशिष्ट संस्कृतियों में निहित ज्ञान के साथ न्याय करने के लिए इस परियोजना को छोड़ देना चाहिए? क्या हमें अदृश्य कर दिए गए राष्ट्रीय और क्षेत्रीय लेखकों और विद्वानों के योगदानों को बढ़ावा देने के लिए समाजशास्त्र के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय इतिहास के पुनर्निर्माण पर ध्यान देना चाहिए?

''डिकोलोनियल टर्न'' पश्चिमी समाजशास्त्रियों को अपने शोध परिणामों, अवधारणाओं और मुक्ति की दृष्टि को तेजी से सार्वभौमिक बनाने की अपनी आदत को त्यागने के लिए निमंत्रण देता है। यह मांग करता है कि हम यूरोकेंद्रित समाजशास्त्र में निहित ज्ञानमीमांसीय प्रभुत्व को स्वीकार करें और अपने विषय की प्रासंगिकता एवं इतिहास में दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से और उत्पीड़ित पृष्ठभूमि वाले विद्वानों और कर्त्ताओं के महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदानों को पहचानें। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने विषय के सिद्धांतों को संशोधित करें और एक ''वैश्विक समाजशास्त्र'' को नवीनीकृत करें जो बहुत लंबे समय तक पश्चिमी समाजशास्त्र (और वास्तव में केवल पश्चिमी समाजशास्त्र का एक हिस्सा) था। हालांकि, डिकोलोनिअल मोड़ वैश्विक समाजशास्त्र की परियोजना को अमान्य नहीं करता है। मैक्सिकन स्वदेशी जापतिस्ता आंदोलन ने दिखाया है कि ''ऐसी दुनिया जहां कई दुनियाओं के लिए जगह है'' को बढ़ावा देने का मतलब किसी भी वैश्विक परिप्रेक्ष्य को छोड़ना नहीं है; बल्कि इसके बिल्कुल विपरीत है।

डिकोलोनियल टर्न के बाद (और उसके माध्यम से) वैश्विक समाजशास्त्र के पुनर्निर्माण के लिए, यूरोकेंद्रित की आलोचना और वैकल्पिक ज्ञान की दृश्यता को एक तीसरे और अपरिहार्य कदम से पूरक होना चाहिएः अंतरसांस्कृतिक संवाद (इंटरकल्चरल डायलॉग)। इसके लिए शोधकर्ताओं को अपनी स्थिति को स्वीकार करने और दूसरों से सीखने के लिए खुले रहने की आवश्यकता है। यह स्थिति एक ही समय में समाजशास्त्रीय, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत है। इसे स्वयं को अपने यकीन को खोने के जोखिम में डालने (और आशा) और अन्य के साथ सामना करने से सीखने की इच्छा में जमा होना चाहिए। इन धारणाओं के तहत, समाजशास्त्र एक सामूहिक परियोजना बन जाता है जो हमारी दुनिया की और इसको परिवर्तित करने वाले कर्त्ताओं की बेहतर समझ के लिए शोधकर्त्ताओं की चिंतनशीलता को एक साँझा खोज में जोड़ता है।

एक खुले और अंतर–सांस्कृतिक वैश्विक संवाद के इस आह्वान के बिना, महत्वपूर्ण रुख और सिद्धांतों का नवीनीकरण तीन जोखिमों के तहत रहता हैः विखंडन, अलगाव (आंदोलनों और महत्वपूर्ण विद्वानों के सबसे सक्रिय हाशिये से परे पहुंचने में कठिनाइयों के माध्यम से), और पश्चिमी सामाजिक विज्ञानों का समरूपीकरण और ज्ञान को प्रमुख और दक्षिणी सामाजिक विज्ञान और ज्ञान को मुक्तिदायी के रूप में देखना। वैश्विक समाजशास्त्र को नवीनीकृत करने और इसकी प्रासंगिकता को बहाल करने के लिए हमें इसकी यूरोपीय जड़ों और योगदानों को ''प्रांतीय'' करने की आवश्यकता है। जैसा कि चक्रवर्ती सही रूप से बताते हैं, इसका मतलब समाजशास्त्र और महत्वपूर्ण सिद्धांत में सभी पश्चिमी योगदानों से छुटकारा पाना नहीं है, बल्कि उन्हें एक अधिक व्यापक वैश्विक समाजशास्त्र का एक प्रासंगिक हिस्सा मानना है जो दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से जड़ों और प्रस्तावों पर निर्मित होता है।

अपनी उत्कृष्ट कृति क्रिटिक ऑफ ब्लैक रीजन में अपने युग और आधुनिकता के उपनिवेशी आयाम की अतिवादी और सम्मोहक आलोचना विकसित करने के बाद, अचिल्ले मबम्बे ने अपनी पुस्तक के उपसंहार का शीर्षक रखा ''केवल एक दुनिया है।'' वे मानवता की संबद्धता और एक नए महानगरीय दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देते हैंः "चाहे हम चाहें या न चाहें, तथ्य यह है कि हम सभी इस दुनिया को साझा करते हैं [...] अंतर की उद्घोषणा वृहद परियोजना का केवल एक पहलू है – एक ऐसी दुनिया की परियोजना जो आ रही है, जिसकी मंजिल सार्वभौमिक है, एक ऐसी दुनिया जो नस्ल के बोझ से, आक्रोश से, और उस प्रतिशोध की इच्छा से जिसे सभी नस्लवाद अस्तित्व में कहते हैं, से मुक्त है। इतिहास के विऔपनिवेशीकरण का उद्देश्य एक साझा इतिहास का पुनर्निर्माण करना है, न कि केवल उपनिवेशित लोगों के इतिहास का । इसी तरह, हमारा लक्ष्य वैश्विक दक्षिण और हाशिये के दृष्टिकोण से समाजशास्त्रियों और कर्त्ताओं के साथ न केवल उनके लिए बल्कि हम सभी के लिए एक साझा समाजशास्त्र का पुनर्निर्माण करना है।

इस प्रकार हमारे समय की बड़ी चुनौती ग्रहीय चेतना का प्रगतिशील उदय है। यदि समाजशास्त्र अपने कार्य सही प्रकार से करता है, तो वह इस ग्रहीय चेतना में योगदान देगा। ऐसा करने के लिए, वैश्विक समाजशास्त्र न तो पश्चिमी विश्वविद्यालयों और सिद्धांतों में जड़ा रह सकता है, जो खुद को सार्वभौमिक के रूप में प्रस्तुत करते हैं, और न ही इस पश्चिमी समाजशास्त्र की आलोचनाओं तक

>>

ही सीमित रह सकता है हैं। जैसा कि गुरमिंदर भांबरा प्रस्तावित करते हैं, इसे समाजशास्त्रों को जोड़ने की जरूरत है, और वहां से एक साझा समाजशास्त्र का पुनर्निर्माण करने की, जो कि विविध है लेकिन उस सामान्य आधार पर बनता है जो वैश्विक संवादों से उभरते हैं।

> वैश्विक समाजशास्त्र को नवीनीकृत करने के लिए एक उपकरण के रूप में आईएसए

हाल के दशकों में आईएसए का एक प्राथमिक मिशन वैश्विक दक्षिण और उत्पीड़ित पृष्ठभूमि से शोध, ज्ञानमीमांसा और विद्वानों को सामान्य समाजशास्त्र में बेहतर ढंग से पूरी तरह सम्मिलित करके इस नवीन वैश्विक समाजशास्त्र का निर्माण करना रहा है।

आईएसए इस दृढ़ विश्वास पर बनाया गया है कि विभिन्न महाद्वीपों के समाजशास्त्रियों के बीच एक खुला संवाद ''दुनिया भर में प्रमुख समाजशास्त्रीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए महत्वपूर्ण है,'' साडी हनफी और चिन–चुन यी के शब्दों में, जिन्होंने आईएसए की राष्ट्रीय संघों की चौथी संगोष्ठी में प्राप्त आलेखों को *सोशिऑलोजिज इन डायलाग* पुस्तक में एकत्रित किया। आईएसए रिसर्च काउंसिल ने आईएसए और इसकी शोध समितियों के भीतर समता, विविधता और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए अच्छी प्रथाओं को साझा करने और ठोस प्रस्ताव बनाने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया है। ग्लोबल साउथ के लेखकों के लिए जगह खोलना आईएसए पत्रिकाओं और पुस्तक श्रृंखला का साझा मिशन रहा है। विभिन्न महाद्वीपों से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों को फैलाना और उनके बीच क्रॉस–फर्टिलाइजेशन को बढ़ावा देना आईएसए पत्रिका ग्लोबल डायलॉग का उद्देश्य है। आईएसए सोशल मीडिया विभिन्न महाद्वीपों से सूचना, विश्लेषण और दृष्टिकोण साझा करने में योगदान देता है। हालाँकि, जूम के युग में भी, व्यक्तिगत भेंट अक्सर व्यक्तिगत संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सबसे अच्छी सेटिंग होती है जो रुख, तर्क और संस्कृतियों में अंतर से परे आपसी समझ का आधार निर्धारित करती है। यही कारण है कि विश्व कांग्रेस और समाजशास्त्र के फोरम महत्वपूर्ण घटनाएँ बनी हुई हैं और अनुसंधान समितियाँ आभासी सम्मेलनों को आमने–सामने की बैठकों के साथ जोड़ती हैं। वैश्विक समाजशास्त्र को नवीनीकृत करने में सक्षम विद्वानों के एक समावेशी और विविध अंतरराष्ट्रीय समुदाय का निर्माण करना हमारी चुनौती बनी हुई है। उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, हमें व्यक्तिगत भेंट में निहित सामाजिक बंधनों के निर्माण के महत्व को बनाए रखते हुए वैश्विक समाजशास्त्र और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण करने की आवश्यकता है।

वैश्विक दक्षिण और परिधीय पृष्ठभूमि के शोधकर्त्ताओं और कर्त्ताओं से समाजशास्त्र को ''स्वीकारना'', ''दृश्यमान बनाना'', और ''सीखना'' न केवल कुछ विविधता मानदंडों को पूरा करके और ज्ञान के प्रसार के लिए उचित पहुंच सुनिश्चित करके समाजशास्त्र को अधिक लोकतांत्रिक बनाने का मामला है। यह बेहतर सूचित और अधिक प्रासंगिक समाजशास्त्र की खोज भी है, जो हमारे समाजों के सामने आने वाली चुनौतियों का अधिक जटिल और बहु–स्थित विश्लेषण प्रदान करने में सक्षम है। ब्राजील के शिक्षाशास्त्री पाओलो फ्रायर ने हमें सिखाया कि उत्पीड़ित लोगों के दृष्टिकोण और उनके विश्लेषण उनकी वास्तविकता और समाज की बेहतर समझ प्रदान करते हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान नारीवादी विद्वानों और कार्यकर्ताओं के लेखों ने नारीवादी कारणों और लैंगिक समानता से परे हमारी दुनिया और इसकी चुनौतियों के बारे में ज्ञान में सुधार करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। इसी तरह, ग्लोबल साउथ के समाजशास्त्रियों द्वारा विश्लेषणात्मक और सैद्धांतिक आलेखों से हमें उस क्षेत्र की वास्तविकता और चुनौतियों को समझने में मदद मिलती है, साथ ही ग्लोबल नॉर्थ में जीवन और समाज की बेहतर और ''अधिक वैश्विक'' समझ तक पहुंचने में मदद मिलती है। इक्कीसवीं सदी में समाजशास्त्र के लिए नारीवादी, पारिस्थितिक, स्वदेशी और अंतःविषय दृष्टिकोण के साथ–साथ दक्षिण की ज्ञान मीमांसा वैकल्पिक विकल्पों से कहीं अधिक है। वे वैश्विक समाजशास्त्र के केंद्र में हैं और उन्होंने हमारे विषय को गहराई से संशोधित किया है। ■

सभी पत्राचार जेफ्री प्लेयर्स को <Geoffrey.Pleyers@uclouvain.be> पर एवं Twitter: @GeoffreyPleyers प्रेषित करें ।

> वैश्विक दक्षिण में चरम दक्षिणपंथ का अध्ययन करने के लिए हमें एक नए ढाँचे की आवश्यकता क्यों है

रोसाना पिनहेरो–मचाडो, यूनिवर्सिटी कॉलेज डबलिन, आयरलैंड और **तातियाना वर्गास–मैया**, फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ रियो ग्रांड डो सुल, ब्राजील द्वारा

सोशल थ्योरी और लैटिन अमेरिका में अध्ययन के न्यूक्लियस के सामाजिक आंदोलनों वेधशाला के लिए (NETSAL-IESP/UERJ) ब्राजील के कलाकार और राजनीतिक वैज्ञानिक रिब्स द्वारा चित्रण (https://twitter.com/o_ribs *और* https://www.instagram.com/o.ribs/) | *साभारः रिब्स, 2021*

विशाल विद्वता ने 2010 के बाद की दुनिया में कई विद्वानों ने चरम दक्षिणपंथ के उदय– या पुनरुत्थान– के कारण बताने का प्रयास किया है। इस छोटे से लेख में, हम तर्क देते हैं कि एक वैश्विक दक्षिण परिप्रेक्ष्य[1], जिसमें उपनिवेशवाद और उपनिवेशवाद एक केंद्रीय विश्लेषणात्मक भूमिका निभाते हैं (मसूद और निसार, 2020; तवारेस फर्टाडो और एकलुंध, 2022) पर भरोसा करते हुए ऐसी घटना को समझने के लिए हमें एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य में, वैश्विक दक्षिण के देशों को अक्सर उदाहरण, वैयक्तिक अध्ययनों या ऐसे व्यापक राजनीतिक घटनाओं के प्रकारों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप को अपने विश्लेषण के केंद्र में रखते हैं। इस उपनिवेशित शैक्षणिक मानसिकता की समस्या यह है कि ब्राजील और फिलीपींस जैसे देशों ने दुनिया में सत्तावाद के सबसे कट्टरपंथी और हिंसक अभिव्यक्तियों में से एक का अनुभव किया है– और इसका पुनः आविष्कार किया है। जायर बोल्सोनारो प्रशासन द्वारा पर्यावरण को हुई गंभीर क्षति अथाह है, लेकिन यह अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक और पत्रकारिता का केवल बचा हुआ ध्यान अवशिष्ट आकर्षित करता है, जो दुनिया पर चरमपंथियों के सबसे क्रूर प्रभावों की बेहतर समझ में बाधा डालता है।

हाल की लोकलुभावन और अधिनायकवादी लहर का जवाब देने वाले कृत्य वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण विशिष्टताओं के बीच कम अंतर करते हैं, मुख्य रूप से यूरोपीय और अमेरिकी दलों और आंदोलनों के विश्लेषण पर निर्भर करते हैं (यानि, ब्राउन, गॉर्डन, और पेन्स्की, 2018, ईटवेल और गुडविन, 2018, हॉली, 2017, हरमनसन, लॉरेंस, मुल्हल, और मर्डोक 2020, इंगलेहार्ट और नॉरिस, 2016, मोंडॉन और विंटर, 2020, मुड्डे, 2017, मुड्डे 2019, मुड्डे और कल्टवासेर, 2018)। इसका परिणाम एक सीमित– फिर भी सार्वभौमिक– प्रदर्शनों की सूची है जो उन प्रक्रियाओं पर केंद्रित है जो समृद्ध देशों में मंदी, कल्याणकारी राज्य के पतन, प्रवास के मुद्दों, श्रमिक वर्ग की दरिद्रता और नाराजगी, वि–लोकतंत्रीकरण, और उदार लोकतंत्र के खिलाफ विद्रोह के लिए जिम्मेदार हैं।

>>

> समकालीन अति दक्षिणपंथ के उदय का संदर्भ

हमें सबसे पहले उस सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भ के बारे में पूछताछ करनी चाहिए जिसमें चरम दक्षिणपंथ (पुनः) उभरता है; और कुछ उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं पर एक नजर इस संबंध में खुलासा कर रही है। जब नरेंद्र मोदी (2014 में भारत में), रोड्रिगो दुतेर्ते (2016 में फिलीपींस में), और जेयर बोल्सोनारो (2018 में ब्राजील में) सत्ता में आए, तो उनके देश कल्याणकारी राज्य के किसी भी पूर्व रूप में ढह नहीं रहे थे: निर्धन गरीबी से निकल रहे थे और अधिनायकवाद कोई अजूबा नहीं था बल्कि इसमें एक महान वादा था। उस समय, भारत और फिलीपींस लगातार आर्थिक विकास के उच्च स्तर को बनाए हुए थे। यद्यपि ब्राजील ने मंदी के बीच बोलसोनारो को चुना, लेकिन चरम दक्षिणपंथ का पुनरुत्थान देश के आर्थिक विकास के शिखर के साथ हुआ (रोचा, 2018)। ये देश तथाकथित शरणार्थी संकट का सामना नहीं कर रहे थे, जहां अप्रवासी कदाचित स्वाभाविक आबादी के रोजगार के अवसरों का लाभ ले लेते। इसके बजाय, वे इनके नस्लीय "आंतरिक शत्रुओं" से निपट रहे थे।

विश्व के उपनिवेशित और परिधीय भागों में हठी अधिनायकवाद, रूढ़िवाद, अनिश्चितता और उपनिवेशवाद द्वारा चिह्नित चरम दक्षिणपंथ की पुनःउपस्थिति– को एक अविभाजित सैद्धांतिक ढांचे द्वारा नहीं समझाया जा सकता है जो मूल रूप से यूरोपीय–अमेरिकी–पश्चिमी लेंस के माध्यम से विकसित किया गया था। चरम दक्षिणपंथ पर शैक्षणिक विमर्श पर एक अंतर्दृष्टि वाली वि–औपनिवेशिक आलोचना में मसूद और निसार(2020) सुझाव देते हैं कि चरम दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद के व्यापक विश्लेषण में वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण में इन आंदोलनों की विषमताओं का हिसाब होना चाहिए। हम यह सुझाव नहीं दे रहे हैं कि वैश्विक उत्तर में अनुभव को खारिज कर दिया जाना चाहिए। 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी, यूनाइटेड किंगडम में 2016 ब्रेक्सिट जनमत संग्रह, और संयुक्त राज्य अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प का चुनाव दुनिया भर में अधिनायकवाद की संक्रामक लहरें पैदा करने और ऐसे आंदोलनों के लिए प्रासंगिक प्रोत्साहन और अवसर पैदा करने में महत्वपूर्ण घटनाएं थीं। ग्लोबल नॉर्थ के देश ग्लोबल साउथ पर शक्ति का प्रयोग करते हैं और लगातार चरमपंथी विचारधाराओं का निर्यात करते हैं। इसके अलावा, डिजिटल सोशल मीडिया, एक परस्पर जुड़ी हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था, सत्ता के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क, और साजिश के सिद्धांत कुछ ऐसे तत्व हैं जो सत्तावादी लोकलुभावन लहर को वैश्विक बनाते हैं।

> नए चरम दक्षिणपंथ पर विद्वताः एक तुलनात्मक और वैश्विक एजेंडे के लिए तत्व

यद्यपि वैश्विक दक्षिण में अधिनायकवाद और लोकलुभावनवाद के अध्ययन की एक लंबी परंपरा रही है, लेकिन नए चरम दक्षिणपंथी विद्वानों ने भारत और ब्राजील जैसे देशों ध्यान में रखने और समान विश्लेषणात्मक घटना के हिस्से के रूप में शामिल करने पर कम ही ध्यान नहीं दिया। 2017 में कैस मुड्डे द्वारा संपादित पुस्तक द पॉपुलिस्ट रेडिकल राइटः ए रीडर, मुख्य रूप से क्षेत्रीय है क्योंकि यह मुख्य रूप से यूरोप पर केंद्रित है लेकिन इसे सार्वभौमिक माना जाता है। बोल्सोनारो घटना ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। हालाँकि, इस प्रक्रिया का ज्ञानमीमांसीय मार्ग शैक्षणिक क्षेत्र में व्याप्त ज्ञान उत्पादन के औपनिवेशिक रूपों से दबा हुआ प्रतीत होता है। अब, ब्राजील को वैश्विक दक्षिण से एक केस स्टडी के रूप में शोध करने वाली कई परियोजनाओं में शामिल किया गया था, और वही विश्लेषणात्मक उपकरण इस पर लागू किये गए। मसूद और निसार (2020) से सहमत होते हुए हम मानते हैं कि इस मार्ग को उल्टा कर देना चाहिएः वर्तमान वैश्विक घटना के कुछ सुराग वैश्विक दक्षिण की अधूरी या संकर आधुनिकता से उत्पन्न होते हैं।

हालांकि साहित्य के एक विशाल समूह ने उन कारणों और सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया है जो दक्षिणी देशों में लोकलुभावन दक्षिणपंथी राजनीति के पुनरुत्थान का कारण बने, लेकिन इस घटना की समझ संकीर्ण और खंडित बनी हुई है क्योंकि इसमें एक ऐसे ढांचे का अभाव है जिसके भीतर यह पता लगाया जा सके कि कई उभरती हुई लोकतांत्रिक शक्तियां क्यों –फिर से– सत्तावादी राजनीति की तरफ मुड़ रही हैं। दक्षिणी अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करके, हमें उन लेंसों को पुनर्गठित करना चाहिए जिनके माध्यम से हम उपनिवेशित देशों के अनुभव को समझते हैं, वैचारिक सीमाओं और सीमाओं का विस्तार करते हैं (उन्हें नकारने के बजाय)। शोध के नए एजेंडे में हमें यह पूछने की जरूरत हैः नए दक्षिणपंथ में नया क्या है ? बोल्सनारो या डुटर्टे के अधिनायकवादी लोकलुभावनवाद और पिछले तानाशाही शासनों के मध्य क्या समानताएं और अंतर हैं? वैश्विक उत्तर उन देशों से क्या सबक सीख सकता है जो लंबे समय से अतिवादी राजनीति के भावों से चिह्नित हैं? अतिवाद, नव–फासीवाद और अधिनायकवाद के ये नए रूप सामाजिक अनिश्चितता के बीच कठोर नवउदारवादी तर्कसंगतता के साथ संयुक्त हैं और नई प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रकट हुए हैं जो इक्कीसवीं शताब्दी में लोकलुभावनवाद को बढ़ाते हैं और मुख्यधारा में लाते हैं ।

वैश्विक उत्तर और दक्षिण में चरम दक्षिणपंथ के मध्य शायद मुख्य अंतर तीव्रता और पैमाने का मामला है। फिर भी सटीक रूप से ऐसी तीव्रता और पैमाना को ऐतिहासिक विशिष्टताओं के भीतर समझा और प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, ट्रम्प और बोल्सोनारो एक समान कुत्ते–सीटी रणनीति पर भरोसा करते हुए समान सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से समान असहनीय बयान व्यक्त कर सकते हैं। हालांकि, समान रूप से घृणित व्यवहार के प्रभाव उन देशों में पूरी तरह से भिन्न होंगे जो आर्थिक विकास और उनके संस्थानों के लोकतांत्रिक समेकन की विभिन्न डिग्री पेश करते हैं। अति दक्षिणपंथ के अधिकांश विद्वान लोकलुभावन अधिनायकवादियों के बीच समानता के विश्लेषण को समाप्त कर देते हैं, लेकिन इस तथ्य पर अधिक ध्यान देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि वैश्विक दक्षिण में वैश्विक उत्तर की तुलना में लिंग और यौन अधिकारों के खिलाफ लड़ाई लड़ना बहुत अधिक असाधारण और इसलिए हानिकारक होगा।

> वैश्विक दक्षिण की विलक्षणताएँ

पाँच पहलू एक ऐसे नए ढाँचे का निर्माण कर सकते हैं जो वैश्विक दक्षिण की कई विलक्षणताओं में से कुछ के लिए जिम्मेदार हैः

1. **आर्थिक मंदी और राजनीतिक व्यक्तिपरकता/विषयनिष्ठता** : चरम दक्षिणपंथी साहित्य ने क्रोधी दरिद्र गोरे लोगों के आंकड़े पर ध्यान केंद्रित किया है। इसके विपरीत, वैश्विक दक्षिण में औपनिवेशी देशों लगातार संघर्ष और मंदी से चिह्नित हुए हैं। फिर भी, उभरती अर्थव्यवस्थाओं का प्रभावशाली आर्थिक विकास भी एक ऐसा विषय है जो नए प्रकार के राजनीतिक जुड़ाव को बढ़ावा देता है। जहाँ एक गौरवशाली अतीत के लिए विरह वैश्विक उत्तर में नवफासीवादी व्यक्तिपरकता को समझने के लिए बुनियादी है, इस श्रेणी पर वैश्विक दक्षिण में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

2. **राष्ट्रवाद और अज्ञातजनभीति की बारीकियाँ** : उपनिवेशित देशों में राष्ट्रवाद की अलग–अलग अभिव्यक्तियाँ हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, हो सकता है वैश्विक दक्षिण चरम

>>

दक्षिणपंथी ग्लोबल साउथ के कुछ देशों के पास गौरवशाली अतीत नहीं हो सकता है, लेकिन प्रोजेक्ट करने के लिए भविष्य है। इन देशों के बाहरी शत्रुओं (प्रवासी या शरणार्थी) के बजाय आंतरिक शत्रु (नस्लीय अल्पसंख्यक) होने की संभावना है। हालाँकि, नस्लवाद दूर–दराज परियोजनाओं के मूल में है, उदाहरण के लिए, जैसे ब्रिटिश श्वेत वर्चस्व का हिंदू वर्चस्व से अलग अर्थ हैं।

3. **तानाशाही और दबंगों की विरासत** : वैश्विक दक्षिण के कई देशों ने खूनी तानाशाही के परिणाम भुगते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सेना और पुलिस के भीतर नस्लीय और कमजोर समूहों, जिन्होंने कभी किसी प्रकार के लोकतंत्र का अनुभव नहीं किया है, के प्रति लगातार हिंसक लोकाचार हुआ है।

4. **गैर–धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रों में धार्मिक और नैतिक रूढ़िवाद** : धर्मनिरपेक्षता स्थापित लोकतंत्रों का एक मूल सिद्धांत है। हालाँकि, ग्लोबल साउथ में नए लोकतंत्र राजनीतिक मामलों में धार्मिक हस्तक्षेप और कट्टरवाद के नापाक प्रभावों को दूर करने के लिए संघर्ष करते हैं, जो एक अनुशासनात्मक मोड के रूप में कार्य करता है जो निकायों और कामुकता को नियंत्रित करता है।

5. **प्रतिरोध** : सुदूर दक्षिण वैश्विक दक्षिण में फिर से प्रकट हो गया है और यह एक ऐसी घटना है जो अंतिम प्रतीत होती है। हालाँकि, ऐसी राजनीतिक लहर के खिलाफ कुछ सबसे महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाएँ और रचनात्मक प्रतिक्रियाएँ अर्जेंटीना और चिली जैसे लैटिन अमेरिकी देशों में नारीवादी सामाजिक आंदोलनों से आती हैं।

अंत में, ये पांच पहलू न तो निर्णायक हैं और न ही ये सभी को एक समान मानने वाले परिपेक्ष्य में काम करते हैं। वे ऐसे सुझाव हैं जो उन विशेषताओं पर प्रकाश डाल सकते हैं जिन्हें वैश्विक दक्षिण के देश सत्तावाद की अपनी रोजमर्रा की अभिव्यक्ति में साझा करते हैं। हमारा मानना है कि वैश्विक दक्षिण में चरम दक्षिणपंथ के कारणों और परिणामों की बेहतर समझ के लिए अधिक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। ऐसे काम आज दुनिया में इस राजनीतिक घटना को समझने के तरीके को बदल सकते हैं। ■

सभी पत्राचार रोसाना पिनहेरो–मचाडो को <rosana.pinheiro-machado@ucd.ie>
/ Twitter: @_pinheira एवं तातियाना वर्गास–मैया को <vargas.maia@ufrgs.br>
/ Twitter: @estocastica पर प्रेषित करें।

1. देखें पिनहेरो–मचाडो और वर्गास–मैया, 2018। यह लेख हमारी 2023 की पुस्तक की प्रस्तावना का एक छोटा और अनुकूलित संस्करण भी है।

संदर्भ

Brown, W., Gordon, P. E., and Pensky, M. (2018) *Authoritarianism: three inquiries in critical theory*. Chicago, University of Chicago Press.

Eatwell, R., and Goodwin, M. (2018) *National populism: The revolt against liberal democracy*. Penguin UK.

Hawley, G. (2017) *Making sense of the alt-right.* New York, Columbia University Press.

Hermansson, P., Lawrence, D., Mulhall, J., and Murdoch, S. (2020) *The International Alt-right: Fascism for the 21st century?*. London, Routledge.

Inglehart, R. F., and Norris, P. (2016) Trump, Brexit, and the rise of populism: Economic have-nots and cultural backlash. *Harvard JFK School of Government Faculty Working Papers Series*. 1-52.

Masood, A., and Nisar, M. A. (2020) Speaking out: A postcolonial critique of the academic discourse on far-right populism. *Organization*. 27(1), 162-173.

Mondon, A., and Winter, A. (2020) *Reactionary democracy: How racism and the populist far right became mainstream*. London, Verso Books.

Mudde, C. (2017) *The populist radical right: A reader*. London, Routledge.

Mudde, C. (2019) *The far right today.* John Wiley & Sons.

Mudde, C., and Rovira Kaltwasser, C. (2018) Studying populism in comparative perspective: Reflections on the contemporary and future research agenda. *Comparative Political Studies.* 51(13), 1667-1693.

Pinheiro-Machado, R. Vargas-Maia, T. (2018) As Múltiplas faces do conservadorismo brasileiro. *Revista Cult.* 234, 26-31.

Pinheiro-Machado, R. Vargas-Maia, T. (2023). *The Rise of the Radical Right in the Global South*. London: Routledge.

Rocha, C. (2018) *"Menos Marx, mais Mises": uma gênese da nova direita brasileira (2006-2018)*. Doctoral dissertation, São Paulo, Universidade de São Paulo.

Tavares Furtado, H., and Eklundh, E. (2022). Populism or the European condition?. *Journal for the Study of Radicalism*. 16(2).

> हरित समझौतों एवं पारिस्थितिक–सामाजिक
बदलाव की भू–राजनीति

मैरिस्टेला स्वाम्पा, यूनिवर्सिडैड नैशनल डी ला प्लाटा, अर्जेंटीना; **अल्बर्टो अकोस्टा,** अर्थशास्त्री और संविधान सभा, इक्वाडोर के पूर्व अध्यक्ष; **एनरिक वायले,** पर्यावरण वकील, अर्जेंटीना; **ब्रेनो ब्रिंगेल,** स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ रियो डी जनेरियो, ब्राजील और यूनिवर्सिडैड कॉम्प्लूटेंस डी मैड्रिड, स्पेन; **मिरियम लैंग,** यूनिवर्सिडाड एंडीना सिमोन बोलिवर, इक्वाडोर; **रफाएल होइतमर,** रणनीति और अभियान डिजाइन, अनुसंधान और संगठनात्मक परिवर्तन, पेरू की भागीदारी प्रक्रियाओं में विशेषज्ञ; **कारमेन अलीगा,** कोलेटिवो डी कोऑर्डिनैसोन डी एक्सिओनेससोशियोएम्बिएंटेल्स, बोलीविया; और **लिलियाना बुइट्रागो,** ऑब्जर्वेटोरियो डी इकोलॉजी पोलिटिका, वेनेजुएला द्वारा।

साभारः पैक्टो इकोसोशल ई इंटरकल्चरल डेल सुर

कोविड–19 महामारी की शुरुआत के बाद, 2020 के प्रारंभिक महीनों में द इकोसोशल एंड इंटरकल्चरल पैक्ट ऑफ द साउथ का गठन किया गया था। इसका मुख्य लक्ष्य लैटिन अमेरिका के लिए नीचे से ऊपर पारिस्थितिक संक्रमण का समर्थन करना था। अपने मूल से, मंच ने अन्य संघर्षों के बीच सामुदायिक नियंत्रण, क्षेत्रीय स्वायत्तता, खाद्य संप्रभुता, कृषि विज्ञान, सामुदायिक ऊर्जा और पारिस्थितिक नारीवाद से जुड़े विविध स्थानीय अनुभवों को बढ़ावा देने, बढ़ाने और व्यवस्थित करने की मांग की।

यह पहल उन विभिन्न संकटों का जवाब देने की तत्काल आवश्यकता से प्रेरित थी, जिनसे समकालीन दुनिया गुजर रही

>>

है। लेकिन लैटिन अमेरिकी सन्दर्भ में, ये हाल के वर्षों में उभरे पारिस्थितिक संक्रमण और ग्रीन समझौतों के प्रस्तावों के लिए विकल्प प्रदान करने से भी प्रेरित थे। हम समझते हैं कि, विभिन्न स्थानीय अनुभवों के माध्यम से सभी महाद्वीपों में हुई प्रगति के विपरीत, वे वर्चस्ववादी समझौते, यह देखते हुए अपर्याप्त हैं कि वे यथास्थिति का पुनरुत्पादन करते हैं और गहन भू–राजनीतिक विषमताओं और उत्तर–दक्षिण असमानताओं को बढ़ाते हैं।

दो वर्ष से अधिक समय बीत चुका है, और वैश्विक स्थिति और खराब हो गई है। अब हम युद्ध (यूक्रेन पर रूस के आक्रमण) के संदर्भ में डूबे हुए हैं, जिसने ऊर्जा और खाद्य संकट को बढ़ा दिया है, और जलवायु संकट के त्वरण का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, युद्ध ने वर्चस्वादी हरित संक्रमण से जुड़े शोषण के पारंपरिक और नए दोनों रूपों की तीव्रता में योगदान दिया है।

यह लेख तीन तत्वों का विश्लेषण करता है। सबसे पहले, हम वर्चस्ववादी हरित समझौतों की कुछ प्रमुख विशेषताओं की जांच करते हैं और अपनी आलोचना तैयार करते हैं। उसके बाद, हम पारिस्थितिक ऋण के संदर्भ में पारिस्थितिक संक्रमणों की भू–राजनीति पर चर्चा करते हैं। अंत में, हम न्यायोचित बदलाव की प्रगति के लिए प्रस्तावों और चुनौतियों पर प्रकाश डालते हैं और अभिन्न पारिस्थितिक न्याय का क्षितिज क्या हो सकता है, को रेखांकित करते हैं।

> वर्चस्ववादी ग्रीन समझौतों के समक्ष दक्षिण के पारिस्थितिक और सांस्कृतिक समझौता

पारिस्थितकीय एवं व्यवस्थागत ध्वंस के अपरिहार्य तथ्यों का सामना करते हुए, दुनिया भर के व्यापक कॉर्पोरेट और राजनीतिक क्षेत्रों द्वारा ऊर्जा संक्रमण को एक लक्ष्य के रूप में लिया गया है। अधिकांश भाग के लिए, वे कार्बन उत्सर्जन को कम करने की आवश्यकता देखते हैं लेकिन पूंजी के मौजूदा सामाजिक चयापचय पर सवाल नहीं उठाते। उनके "संक्रमण" विमर्श और कार्यक्रम कॉरपोरेटवादी, प्रोद्योगिक, लोकतांत्रिक, नव–औपनिवेशिक और यहां तक कि निष्कर्षणवादी रणनीतियों पर आधारित हैं जो संरचनात्मक परिवर्तन को नहीं मानते हैं। दक्षिण के इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट के परिप्रेक्ष्य से हम इन दृष्टिकोणों पर सवाल उठाते हैं और वैश्विक न्याय के तर्क, जो संक्रमण के वर्चस्ववादी प्रस्तावों का आलोचक और विकल्प दोनों है, में पारिस्थितिक संक्रमण को स्थिर करने की आवश्यकता को पहचानते हैं।

हाल के वर्षों में, ग्रीन डील और ग्रीन न्यू डील प्रस्तावों का प्रसार हुआ है। वे विविध और विषम हैं लेकिन आम तौर पर कार्बन उत्सर्जन को कम करने और "न्यायसंगत" और कथित तौर पर "टिकाऊ" आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के बारे में वैश्विक उत्तर में राजनीतिक–विवेकपूर्ण संगम के लिए एक रूपरेखा तैयार करने के लिए उभरे हैं। जलवायु न्याय अक्सर इन ग्रीन पैक्ट्स के एजेंडे के केंद्र में होता है, जिसमें ऐतिहासिक रूप से नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों का सामना करने वाले समुदायों के लिए "निवारण निधि" निर्धारित होती है। लेकिन अधिकांशतः, जलवायु न्याय पानी के किनारे पर रुक जाता है। नवीकरणीय ऊर्जा में संक्रमण की अपनी उत्सुकता में, ग्लोबल नॉर्थ शायद ही कभी ग्लोबल साउथ पर इस संक्रमण के पड़ने वाले प्रभावों पर विचार करता है। फ्रेंकलिन डी रुजवेल्ट की ऐतिहासिक नई डील के इशारे पर वर्णित ग्रीन नई डील के सन्दर्भ में राजनैतिक वामपंथी के विभिन्न समूहों द्वारा तैयार अधिकांश प्रति– प्रस्तावों का मामला भी ऐसा ही था। अन्यथा इनका सामाजिक नीतियों, आर्थिक विनियमन और रोजगार सृजन पर राज्य हस्तक्षेपों पर मजबूत दृष्टिकोण रहता है जबकि अन्य ग्रीन पेक्ट्स हरित समझौते संक्रमण/बदलाव का नेतृत्व करने के लिए निगमों और बाजारों के लिए अधिक जगह छोड़ते हैं।

सामान्य शब्दों में, ग्लोबल नॉर्थ में सभी ग्रीन डील जलवायु परिवर्तन की तात्कालिकता और आर्थिक न्याय को डीकार्बोनाइजेशन के साथ जोड़ने की आवश्यकता को पहचानती हैं। निस्संदेह, वे विकासवादी अंधेपन और नकार के सामने एक कदम आगे हैं। लेकिन यूरोपियन ग्रीन डील, जो कि निस्संदेह अभी तक के सरकारी कार्यक्रमों में सबसे अधिक महत्वाकांक्षी मानी जाती है, भी पूर्ण आर्थिक बदलाव का प्रस्ताव नहीं देती है और क्षेत्र के भीतर विवेचनात्मक कर्त्ताओं द्वारा इसका विरोध किया जाता है। इस बीच, यूएस जीएनडी काफी हद तक आकांक्षी है। इसने कांग्रेस के एक गैर–बाध्यकारी संकल्प का रूप ले लिया है, लेकिन कानून का नहीं। जहाँ जीएनडी मुद्दा जो बिडेन के चुनावी मंच का हिस्सा था, उसी प्रशासन ने पहले ही अपतटीय तेल विकास के लिए लाखों हेक्टेयर को मंजूरी दे दी है। अपने भाग पर, चीन, अपनी नवीनतम पंचवर्षीय योजना में इरादों की घोषणा के बावजूद, निरपेक्ष रूप से दुनिया में उच्चतम CO_2 उत्सर्जन वाला और कोयले के बड़े पैमाने पर उपयोग वाला देश बना हुआ है।

कई ग्रीन पैक्ट्स अंत में पर्यावरण–सामाजिक संक्रमण को बाजार–प्रभुत्व वाले ऊर्जा संक्रमण में बदल देते हैं। प्रमुख दृष्टि ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ दोनों में एक कॉर्पोरेट परिवर्तन की है। इसे एक मॉडल की निरंतरता के रूप में देखा जा सकता है जिसमें जीवाश्म ईंधन व्यवस्था के सामान ही एकाग्रता और व्यवसाय का तर्क पाया जाता है। यह प्रादेशिक हस्तक्षेप की ऊर्ध्वाधर योजना को कायम रखता है, जो हिंसक निष्कर्षणवाद की विशेषता है ।

इस निगमीय कॉर्पोरेट संक्रमण का एक उदाहरण "लिथियम त्रिकोण" है (उत्तरी अर्जेंटीना और चिली एवं दक्षिणी बोलीविया), जहाँ हम ग्लोबल नार्थ, जिसे इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बैटरी की आपूर्ति चाहिए,की जरूरतों के लिए हरित संक्रमण के सन्दर्भ में निष्कर्षण का पुनर्गठन देख रहे हैं। दूसरा स्पष्ट उदाहरण चीन में पवन टरबाइन ब्लेड के निर्माण में उपयोग की जाने वाली बाल्सा लकड़ी के बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए इक्वाडोरियन अमेजॅन के वनों की कटाई है।

नार्थ के "हरित" ऊर्जा संक्रमण के नाम पर निष्कर्षणवाद की इस नई तीव्रता की निंदा और विश्लेषण करना आवश्यक है। वर्चस्वादी ग्रीन पैक्ट्स जिसे "संक्रमण" कहते हैं, वह केवल ऊर्जा मैट्रिक्स के "विविधीकरण" का प्रतिनिधित्व करता है। यहां तक कि उत्तर में सबसे अच्छे इरादों वाले मामलों में भी, सामाजिक न्याय को पर्यावरणीय न्याय के साथ एकजुट करने की वास्तविक चिंता के साथ, ग्लोबल साउथ पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार किए बिना, "न्यायोचित संक्रमण" अक्सर घरेलू स्तर तक ही सीमित रहता है।

ऊर्जा के विकेंद्रीकरण और विसंकेंद्रण और उत्पादन के तरीके में बदलाव के बिना, ये समझौते ऐसे पारिस्थितिक संक्रमण को बढ़ावा देते हैं जो पूंजीवादी संचय के तर्क को नहीं छोड़ता है और अनंत विकास पर दांव लगाना जारी रखता है। इसलिए, उपापचय की दृष्टि से जीवाश्म ईंधन मॉडल की अस्थिरता बनी रहती है, क्योंकि इस विकास मॉडल के लिए प्रकृति के शोषण और विनाश की तीव्रता की आवश्यकता होती है।

इसके विपरीत और इन प्रस्तावों पर विवाद करने के लिए, हम भू–राजनीतिक दक्षिण के दृष्टिकोण से न्यायोचित बदलावों की अवधारणा का प्रस्ताव करते हैं, ताकि नार्थ द्वारा ये परिभाषित होना और पुनःउपनिवेशी बनाना न जारी रखें। हम क्षेत्रीय अवधारणाओं को छोड़ने और पारिस्थितिक सामाजिक संक्रमणों की एक अधिक

>>

बहुआयामी, समग्र और अभिन्न दृष्टि विकसित करने की भी वकालत करते हैं। एक ऊर्जा संक्रमण जो ऊर्जा संसाधनों के वितरण में कट्टर असमानता को संबोधित नहीं करता है, जो कि डीमोडिफिकेशन और डीकोलोनाइजेशन को बढ़ावा नहीं देता है, और नागरिक समाज एवं जीवन के ताने बाने के लचीलेपन और पुनर्योजी क्षमता और जीवन के ताने–बाने को मजबूत करता है, ध्वंस के संरचनात्मक कारणों में परिवर्तन किये बिना केवल आंशिक सुधार का उत्पादन करेगा।

> पारिस्थितिक त्रृण और पारिस्थितिक सामाजिक संक्रमण की भू–राजनीति

हमारे प्रस्ताव पारिस्थितिक सामाजिक संक्रमण की भू–राजनीति को केंद्र में रखते हैं। दीर्घावधि में, इसका तात्पर्य उत्तर–दक्षिण संबंधों, स्थानिकताओं और प्रवाहों को वैश्विक नार्थ के पूंजीवाद–साम्राज्यवाद की तुलना में लैटिन अमेरिका में बेदखली के ऐतिहासिक–औपनिवेशिक मॉडल के संबंधों द्वारा अंकित के रूप में पढ़ना है। मध्यम और अल्पावधि में, यह राज्यों और निगमों द्वारा प्रचारित ''झूठे समाधानों'' को उजागर करने और यह पहचानने का मामला है कि वे कई क्षेत्रों में विनाशकारी भूमिका कैसे निभाते हैं।

पारिस्थितिक संक्रमणों की भू–राजनीति के कई चेहरे हैं। एक लैटिन अमेरिका से कच्चे माल की तीव्र निकासी से जुड़ी वैश्विक असमानताओं में वृद्धि है। इसके साथ–साथ, प्रजातियों के विलुप्त होने की बढ़ती दर और वर्ल्ड वाइड फण्ड फॉर नेचर के अनुसार 1970 के बाद से दुनिया भर में कशेरुकियों की आबादी के आकार में औसतन 68 फीसदी गिरावट और लैटिन अमेरिकन उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में यहां तक कि 94% तक की गिरावट के साथ समुदायों पर सहयोगी प्रत्यक्ष और ऋणात्मक प्रभाव और जैव विविधता की हानि भी है। यह सब पारिस्थितिक ऋण को रेखांकित करता है। जहाँ इसकी उत्पत्ति औपनिवेशिक लूट में हुई है, यह फिर पारिस्थितिक रूप से असमान विनिमय और औद्योगिक देशों के भक्षक रहवास के तरीकों से निर्धन देशों में स्थित पर्यावरणीय स्थान के प्राकृतिक दावे दोनों से बढ़ जाती है।

दक्षिण के देशों से प्राकृतिक संसाधनों के निर्यात के कारण पर्यावरण, श्रम और क्षेत्रों पर पड़ने वाले दबावों पर भी विचार किया जाना चाहिए। पारिस्थितिक ऋण एक अन्य अंतःसंबंधित तरीके से भी बढ़ रहा है, जैसे अमीर देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से या तो प्रदूषण (अपशिष्ट या उत्सर्जन) को अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित करके या इसके लिए जिम्मेदारी लिए बिना मुआवजे (कार्बन ऑफसेट) की मांग कर के अपने ''राष्ट्रीय'' पारिस्थितिकी तंत्र के असंतुलन को दूर करते हैं।

पारिस्थितिक ऋण जलवायु ऋण भी है और वैश्विक दक्षिण और वैश्विक उत्तर के मध्य ऐतिहासिक उत्सर्जन में एक बड़ा अंतर है। उदाहरण के लिए, यूरोप और उत्तरी अमेरिका 1750 के बाद से 60% से अधिक कार्बन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं, जबकि दक्षिण अमेरिका केवल 3% के लिए जिम्मेदार है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे हम पारिस्थितिक ऋण को मौद्रिक क्षतिपूर्ति के दायरे तक सीमित नहीं रख सकते हैं । ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रकृति का वस्तुकरण और संबंधित पर्यावरणीय लागत ने ग्रहीय शोषण की एक प्रणाली को छोड़ दिया है और लगातार छोड़ रही है जो नस्लीय और उपनिवेशित लोगों को पूरी तरह से असमानुपातिक तरीके से प्रभावित करती है।

पारिस्थितिक ऋण का दावा करके, हम दक्षिण के लोगों के लिए अभिन्न, ज्ञानमीमांसीय और प्रतिकारक न्याय के संदर्भ में एक गरिमापूर्ण जीवन की गारंटी देने के लिए व्यापक रणनीतियों की वकालत करते हैं। इसके विपरीत, भू–राजनीतिक अंतराल को कम करने से दूर, वर्चस्ववादी संक्रमण प्रस्तावों में वैश्विक दक्षिण के औपनिवेशिक और पारिस्थितिक ऋणों को गहरा करने का गंभीर जोखिम है। इन ऋणों के पुनर्भुगतान को शामिल किए बिना कोई जलवायु न्याय और कोई पारिस्थितिक सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं है। किसी भी द्वैतवाद और सरलता से दूर, इस बिंदु पर, वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के संघर्षों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच संवाद रणनीतिक है। यह दोनों कौन किसका ऋणी है और विभिन्न अक्षांशों से पारिस्थितिक –क्षेत्रीय संघर्ष के मध्य अंतर्राष्ट्रीयता के नए रूपों को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक बहस प्रोत्साहित करने के लिए ये दोनों आवश्यक है।

> एक न्यायपूर्ण ऊर्जा संक्रमण और अभिन्न न्याय के पारिस्थितिक क्षितिज के बीच

ग्लोबल साउथ की अन्य वास्तविकताओं के साथ हमारी चर्चाओं में (हमारा हालिया Manifesto for an Ecosocial Energy Transition from the Peoples of the South देखें), वैश्विक नार्थ के अति–उपभोग को फीड करने के लिए हम अपतटीय तेल शोषण, फ्रेकिंग और यहां तक कि अधिक मेगा–परियोजनाओं को बढ़ाने के लिए एक प्रवृत्ति को देखते हैं। गहन औद्योगिक मोनोकल्चर के रूप में कृषि निष्कर्षण सभी जल, वायु और भूमि संसाधनों को विनियोजित कर रहा है। हमारे सभी देशों में कॉर्पोरेट नियंत्रण की भारी मात्रा खतरनाक है।

यद्यपि सामाजिक–पारिस्थितिक संक्रमण ऊर्जा के मुद्दे तक सीमित नहीं हो सकते, ऊर्जा प्रणाली, उत्पादन के तरीके और समाज/प्रकृति संबंधों का एक संरचनात्मक परिवर्तन आवश्यक है। ऊर्जा संक्रमण से हम जो समझते हैं, के संदर्भ में दक्षिण के पारिस्थितिक और अंतर–सांस्कृतिक समझौते की मुख्य पंक्तियाँ हैं:

- ऊर्जा एक अधिकार है और जीवन के जाल को बनाए रखने के लिए ऊर्जा लोकतंत्र एक आवश्यकता है।

- ऊर्जा निर्धनता को समाप्त करने के लिए सामाजिक न्याय को पर्यावरणीय न्याय के साथ जोड़ना आवश्यक है। पारिस्थितिक सामाजिक न्याय का तात्पर्य उन शक्ति संबंधों को खत्म करना है जो कमजोर क्षेत्रों को छोड़कर समाज के एक विशेषाधिकार प्राप्त समूह के लिए पहुंच को प्राथमिकता देना जारी रखते हैं और नारीकृत निकायों और प्रकृति का शोषण करते हैं।

- हमें अपने समाजों और अर्थव्यवस्थाओं को डीकार्बोनाइज करना होगाः यह शोषण द्वारा छोड़े गए पारिस्थितिक, ऐतिहासिक और औपनिवेशिक पदचिह्न, और दक्षिण में मौजूद कच्चे माल के भंडार दोनों के कारण के कारण उत्तर की तुलना में दक्षिण में एक अधिक बड़ी चुनौती है।

- हमारी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को जीवाश्म ईंधन से, प्रकृति के दोहन के लिए जनादेश से, और विकासवादी कल्पना से अलग करना जो अभी भी लैटिन अमेरिका को एक सीमित ''एल डोराडो'' के रूप में रखता है, आवश्यक है।

- पूरी प्रणाली को बदलना चाहिए, न कि केवल ऊर्जा मैट्रिक्स को: विकेंद्रीकृत करना, विनिजीकृत करना, विकेंद्रीकृत करना, वि–पितृसत्तात्मकीकरण करना, वि–वस्तुकरण डीकमोडीफाई, विऔपनिवेशीकरण करना, मरम्मत करना और चंगा करना।

>>

- हमें उत्पादन के तरीके के साथ–साथ प्रकृति के साथ सामाजिक संबंधों और संबंधों के अपने मैट्रिक्स को भी बदलना होगा।

- ऊर्जा को संबंधपरक तरीके से देखने की जरूरत है, इसलिए हमें ऊर्जा पर अपनी अन्योन्याश्रितता और पर्यावरण–निर्भरता को दृश्यमान बनाना होगा।

- ''गलत समाधानों'' पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है, उदाहरण के लिए, संक्रमण के लिए अक्षय ऊर्जा, लिथियम, और अन्य खनिजों पर लागू होने वाली सीमायें और दोहरे मानक। इसमें उन महत्वपूर्ण परिपेक्ष्यों पर मतैक्य सम्मिलित हैं जिन्हें कॉर्पोरेशंस और राज्य दक्षिण के लिए विवादस्पद मुद्दे जैसे ग्रीन, ग्रे या ब्लू हाइड्रोजन, स्मार्ट कृषि, कार्बन बाजार, भू–अभियांत्रिकी और वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के मध्य वर्तमान शक्ति संबंधों और असमानताओं को बनाये रखने पर केंद्रित अन्य प्रस्तावों पर चिंतन करने वाले ऊर्जा मॉडल्स को लागू करने के लिए COPs जैसे स्थानों तक पहुँचते हैं।

- जीवाश्म ईंधन को जमीन में छोड़ देना चाहिए।

- हमें न केवल मौद्रिक बल्कि संरचनात्मक और प्रतीकात्मक अर्थों में क्षेत्रीय या दक्षिणी दृष्टिकोण से पारिस्थितिक ऋण के भुगतान को पुनः प्राप्त करना होगा।

- यह महत्वपूर्ण है कि हम सामाजिक चयापचय को घटायें और कम करें: कम सामग्री और ऊर्जा के साथ उत्पादन करें और कम खपत करें– भौतिक और मौद्रिक आयामों से दूर कल्याण की हमारी समझ को पुनःपरिभाषित करें।

इन सामरिक रेखाओं के लिए, प्रत्येक संदर्भ में विशिष्ट प्रस्तावों को जोड़ा जाना चाहिए जो विभिन्न वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील हों। हमने हाल ही में CENSAT Agua Viva और अन्य लैटिन अमेरिकी संगठनों के साथ Disminución planeada de la dependencia fósil en Colombia, दस्तावेज को बढ़ावा देकर ऐसा करने का प्रयास किया है। यह एक एक सामूहिक प्रस्ताव है जो गुस्तावो पेट्रो और फरांसिया मार्केज मीना की अध्यक्षता वाली कोलम्बियाई सरकार द्वारा दिए गए ऊर्जा संक्रमण प्रस्ताव के साथ संवाद करना चाहता है।

हमारे क्षेत्र में चल रही परिवर्तन की प्रक्रियाओं के प्रति संवेदनशीलता के साथ, साथ ही प्रतिगामी और कुलीन वर्गों के वजन के बारे में जानते हुए इकोसोशल एंड इंटरकल्चरल पैक्ट ऑफ द साउथ में हम विरोधों, प्रस्तावों और विकल्पों को मिलाते हुए आगे बढ़ना जारी रखेंगे। हम उन विचारों और अवधारणाओं को लेंगे जो हाल के दशकों में आंदोलनों के संघर्षों के ताप में गढ़े गए हैं और स्वयं को उनके साथ रखेंगे: प्रकृति के अधिकार, अच्छी तरह से रहना, पुनर्वितरण न्याय, देखभाल, न्यायोचित परिवर्तन, स्वायत्तता, उत्तर–निष्कर्षणवाद, पर्यावरण–क्षेत्रीय नारीवाद, खाद्य संप्रभुता और स्वायत्तता। यही कारण है कि हम एक अत्यंत अलग तरह के समझौते का बचाव करते हैं: सामान्य मोटी बिल्लियों के मध्य समझौतों और सौदों के आधिपत्यवादी ग्रीन पैक्ट नहीं; बल्कि, पृथ्वी के साथ एक समझौता, दक्षिण से और दक्षिण के लिए, जैसा कि आर्टुरो एस्कोबार द्वारा हमारी पहल की प्रस्तुति में सुझाया गया है। एक ऐसा समझौता जो जीने के अन्य तरीकों, और साथ और दुनिया में रहने के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में समझा जाता है।

सभी पत्राचार पैक्टो इकोसोशल डेल सुर को <pactoecosocialdelsur@gmail.com>
Twitter: @SvampaM / @AlbertoAcostaE / @EnriqueViale / @brenobringel / @lilib17 / @ColectivoCasa / @PactoSur पर प्रेषित करें।

> एक फीसदी के लिए विकास

वंदना शिवा, नवदान्य रिसर्च फाउंडेशन फॉर साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इकोलॉजी, नई दिल्ली, भारत द्वारा

पर्यावरणीय रूप से हानिकारक वाणिज्यिक योजक जैसे कि उर्वरक, कीटनाशक और आनुवंशिक रूप से इंजीनियर बीजों का उपयोग किए बिना छोटे किसान वास्तव में बड़े औद्योगिक कॉरपोरेट फार्मों की तुलना में अधिक उत्पादक हैं। अर्बु द्वारा चित्रण, 2023

हमें पूंजीवादी पितृसत्तात्मक सोच द्वारा आकारित 'विकास' और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के विमर्श से आगे बढ़ने और पृथ्वी परिवार के सदस्यों के रूप में अपनी सच्ची मानवता को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता है। जैसा कि लेसेम और शेफर ने अपनी पुस्तक Integral Economics में लिखा है: *"यदि पूंजीवादी सिद्धांत के पिताओं ने अपने सैद्धांतिक निर्माण के लिए सबसे छोटी आर्थिक इकाई के रूप में एक एकल बुर्जुआ पुरुष के बजाय एक माँ को चुना होता, तो वे मनुष्यों की स्वार्थी प्रकृति के स्वयंसिद्ध सिद्धांत को तैयार करने में सक्षम नहीं होते, जैसा की उन्होंने अभी किया है।"*

पूंजीवादी पितृसत्तात्मक अर्थव्यवस्था युद्ध और हिंसा– प्रकृति और विविध संस्कृतियों के खिलाफ युद्ध, तथा महिलाओं के खिलाफ हिंसा के माध्यम से आकार लेती है। जहाँ इसका उद्देश्य प्रकृति और लोगों द्वारा उत्पादित वास्तविक संपत्ति का स्वामित्व और नियंत्रण करना है, वहीं प्रतिस्पर्धी बाजारों के "तर्क" जैसे आर्थिक काल्पनिकताओं

>>

के साथ भौतिक प्रक्रियाओं का प्रतिस्थापन बढ़ रहा है। अलगाव, पितृसत्तात्मक मूल्यों और पूंजीवाद के अभिसरण से उभरने वाले प्रतिमानों की प्रमुख विशेषता अलगाव है। सबसे पहले, प्रकृति को मनुष्यों से अलग किया जाता है; फिर, मनुष्यों को लिंग, धर्म, जाति और वर्ग के आधार पर अलग किया जाता है। जो, आपस में जुड़ा हुआ है और अन्तर्सम्बद्ध है, उसका यह अलगाव ही हिंसा की जड़ है – जो पहले मन में, और फिर रोजमर्रा के कार्यों में परिलक्षित होती है। यह कोई संयोग नहीं है कि कॉर्पोरेट वैश्वीकरण के उदय के साथ अतीत की सामाजिक असमानताओं ने एक नया और क्रूर रूप ले लिया है। आज अक्सर यह देखा जाता है कि वर्तमान रुझानों के अनुसार, जल्द ही वैश्विक आबादी का 1 फीसदी शेष 99 फीसदी जितना धन नियंत्रित करेगा।

वास्तविक लोगों के अधिकारों को पार करते हुए, आज निगम कानूनी व्यक्तित्व का दावा करते हैं। लेकिन धन सृजन के वास्तविक स्रोतों से काल्पनिक निर्माणों की दूरी और भी बढ़ गई है। वित्त अब पूंजी के लिए उन उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के साथ प्रतिस्थापित हो गया है,जो अमीरों को कुछ भी नहीं करते हुए '' किरायाजीवी'' के रूप में धन जमा करने की अनुमति देते हैं। वित्तीय अर्थव्यवस्था में पैसा बनाना अटकलों पर आधारित है; और वित्तीय विनियमन अमीरों को अन्य लोगों की गाढ़ी कमाई का उपयोग करने की अनुमति देता है। ''विकास'' का विचार व्यक्तियों और सरकारों के बीच सफलता के माप के रूप में उभरा है। यह विकास और उसके संकटों के एक रूप की बात करता है: वैश्विक अनुभव और पूंजीवादी पितृसत्तात्मक बिग मनी द्वारा डिजाइन किए गए प्रतिमान जो सिर्फ इस बिग मनी के बड़े होने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आर्थिक विकास का प्रतिमान जिस चीज का संज्ञान लेने में विफल हुआ है, वह प्रकृति और समाज के भीतर जीवन का विनाश है। *इकोलॉजी* और *इकोनॉमिक्स* दोनों ही ग्रीक शब्द ओइकोस से लिए गए हैं जिसका अर्थ है घर, और दोनों शब्द घरेलू प्रबंधन का एक स्वरुप दर्शाते हैं। जब अर्थशास्त्र पारिस्थितिकी के विज्ञान के खिलाफ काम करता है, तो इसका परिणाम हमारे घर, पृथ्वी का कुप्रबंधन होता है।

जलवायु संकट, जल संकट, जैव विविधता संकट, खाद्य संकट सभी पृथ्वी और उसके संसाधनों के कुप्रबंधन के विभिन्न लक्षण हैं। लोग प्रकृति को ''वास्तविक पूंजी'' और इससे प्राप्त अन्य सभी चीजों के ''स्रोत'' के रूप में नहीं पहचान कर पृथ्वी का कुप्रबंधन करते हुए उसकी पारिस्थितिक प्रक्रियाओं को नष्ट करते हैं। प्रकृति और उसकी पारिस्थितिक प्रक्रियाएं जो पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखती हैं के बिना, बड़ी से बड़ी अर्थव्यवस्थाएं ढह जाती हैं और सभ्यताएं गायब हो जाती हैं।

समकालीन नवउदारवादी विकास मॉडल के तहत, निर्धन हैं क्योंकि 1 फीसदी लोगों ने उनकी आजीविका, संसाधनों और धन को हड़प लिया है। हम इसे आज मध्य पूर्व में रोजावा और म्यांमार के रोहिंग्या लोगों के दोनों समुदायों के विस्थापन में देखते हैं। किसान गरीब हो रहे हैं क्योंकि 1 फीसदी महंगे बीजों और रसायनों की खरीद पर आधारित एक औद्योगिक कृषि को बढ़ावा देते हैं, जो उन्हें कर्ज में फंसाता है और उनकी मिट्टी, पानी, जैव विविधता और स्वतंत्रता को नष्ट कर देता है।

मेरी पुस्तक, अर्थ डेमोक्रेसी, वर्णन करती है कि कैसे मोनसेंटो कॉर्पोरेशन ने इंजीनियर्ड बीटी कॉटन के प्रचार–प्रसार के माध्यम से कपास के बीज की आपूर्ति पर एकाधिकार कर लिया। अक्सर इन महंगे जीएमओ बीजों और अन्य तथाकथित हरित क्रांति प्रौद्योगिकियों की खरीद के माध्यम से कर्ज में डूबे, लगभग 300,000 भारतीय किसानों ने पिछले दो दशकों में आत्महत्या की है, जिनमें से अधिकांश आत्महत्याएं कपास क्षेत्र में केंद्रित हैं। मैंने इन हिंसक एकाधिकारों का मुकाबला करने के लिए नवदान्य नामक एक ग्रामीण अनुसंधान फार्म शुरू किया है। हम बीज स्वतंत्रता आंदोलन में वितरित करने के लिए किसानों की जैविक कपास की अपनी पारंपरिक किस्मों को बचाते हैं।

यदि किसान गरीब हो रहे हैं, तो इसका कारण *पॉइजन कार्टेल* हैं– जो अब तीन खिलाड़ियों तक सीमित हो गया है: मोनसेंटो बायर, डाउ ड्यूपॉ, और सिंजेन्टा केम चाइना– जो किसानों को महंगे बीज और रसायन खरीदने पर निर्भर करता है। लंबवत रूप से एकीकृत निगम, जंक फूड के प्रसंस्करण के लिए बीज को रसायनों से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जोड़ते हुए, किसानों द्वारा उत्पादित मूल्य का 99 फीसदी चोरी कर रहे हैं। वे गरीब होते जा रहे हैं क्योंकि ''मुक्त व्यापार'',डंपिंग, आजीविका के विनाश और कृषि कीमतों में गिरावट को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, छोटे किसान वास्तव में बड़े औद्योगिक कॉरपोरेट फार्मों की तुलना में, पर्यावरणीय रूप से हानिकारक वाणिज्यिक योजक जैसे कि उर्वरक, कीटनाशक और आनुवंशिक रूप से इंजीनियर बीजों का उपयोग किए बिना अधिक उत्पादक होते हैं। इसकी तुलना में, कैंपसीना के माध्यम से वैश्विक किसान संघ बताते हैं कि पारंपरिक तरीकों के प्रावधान न केवल किसानों के लिए अधिक स्वायत्तता की अनुमति देते हैं बल्कि वैश्विक ताप के प्रभाव को भी कम कर सकते हैं।

यह सर्वविदित है कि 1 फीसदी की ''विकास अर्थव्यवस्था'' जीवन–विरोधी है, और इसके कई प्रभाव ग्लोबल नॉर्थ में कामकाजी लोगों द्वारा भी महसूस किए जाते हैं। फिलीपींस के लोगों का एनजीओ आईबीओएन इंटरनेशनल इस बात की पुष्टि करता है कि अगर पारंपरिक रूप से मर्दानी हिंसा का इस्तेमाल उत्पादक श्रमिकों और प्रजनन निकायों दोनों के रूप में महिलाओं को शोषक बनाए रखने के लिए किया जाता था, तो मर्दानी हिंसा अब पूंजीवादी लाभ कमाने की सेवा में काम करती है। हर जगह लोग गरीब हो रहे हैं क्योंकि 1 फीसदी द्वारा कब्जा की गई सरकारें स्वास्थ्य और शिक्षा, परिवहन और ऊर्जा के लिए लाभ कमाने वाली निजीकरण नीतियां लागू करती हैं, जिसे विश्वबैंक और आईएमएफ के आदेशों से बल मिलता है।

प्रमुख पूंजीवादी पितृसत्तात्मक आर्थिक प्रतिमानों द्वारा बड़े पैमाने पर श्रमिकों, किसानों, गृहिणियों और प्रकृति को ''उपनिवेशों'' के रूप में स्थापित किया जाता है। वैश्वीकरण द्वारा विकास का पूंजीवादी मॉडल हिंसा के दो रूपों के अभिसरण को व्यक्त करता है: प्राचीन पितृसत्तात्मक संस्कृतियों की शक्ति का आधुनिक नवउदारवादी धन के शासन के साथ सयोजन। ■

सभी पत्राचार वंदना शिवा को <vandana@vandanashiva.com>
Twitter: @drvandanashiva पर प्रेषित करें।

> ब्यून विविर: वंशावली और क्षितिज

मोनिका चूजी, अमेजोनियन किचवा बुद्धिजीवी, पूर्व संचार मंत्री, इक्वाडोर; **ग्रिमाल्डो रेंगिफो**, एंडियन पीजेंट टेक्नोलॉजीज प्रोजेक्ट (PRATEC), पेरू; और **एडुआर्डो गुडिनास**, लैटिन अमेरिकन सेंटर फॉर सोशल इकोलॉजी (CLAES), उरुग्वे द्वारा।

ब्राजील के पोर्टो एलेग्रे के ग्रामीण इलाके में एक घर की बाहरी दीवार पर लुइसा एकौआन लोरेंत्ज द्वारा चित्रित भित्ति चित्र। साभारः लुइसा एकौआन लोरेंत्ज, 2022

बुएन *विविर* या "अच्छी तरह से रहने" की श्रेणी दक्षिण अमेरिकी दृष्टिकोणों की एक टुकड़ी को व्यक्त करती है जो विकास और आधुनिकता के अन्य मुख्य घटकों के कट्टरपंथी सवाल साझा करते हुए , एक ही समय में ऐसे विकल्प प्रदान करते हैं जो इससे परे पहुंचते हैं। यह कल्याण या अच्छे जीवन की पश्चिमी समझ के समान नहीं है, न ही इसे एक विचारधारा या संस्कृति के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह ज्ञान, प्रभावशीलता और आध्यात्मिकता में एक गहरा परिवर्तन व्यक्त करता है: जो मनुष्यों और गैर–मनुष्यों के बीच संबंधों को समझने के अन्य रूपों के लिए एक सत्तामीमांसीय खुलापन है जो समाज और प्रकृति के बीच आधुनिक विभाजन का संकेत नहीं देता है। यह एक बहुवचनात्मक श्रेणी है जो निर्माणाधीन है तथा विभिन्न स्थानों और क्षेत्रों में विशिष्ट स्वरुप लेती है। यह इस रूप में विधर्मिक है कि यह आधुनिकता की आंतरिक आलोचनाओं के साथ स्वदेशी तत्वों को संकरित करता है। *बुएनविविर* के विचारों के संदर्भ बीसवीं शताब्दी के मध्य से दर्ज किए गए हैं, लेकिन इसके वर्तमान अर्थ 1990 के दशक में प्रतिपादित किए गए थे।

इस संबंध में पेरू में *प्रोइक्टो एंडिनो डी टेक्नोलोजियास कैम्पेसिनस* (एंडियन प्रोजेक्ट ऑफ पीसेंट टेक्नोलॉजीज) का योगदानय *सेंट्रो एंडिनोडी ला एग्रीकल्टुरा और एल डेसरोलोएग्रोपेक्यूरियो* (बोलीविया में कृषि और पशुधन विकास के लिए एंडियन सेंटर); और विभिन्न बुद्धिजीवियों के साथ सामाजिक और स्वदेशी नेता जिसमें इक्वाडोर में अल्बेर्तो अकोस्टा विशेष हैं, के योगदान महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक आंदोलनों की एक विस्तृत श्रृंखला ने इन विचारों का समर्थन किया है, जिसके फलस्वरूप बोलीविया और इक्वाडोर में राजनीतिक परिवर्तन आये, और इसने संवैधानिक मान्यता हासिल की। *ब्यूनविविर* में प्रत्येक सामाजिक, ऐतिहासिक और पारिस्थितिक संदर्भ के लिए विशिष्ट विभिन्न संस्करण शामिल हैं। ये नवाचार के माध्यम से, और आधुनिकता स्वयं के भीतर आलोचनात्मक मुद्राओं वाली स्वदेशी परंपराओं से उपजी अवधारणाओं के जोड़ और संकरण के माध्यम से आते हैं। इनमें आयमारा का *सुमकामाना,* बोलीवियाई गुआरानी का *नानाडेरेको, सुमक्कावसे,* इक्वाडोरियन किचवाका *एलिकावसे* और पेरू के क्वेचुआ का *अलिंकावसे* सम्मिलित हैं। इक्वाडोर/पेरू के *शुवारा* और चिली मापुचे के *कुमेमोर्गेन* समान अवधारणाएं हैं। पश्चिमी योगदानों में विकास की कट्टरपंथी आलोचनाएं हैं, जिनमें पोस्ट–डेवलपमेंटय सत्ता और ज्ञान की औपनिवेशिकता की मान्यताय पितृसत्ता की नारीवादी आलोचनाय वैकल्पिक नैतिकता जो गैर–मानव के आंतरिक मूल्य को पहचानती है; और गहरी पारिस्थितिकी जैसे पर्यावरणीय दृष्टिकोण भी सम्मिलित है।

यहाँ कोई एकल *बुएनविविर* नहीं है; उदाहरण के लिए, इक्वाडोर का *सुमक्कावसे,* बोलीविया के *सुमाकामाना* से अलग है। पहले में, पश्चिमी श्रेणियों के अनुमानित अनुवाद एक समुदाय में अच्छे और सामंजस्यपूर्ण जीवन की कला को संदर्भित करते हैं, हालांकि इन्हे एक ही समय में सामाजिक और पारिस्थितिक आयामों में परिभाषित किया गया है। इस बीच, उत्तरवर्ती मिश्रित समुदायों में लेकिन विशिष्ट क्षेत्रों में एक साथ रहने को भी संबोधित करता है। इसी तरह, यह कहना उतना ही गलत है कि *ब्यूनविविर* विशेष रूप से एक स्वदेशी प्रस्ताव है, जितना यह कहना कि इसका अर्थ पूर्व–औपनिवेशिक स्थिति में वापस आना है; हालांकि इसके निर्माण के लिए ये योगदान आवश्यक हैं।

श्रेणी की विविधता से परे कुछ साझा घटक हैं (गुडिनास 2011)। सभी दृष्टिकोण प्रगति की अवधारणा और एकल सार्वभौमिक इतिहास की धारणा पर सवाल उठाते हैं। वे कई, समानांतर, गैर–रैखिक और यहां तक कि वृत्तीय, ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के लिए खुले हैं। आर्थिक वृद्धि, उपभोक्तावाद, प्रकृति के रूपांतरण आदि के साथ इसके जुनून के कारण वे विकास पर सवाल उठाते हैं। यह आलोचना विकास

>>

की पूंजीवादी और साथ ही समाजवादी किस्मों के तक फैली हुई है। इस परिप्रेक्ष्य से, समाजवादी *बुएनविविर* की बात करने का कोई अर्थ नहीं है। इनके विकल्प, पूंजीवाद–पश्च और समाजवादी–पश्च दोनों हैं, जो स्वयं को वृद्धि से अलग करते हैं, और मितव्ययिता के दृष्टिकोण से मानव आवश्यकताओं की पूरी संतुष्टि पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बुएनविविर मनुष्यों की केंद्रीयता को राजनीतिक प्रतिनिधित्व के साथ संपन्न एकमात्र विषय के रूप में और सभी मूल्यांकन के स्रोत के रूप में विस्थापित करता है।

इसका अर्थ एक नैतिक खुलापन (गैर–मनुष्यों के आंतरिक मूल्य और प्रकृति के अधिकारों को पहचानकर), साथ ही साथ एक राजनीतिक खुलापन (गैर–मानव विषयों की स्वीकृति) है। समुदायों और प्रकृति की सुरक्षा में महिलाओं की मुख्य भूमिका को पुनर्जीवित करने वाले नारीवादी विकल्पों को मानते हुए, यह ग्रामीण और देशज क्षेत्रों में भी पितृसत्तात्मकता का मुकाबला करता है। मानवता और प्रकृति के बीच आधुनिक विभाजन को भी चुनौती दी जाती है: *बुएनविविर* विशिष्ट क्षेत्रों में मनुष्यों और गैर–मानव पशुओं, पौधों, पहाड़ों, आत्माओं आदि से बने विस्तारित समुदायों को स्वीकार करता है। इसका एक उदाहरण एंडियन अवधारणा एएललू है: एक मिश्रित सामाजिक समुदाय जो एक विशिष्ट क्षेत्र में निहित हैं।

बुएनविविर उपनिवेशवाद के सभी रूपों को खारिज करता है और बहुसांस्कृतिकता से दूरी बनाए रखता है। इसके बजाय, यह एक प्रकार की अंतर–सांस्कृतिकता को बरकरार रखता है जो ज्ञान की प्रत्येक परंपरा को महत्व देती है, इस प्रकार यह राजनीति को बहुराष्ट्रीयता के आधार पर फिर से स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। *ब्यूनविविर* प्रभावितता और आध्यात्मिकता पर पर्याप्त महत्व देता है। विस्तारित समुदायों में संबंध बाजार विनिमय या उपयोगितावादी सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं हैं; इसके बजाय, वे अन्य गुणों के मध्य पारस्परिकता, पूरकता, सांप्रदायिकता और पुनर्वितरण को शामिल करते हैं।

ब्यूनविविर के पीछे के विचार कठोर आलोचना का विषय रहे हैं। कुछ लोग मानते हैं कि वे एक स्वदेशी न्यूनीकरणवाद को दर्शाते हैं, जबकि अन्य पुष्टि करते हैं कि, वास्तविकता में, वे एक नए युग का आविष्कार हैं। पारंपरिक वामपंथी बुद्धिजीवियों के अनुसार वे सच्चे उद्देश्य से ध्यान भटकाने वाले हैं, जो विकास का विकल्प नहीं, बल्कि पूंजीवाद का विकल्प है; वे गैर–मनुष्यों के आंतरिक मूल्य को भी अस्वीकार करते हैं। इन तर्कों के बावजूद, *ब्यूनविविर* विचारों ने एंडियन देशों के भीतर मजबूत और व्यापक समर्थन हासिल किया है। वहां से, वे पूरे लैटिन अमेरिका और वैश्विक परिदृश्य में तेजी से फैल गए हैं, जो विकास के विशिष्ट विकल्पों के लिए आधार प्रदान करते हैं, जैसे कि प्रकृति और पाचा मामा के अधिकारों की संवैधानिक मान्यता मेंय अमेजॅन ड्रिलिंग पर मोराटोरिया; पोस्ट–एक्सट्रेक्टिविज्म में संक्रमण के लिए मॉडल; या गैर–मानव अभिनेताओं की भागीदारी के आधार पर कॉस्मोपॉलिटिक्स में दिखाई देता है ।

बुएनविविर के इन मूल विचारों और बोलीवियाई और इक्वाडोरियन सरकारों की विकास रणनीतियों, जिन्होंने मेगा–माइनिंग या अमेजोनियन तेल निष्कर्षण जैसी प्रथाओं को बढ़ावा दिया है, इससे इनके बीच का विरोधाभास स्पष्ट हो गया है। इस तरह के "प्रगतिशील" शासनों ने *बुएनविविर* की नई परिभाषाओं के माध्यम से इन विरोधाभासों को दूर करने का प्रयास किया है, चाहे इक्वाडोर में एक प्रकार के समाजवाद के रूप में, या बोलीविया में अभिन्न विकास के रूप में, इस प्रकार इसे आधुनिकता के भीतर रखा गया है। इन विचारों को कुछ राज्य एजेंसियों, बुद्धिजीवियों और गैर–दक्षिण अमेरिकी बुद्धिजीवियों द्वारा समर्थित किया गया है, जो अपने इरादों के बावजूद, केवल विचारों की औपनिवेशिकता को लागू कर रहे हैं। इन सब के बावजूद, *बुएनविविर* के मूल विचार बने हुए है। वे पारंपरिक विकास के लिए सामाजिक प्रतिरोध का पोषण करना जारी रखे हैं; जहाँ, क्षेत्र, पानी और पृथ्वी की रक्षा में बोलीविया, इक्वाडोर और पेरू में स्वदेशी और नागरिक प्रदर्शनों के मामले। यह दर्शाता है कि *बुएनविविर* कुछ बुद्धिजीवियों और गैर सरकारी संगठनों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने उच्च स्तर का लोकप्रिय समर्थन हासिल किया है।

संक्षेप में, *ब्यूनविविर* एक सतत प्रस्ताव है, जो विभिन्न आंदोलनों और कार्यकर्ताओं द्वारा, इसकी प्रगति और असफलताओं, नवाचारों और विरोधाभासों के साथ पोषित है। यह अनिवार्य रूप से निर्माणाधीन है क्योंकि आधुनिकता से परे जाना आसान नहीं है। यह आवश्यक रूप से बहुवचनीय होना चाहिए क्योंकि इसमें उन स्तिथियों को शामिल किया गया है जो विशिष्ट इतिहास, क्षेत्रों, संस्कृतियों और पारिस्थितिकी में निहित सोचने, महसूस करने और होने के अन्य तरीकों को खोलते हुए आधुनिकता पर सवाल उठाते हैं। हालांकि, इस विविधता के भीतर स्पष्ट अभिसरण हैं जो इसे आधुनिकता से अलग करते हैं, जैसे कि प्रगति में आधुनिकता के विश्वास की अस्वीकृति, संबंध–परक विश्वदृष्टि से उपजी विस्तारित समुदायों की स्वीकृति, और गैर–मनुष्यों के आंतरिक मूल्य को स्वीकार करने वाली नैतिकता। ■

ट्विटर पर लेखकों का अनुसरण करें: @Monicachuji / @PratecPRA / @EGudynas

> उबंटू:

एक न्यायसंगत और सशक्त अवधारणा और जीने का तरीका

लेस्ली ले ग्रेंज, स्टेलेनबोश विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

मेडागास्कर, बाओबाब का एवेन्यू। साभारः एंटोनी सोशियस, अनस्प्लैश.

उबंटू एक दक्षिणी अफ्रीकी अवधारणा है जिसका अर्थ मानवता है और जिसका तात्पर्य अस्तित्व की स्थिति और बनने की स्थिति दोनों से है। यह अन्य मनुष्यों और गैर–मानव प्रकृति की मानव–से–अधिक दुनिया के संबंध में मानव के प्रकट होने से संबंधित है। दूसरे शब्दों में, मानवीय बनना, अन्य मनुष्यों और ब्रह्मांड पर निर्भर है। इसके अलावा, उबंटू का सुझाव है कि एक इंसान पश्चिमी परंपरा का परमाणु व्यक्ति नहीं है, अपितु वह सामाजिक और जैव–शारीरिक संबंधों में अंतर्निहित है।

अतः उबंटू ''मानवतावादी विरोधी'' है क्योंकि यह संबंधपरक अस्तित्व और मनुष्य के बनने पर जोर देता है। *उबंटू* सहारा के दक्षिण में अफ्रीका में कई भाषाओं में पाए जाने वाले लौकिक अभिव्यक्तियों या सूक्तियों से लिया गया है। दक्षिण अफ्रीका में बोली जाने वाली जुलु, झोसा और नदेबेले की नगुनी भाषाओं में, *उबंटूः उमुनतुंगुमुंटुंगाबानेयबंटू* अभिव्यक्ति से निकला है, जो बताता है कि एक व्यक्ति की मानवता, आदर्श रूप से दूसरों के साथ संबंध में व्यक्त की जाती है, और इस प्रकार, वह व्यक्तित्व की एक सच्ची अभिव्यक्ति हैः जो कहती है ''हम हैं, इसलिए मैं हूं। सोथो–त्सवाना भाषाओं में बोथो इसके समकक्ष है और यह शब्दः *मोथोकेमोथोकाबाबाबांग* लौकिक अभिव्यक्ति से लिया गया है। उबंटू में मनुष्य के मुख्य तत्वों में से एक शामिल है। मनुष्य के लिए जुलु शब्द उमुंतू है, जो निम्नलिखित से बना हैः *उम्जिम्बा* (शरीर, रूप, मांस), *उमोया* (सांस, हवा, जीवन), *उम्फेफुमेला* (छाया, आत्मा, आत्मा), *अमंदला* (जीवन शक्ति, शक्ति, ऊर्जा), *इनह्लिजियो* (हृदय, भावनाओं का केंद्र), *उमकोंडो* (सिर, मस्तिष्क, बुद्धि), *उलविमी* (भाषा, बोलना), और *उबंटू* (मानवता)।

>>

> जीने का एक पुनर्प्राप्त पारंपरिक तरीका

उबंटू, हालांकि, न केवल एक भाषाई अवधारणा है, बल्कि इसका एक मानक अर्थ है कि हमें दूसरे से कैसे संबंधित होना चाहिए – दूसरे के प्रति हमारा नैतिक दायित्व क्या है। उबंटू का सुझाव है कि हमारा नैतिक दायित्व दूसरों की देखभाल करना है, क्योंकि जब उन्हें नुकसान पहुंचाया जाता है, तो हमें नुकसान होता है। यह दायित्व पूरे जीवन तक फैला हुआ है, क्योंकि ब्रह्मांड में सब कुछ संबंधित है: जब मैं प्रकृति को नुकसान पहुंचाता हूं, तो मुझे नुकसान होता है।

सभी अफ्रीकी सांस्कृतिक मूल्यों की तरह, उबंटू को मौखिक और पारंपरिक रूप से प्रसारित किया गया था: इसका अर्थ अफ्रीकी लोगों के सांस्कृतिक प्रथाओं और जीवित अनुभवों के भीतर जुड़ा हुआ था। इस तरह के सांस्कृतिक मूल्य उपनिवेशीकरण से नष्ट या खत्म हो गए। हालाँकि, उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीका में उबुन्टु और उसके समकक्षों का वि–औपनिवेशी परियोजना के तहत पुनः आह्वान किया गया है और इसे सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय धारणीयता को प्राप्त करने की संभावना को जोखिम में डालने वाली विकास की प्रभुत्वशाली धारणाओं के वैश्विक विकल्प के रूप में बढ़ती हुई लोकप्रियता प्राप्त है। उदाहरण के लिए, दक्षिण अमेरिका में कुछ एफ्रो–वंशज समूह *बुएन विविर* की अधिक सूक्ष्म समझ हासिल करने के लिए उबंटू का आह्वान कर रहे हैं।

> एक न्यायपूर्ण और सशक्त अवधारणा

उबंटू इस विचार को व्यक्त करता है कि दूसरों के प्रति अन्याय–पूर्ण तरीके से शोषण, धोखा या कार्य करके कोई अपने सच्चे आत्म को महसूस या व्यक्त नहीं कर सकता है। दूसरों की उपस्थिति के बिना कोई खेल नहीं सकता है, अपनी इंद्रियों का उपयोग करने, कल्पना करने, सोचने, तर्क करने, कार्यों का उत्पादन करने या अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने में सक्षम नहीं है। अतः उबंटू, मनुष्यों के बीच और मानवों–से–अधिक दुनिया के बीच एकजुटता को दर्शाता है। इसे सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता के संघर्ष में मनुष्यों के मध्य एकजुटता के निर्माण के लिए लागू किया जा सकता है, जो दुनिया भर के सामाजिक आंदोलनों की केंद्रीय चिंता है।

इस अवधारणा में यह प्रस्ताव शामिल है कि मानव रचनात्मकता और स्वतंत्रता को केवल तभी बाधित किया जाना चाहिए जब वे दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं। उबंटू सभी प्राणियों के भीतर उस शक्ति का प्रकटीकरण है जो जीवन को बढ़ाने का काम करती है, और इसे कभी विफल नहीं करती। यह एक ऐसी शक्ति है जो उत्पादक है, जो जोड़ती है, और जो देखभाल और करुणा पैदा करती है – यह भीड़ की शक्ति है जो सामाजिक आंदोलनों को गति देती है। सत्ता का यह रूप उस शक्ति के विपरीत है जो थोपती है, जो विभाजित करती है, जो उपनिवेश बनाती है – संप्रभुता की शक्ति जो सुपर नैशनल संगठनों, सरकारों, सेना और कॉर्पोरेट दुनिया द्वारा संचालित होती है। शक्ति का यह रूप, सुपरनेशनल संगठनों, सरकारों, सेना और कॉर्पोरेट दुनिया द्वारा संचालित संप्रभु की शक्ति, के विपरीत है, जो जबरन लागू करवाती है, विभाजित करती है, उपनिवेश करती है। शक्ति के इस बाद के रूप में उबंटू का क्षरण होता है।

> बहुआयामी परिवर्तन

उबंटू की परिवर्तनकारी क्षमता इक्कीसवीं सदी में मानवता के सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियों के वैकल्पिक रीडिंग प्रदान करने में निहित है: जैसे मनुष्यों के बीच बढ़ती असमानता, आसन्न पारिस्थितिक आपदा, और नई प्रौद्योगिकियों के साथ मानव परस्पर संबंध इस हद तक कि यह निर्धारित करना मुश्किल है कि ''मानव होना'' अब क्या है। अंतिम चुनौती के बारे में, उबंटू का आह्वान करने से मानवता की पुष्टि करने का महत्व अग्रभूमि में आता है, यह परिभाषित करके नहीं कि मानव होना क्या है, जिससे अन्य तत्वों को ''गैर–मानव'' घोषित किया जा सके, बल्कि एक प्रक्रिया के माध्यम से जिसमें बढ़ती नई प्रौद्योगिकियों के संदर्भ में मानव का खुलासा शामिल है। दुनिया में असमानता को संबोधित करना केवल मनुष्यों के बारे में चिंता का सुझाव देता है – यह मानव–केंद्रित है– जबकि पारिस्थितिक संकट को संबोधित करने से इस चिंता को मानव –से– अधिक दुनिया तक बढ़ाया जाता है– जो इस बात को इंगित करता है कि यह पर्यावरण–केंद्रित है। उबंटू इस रूप में परिवर्तनकारी है कि यह मानव–केंद्रित (एंथ्रोपोसेंट्रिक) और पारिस्थितिकी –केंद्रित (इको–केंद्रित) बाइनरी को पार करता है।

मनुष्यों के बीच संबंधपरकता को ब्रह्मांड के भीतर संबंधपरकता के सूक्ष्म जगत के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिए स्वयं का पोषण करना या अन्य मनुष्यों की देखभाल करना मानव –से – अधिक दुनिया की देखभाल करने के लिए विरोधी नहीं है – उबंटू को केवल मानव–केंद्रित या पर्यावरण–केंद्रियता की श्रेणी में कम नहीं किया जा सकता है। स्व, समुदाय और प्रकृति एक–दूसरे के साथ अटूट रूप से जुड़े हुए हैं – एक डोमेन में उपचार के परिणामस्वरूप सभी में उपचार होता है, और इसलिए साथ ही तीनों आयामों में ट्रांसवर्सल रूप से अनुभव की जाने वाली पीड़ा भी व्यक्त होती है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए संघर्ष एक संघर्ष है।

> दुर्विनियोजन से सावधान रहने की जरूरत

उबंटू की दो संभावित सीमाओं की पहचान की जा सकती है। सबसे पहले, अवधारणा की एक संकीर्ण नृवंशविज्ञान संबंधी व्याख्या का उपयोग दूसरों को बाहर करने के लिए राजनीतिक रूप से किया जा सकता है। इससे, मेरा मतलब है कि उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीका में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने वाले कुछ समूह यह दावा कर सकते हैं कि अवधारणा उनकी है – भले ही यह शब्द के अर्थ के विपरीत हो सकता है – या यह विचार रखता है कि इसे आलोचनात्मक जांच के अधीन नहीं किया जा सकता है। अन्य शब्दों में कहें, तो उबंटू एक संकीर्ण मानवतावाद में न्यूनीकृत हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप हाल के दिनों में दक्षिण अफ्रीका में अनुभव किए गए जेनोफोबिया जैसे अत्याचार होते हैं। दूसरा, इसकी लोकप्रिय अपील के कारण, उबंटू को सुपरनेशनल संगठनों, सरकारों और कॉर्पोरेट दुनिया द्वारा अपने स्वयं के एजेंडे के अनुरूप चुना जा सकता हैय या ज्ञानत्माक्ता के पश्चिमी तरीकों के प्रभुत्व को देखते हुए, यह एक पश्चिमी सांस्कृतिक संग्रह में आत्मसात हो सकता है, जो इसकी स्वदेशीता को खत्म कर सकता है। ■

सभी पत्राचार लेस्ली ले ग्रेंज को <llg@sun.ac.za>
Twitter: @LesleyLeGrange पर प्रेषित करें।

> पारिस्थितिकी नारीवादी
बहस का मानचित्रण

क्रिस्टेल टेरेब्लांचे, क्वाजुलु–नटाल विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

काराकोल ओवेंटिक, चियापास, मेक्सिको में जापतिस्ता क्षेत्र में एक इमारत के अग्रभाग पर भित्ति चित्र। साभारः विटोरिया गोंजालेज, 2017

पारिस्थितिकी नारीवादी (इकोफेमिनिस्ट), महिलाओं की अधीनता और प्रकृति के प्रभुत्व के बीच ऐतिहासिक, भौतिक और वैचारिक संबंधों की व्याख्या करते हैं। एक विकसित आंदोलन के सदस्यों के रूप में, वे नारीवादी, औपनिवेशिक और पर्यावरणीय नैतिकता सहित राजनीतिक सिद्धांत के एक विविध निकाय की बात करते हैं। वे इस बात की जाँच का आग्रह करते हैं कि बुनियादी अवधारणाएं कैसे पारम्परिक यौन–लिंग मान्यताओं में जड़ी हुई हैं और उनसे भ्रष्ट होती हैं। 1960 के दशक में अपनी शुरुआत से, इकोफेमिनिस्ट सिद्धांत जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष कार्रवाई से प्रेरित था। 1970 और 80 के दशक के परमाणु विरोधी और शांति आंदोलनों के साथ–साथ और पर्यावरणीय क्षरण पर बढ़ती सार्वजनिक चिंता के बीच इकोफेमिनिज्म तेजी से बढ़ा। इन महिला कार्यकर्ताओं को वहां देखा जा सकता हैं जहां जीवन के सामाजिक और पारिस्थितिक पुनरुत्पादन को खतरा होता हैः चाहे वह जहरीले अपशिष्ट, नस्ल हिंसा, देखभाल श्रमिकों का शोषण, जैव विविधता का नुकसान, वनों की कटाई, कमोडिटाइज्ड बीज, या ''विकास'' के लिए पैतृक भूमि पर कब्जे के रूप में हो। ।

इकोफेमिनिस्टों का दावा है कि ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से मानव मुक्ति सभी ''अन्य'' प्राणियों की मुक्ति के बिना हासिल नहीं की जा सकती है। वे देखते हैं कि कैसे वैश्विक उत्तर में महिलाएं और वैश्विक दक्षिण में किसान और स्वदेशी लोग एक प्रामाणिक राजनीतिक आवाज में गठबंधन कर सकते हैं। कारण यह है कि ये सामाजिक समूह मानव और गैर–मानव जीवन की देखभाल करने में कुशल हैं। एक राजनीति के रूप में, इकोफेमिनिज्म इसीलिए अद्भुत है और केवल नारीवाद, मार्क्सवाद या पारिस्थितिकी की एक शाखा नहीं है। विचारों के क्रॉस– फर्टिलाइजेशन के बावजूद, इकोफेमिनिज्म सामाजिक समानता के बारे में नारीवादी चिंताओं को पर्यावरणीय न्याय और अखंडता से जोड़कर पुनः व्यक्त करता है।

> आत्मार्थक स्व–जागरूकता की पेशकश करने वाली एक पुनर्निर्माण क्रांति

इकोफेमिनिज्म को कभी–कभी ''समस्त जीवन'' की परस्पर–सम्बद्धता पर प्राचीन ज्ञान के पुनरुद्धार के रूप में देखा जाता है। इसका एक उदाहरण भारत की चिपको महिलाएं होंगी, जिन्होंने सदियों पहले पेड़ों के चारों ओर अपनी बाहों को लपेटकर जंगलों को कटने से से बचाया था। हालांकि, वास्तविक शब्द इकोफेमिनिज्म को

>>

फ्रांसीसी नारीवादी फ्रेंकोइस डी'एउबोन की 1974 की इकोस्फीयर को बचाने के लिए एक क्रांति के लिए अपील से जोड़ा जाता है: जिसका उद्देश्य मनुष्यों और प्रकृति के मध्य, और उसके साथ ही पुरुषों और महिलाओं के मध्य भी संबंधों का पूर्ण पुनर्निर्माण था। यूरोपीय वैज्ञानिक क्रांति के अग्रणी सिद्धांतकार कैरोलिन मर्चेंट के ऐतिहासिक विश्लेषण, द डेथ ऑफ नेचर ने संस्थागत विच हंट के माध्यम से शिकार महिलाओं की प्रजनन संप्रभुता पर स्वामित्व रखने के लिए आधुनिकता के पिताओं के दृढ़ संकल्पों का खुलासा किया। जड़ी–बूटी विशेषज्ञों और दाइयों के विशेष ज्ञान को "चिकित्सा के पेशे" द्वारा प्रतिस्थापित किया गया, जो प्रकृति और शरीर को "मशीनों" के रूप में प्रस्तुत करता था। इसने महिलाओं की देखभाल करने वाले श्रम में निहित एहतियाती सिद्धांत को समाप्त कर दिया, साथ ही इसने पुरुषों की तर्कसंगत श्रेष्ठता और "अन्य" जैसे "अनियंत्रित" महिलाओं और "अराजक" प्रकृति पर नियंत्रण के एक प्राचीन द्वैतवादी पद्धति को मजबूत किया।

इस आरोपित पितृसत्तात्मक विचार कि महिलाएं या मूल निवासी 'अनिवार्य रूप से प्रकृति के निकट' हैं और इस तरह वे हीन हैं को देखते हुए मुख्यधारायी उदारवादी आधुनिकतावादियों ने अक्सर इकोफेमिनिस्ट की आलोचना को उलट कर पढ़ा है। वास्तव में, इकोफेमिनिस्ट "प्रकृति पर पुरुष" द्वैतवाद से उपजी पुरानी वर्चस्ववादी मानसिकता का पुनर्निर्माण करते हैं, जिससे पता चलता है कि सेक्स–लिंग, जातीय और वर्ग विशेषाधिकार वाले लोगों द्वारा कैसे इनका उपयोग "अन्यता" द्वारा अपने सामाजिक प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए किया जाता है। इस तरह से समझा जा सकता है कि, कैसे वे स्वयं मौजूदा शक्ति संबंधों द्वारा सेवित हैं, के बारे में इकोफेमिनिस्ट दृष्टिकोण किसी व्यक्ति की आत्मार्थक स्व–जागरूकता को गहरा करने में मदद कर सकता है।

> महिलाओं के कार्य, पारिस्थितिक ज्ञान और भौतिकवादी आलोचना

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाएं, मजदूरी के 10 फीसदी के लिए सभी कार्यों का 65 फीसदी करती हैं, जबकि वैश्विक दक्षिण में, महिलाएं सभी भोजन का 60 फीसदी से 80 फीसदी उत्पादन करती हैं। औपनिवेशिक अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में शोध के बाद, मारिया मीज और उनके जर्मन बिएलफेल्ड स्कूल सहयोगियों ने जीवन के उत्पादकों और प्रावधानकर्ताओं के रूप में महिलाओं और किसानों के पारिस्थितिक ज्ञान को मान्य करते हुए "निर्वाह परिप्रेक्ष्य" का प्रस्ताव दिया।[1] 1980 के दशक के बाद से, इस आर्थिक तर्क ने विकास–पश्च राजनीति के रूप में इकोफेमिनिज्म को गतिमान किया है, जो लैटिन अमेरिकी स्वदेशी ब्यूनविविर या "अच्छे जीवन" विश्वदृष्टि जैसे समकालीन विकल्पों, और हाल ही में डी–ग्रोथ और एकजुट अर्थव्यवस्थाओं पर केंद्रित यूरोपीय ध्यान की उम्मीद करता है। वंदना शिवा का यह वर्णन कि कैसे बीसवीं शताब्दी की हरित क्रांति प्रौद्योगिकियों की शुरुआत के बाद, भारतीय महिला किसानों द्वारा हासिल की गई सामुदायिक खाद्य संप्रभुता खो गई थी ने "कुविकास" का खुलासा किया है।

जैसे–जैसे वित्तीय और तकनीकी सुधार पारिस्थितिक संकट को गहरा कर रहे हैं, इकोफेमिनिस्ट, पूंजीवादी हरण के जटिल वर्ग, जातीय और सेक्स–लिंगीय चरित्र को उजागर करते हैं। श्रम पर आधारित भौतिकवादी राजनीति होने के नाते, यह गैर–आवश्यकवादी हैय यह समृद्ध औद्योगिक वैश्विक उत्तर में अतिउपभोग और वैश्विक दक्षिण में इसके "टेप्स एंड सिंक्स" के मध्य संबंधों को जोड़ता है। चूँकि वे पूंजीवादी पितृसत्तात्मक उत्पादकतावाद की परिधि ही है जो स्वदेशी समुदायों के लिए पारिस्थितिक ऋण के रूप में, और जीवित महिलाओं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सन्निहित ऋण के रूप में इसके प्रदूषणकारी परिणामों को वहन करती है। एरियल साल्लेह, मैरी मेलोर, इवा चर्कीविक्ज, एना इस्ला, और अन्य, जैसे भौतिकवादी इकोफेमिनिस्ट निर्वाह और पर्यावरण–पर्याप्तता को आपस में जोड़ते हैं।[2] न्यूनीकरणवादी अर्थशास्त्र की उनकी संरचनात्मक आलोचनाएं, घरों और खेतों में पुनरुत्पादन कार्यों और साथ ही उन प्राकृतिक चक्रों की जिन पर पूंजीवाद निर्भर करता है, पर आँख मूंदने की ओर इशारा करती है।

> पर्यावरण संकटों के लिए एक इकोफेमिनिस्ट मेटा–औद्योगिक प्रतिक्रिया

इकोफेमिनिस्टों का तर्क है कि इस प्रकार का पुनरुत्पादक श्रम संचय के प्रोत्साहक के रूप में उत्पादन ओर विनिमय मूल्य के पूंजीवादी ओर मार्क्सवादी मूल्यवर्धन के विपरीत प्राथमिक है। सल्लेह, अनकहे पुनरुत्पादक श्रमिकों– यथा महिलाओं, किसानों और स्वदेशिओं – को दुनिया भर में बहुमत वाले "मेटा–औद्योगिक वर्ग" के रूप में मानते हैं, जिनके कौशल एक "सन्निहित भौतिकवादी" ज्ञान मीमांसा और नैतिकता को व्यक्त करते हैं। प्रकृति के शिखर पर उनके पुनर्योजी प्रावधान पर्यावरणीय संकट के लिए एक तैयार राजनीतिक और भौतिक प्रतिक्रिया हैं। ऐसे श्रमिक दुनिया भर में एक विशाल, अभी तक अदृश्य प्रतीत होने वाले, गैर–अलग–थलग काम के पैचवर्क में मौजूद हैं, जो मानवता–प्रकृति संबंधों के जटिल जाल में जीवन को बनाए रखते हैं। मेटा–औद्योगिक श्रम पारिस्थितिक चक्रों को सकारात्मक शुद्ध "चयापचय मूल्य" से पोषित करता है। जाहिर है, इकोफेमिनिज्म पारंपरिक मार्क्सवादी वर्ग विश्लेषण के फोकस का विस्तार करता है। और वास्तव में, पुनरुत्पादक श्रम के माध्यम से पूंजीवादी हरण के "प्राकृतिक" आधार का इसका सिद्धांत,वामपंथी अकादमिक से लिया जा रहा है। हालांकि, हमेशा एक जोखिम होता है कि महिलाओं के सिद्धांतों को मौजूदा पितृसत्तात्मक मेटा–कथानकों में पुनः पैक किया जा सकता है ।

> केंद्राभिमुख सांप्रदायिक मुक्ति और देखभाल

एक इकोफेमिनिस्ट राजनीति का उद्देश्य साझाकरण के आधार पर पुनर्योजी एकजुटता अर्थव्यवस्थाओं के माध्यम से मानव मुक्ति को बढ़ावा देना है। यह समरूपता से पहले जटिलता, प्रतिस्पर्धा से पहले सहयोग, संपत्ति से पहले सर्वसाधारण और विनिमय मूल्य से पहले उपयोग मूल्य को रखता है। यह मुक्तिवादी राजनीति पारिस्थितिकी, नारीवाद, मार्क्सवाद और जीवन–केंद्रित स्वदेशी नैतिकता जैसे भारत में स्वराज और उबंटू के अफ्रीकी लोकाचार के बीच अभिसरण को स्पष्ट करने की अपनी क्षमता के लिए मान्यता प्राप्त कर रही है। यह जो विश्लेषण प्रदान करता है वह सभी पोस्ट–डेवलपमेंट विकल्पों के लिए एक प्रणालीगत समाजशास्त्रीय आधार प्रदान करता है जो समानता और जीवन जीने के स्थायी तरीकों दोनों की तलाश करते हैं। इकोफेमिनिस्ट सभी जीवन रूपों की विविधता की देखभाल के आधार पर एक विश्व–दृष्टिकोण के लिए तर्क देते हैं। ■

सभी पत्राचार क्रिसटेल टेरब्लैंच को <terreblanche.christelle@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. Mies, Maria and Shiva, Vandana (1993) *Ecofeminism*. London: Zed Books.
2. Salleh, Ariel (Ed.) (2009) *Eco-Sufficiency and Global Justice: Women Write Political Ecology*. London: Pluto Press

> प्रकृति अधिकार और पृथ्वी न्यायशास्त्र

कॉर्मैक कुलिनन, पर्यावरण वकील, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

पचमामा (कागज पर चीनी स्याही)।
साभारः लुइसा एकौआन लोरेंत्ज, 2019

अधिकांश समकालीन सभ्यताओं को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को अधिकतम करने के लिए संगठित किया जाता है जो पर्यावरण का पदावन करते हैं और जलवायु परिवर्तन में योगदान करते हैं। इक्कीसवीं सदी के दौरान ऐसी सभ्यताओं के पतन की संभावना है जब तक कि उन्हें उन पारिस्थितिक समुदायों की अखंडता और जीवन शक्ति को बढ़ाकर मानव कल्याण को बढ़ावा देने के लिए पुनः उन्मुख नहीं किया जाता, जिसके भीतर वे अंतर्निहित हैं। प्रकृति अधिकारों, जिन्हें धरती माता के अधिकारों के रूप में भी जाना जाता है, के पक्षकारों का तर्क है कि इस संक्रमण को प्राप्त करने के लिए, कानूनी प्रणालियों को यह पहचानना चाहिए कि प्रकृति के सभी पहलू, कानूनी विषय हैं जिनके पास अंतर्निहित अधिकार हैं, और उन अधिकारों को बनाए रखना चाहिए। प्रकृति अधिकारों की कानूनी मान्यता दोनों मानव अधिकारों को प्रकृति अधिकारों की प्रजाति–विशिष्ट अभिव्यक्ति के रूप में संदर्भित करती है, क्योंकि लोग प्रकृति का हिस्सा हैं, और प्रकृति के अधिकारों का सम्मान करने के लिए मनुष्यों और न्यायिक व्यक्तियों के लिए कर्तव्यों का निर्माण करते हैं।

प्रकृति अधिकारों की कानूनी मान्यता, पृथ्वी न्यायशास्त्र और मानव समाजों को नियंत्रित करने के लिए अन्य पारिस्थितिक दृष्टिकोणों के बारे में व्यापक सम्भाषण का एक पहलू है। पृथ्वी न्यायशास्त्र कानून और शासन का एक दर्शन है जिसका उद्देश्य लोगों को इसके शोषण व अवनति को वैध और सुविधाजनक बनाने के बजाय पृथ्वी समुदाय के भीतर सामंजस्यपूर्ण रूप से सह–अस्तित्व के लिए मार्गदर्शन करना है। मानव अधिकारों की तरह, प्रकृति के अधिकारों को अंतर्निहित और अपरिहार्य माना जाता है, और अधिकार धारक के अस्तित्व से उत्पन्न होते हैं । इसका मतलब यह है कि लोगों सहित, प्रकृति के हर प्राणी या पहलू को, कम से कम, अस्तित्व का अधिकार, भौतिक स्थान पर कब्जा करने का अधिकार, और अन्य प्राणियों के साथ इस तरह से सम्भाषण करने का अधिकार होना चाहिए जो इसे

> >

पारिस्थितिक और विकासवादी प्रक्रियाओं में अपनी अनूठी भूमिका को पूरा करने की अनुमति देता हो ।

> कानून में स्पष्ट किए गए प्रकृति के अधिकार कानून

प्रकृति अधिकारों की सबसे महत्वपूर्ण समकालीन अभिव्यक्ति इक्वाडोर का संविधान है, जिसे सितंबर 2008 में अपनाया गया था। बाद में, 22 अप्रैल, 2010 को कोचाबम्बा, बोलीविया में जलवायु परिवर्तन और धरती माता के अधिकारों पर पीपुल्स वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस द्वारा यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ द राइट्स ऑफ मदर अर्थ (यूडीआरएमई) घोषित किया गया था। इक्वाडोर का संविधान कहता हैः ''प्रकृति या पचामामा, जहां जीवन पुनः उत्पन्न होता है और मौजूद है, को अपने महत्वपूर्ण चक्रों, संरचना, कार्यों और विकासवादी प्रक्रियाओं को अस्तित्व में रखने, बनाए रखने और पुनर्जीवित करने का अधिकार है'' (अनुच्छेद 71)। संविधान यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति के अधिकारों की मान्यता का उद्देश्य एक ढांचा बनाना है जिसके भीतर नागरिक अपने अधिकारों का आनंद ले सकते हैं और प्रकृति के भीतर सामंजस्यपूर्ण सहवास के माध्यम से कल्याण प्राप्त करने के लिए अपनी जिम्मेदारियों का प्रयोग कर सकते हैं। इसके अलावा, यह एक ऐसा ढांचा होगा जिसमें राज्य और निजी व्यक्तियों दोनों को प्रकृति के अधिकारों का सम्मान करने और बनाए रखने की आवश्यकता होगी और यह राज्य को एक विकास मॉडल की गारंटी देने का आदेश देता है जो ऐसा करने के अनुरूप हो। न्यूजीलैंड कानून वांगानुई नदी और ते उरेवेरा क्षेत्र को अधिकारों के साथ कानूनी संस्थाओं के रूप में मान्यता देता है। भारत में अदालतों ने गंगा और यमुना नदियों, गंगोत्री और यमुनोत्री ग्लेशियरों, जहां से ये नदियाँ बहती हैं, और संबंधित जंगलों और जलमार्गों को अधिकारों के साथ कानूनी संस्थाओं के रूप में मान्यता दी है। कोलंबिया के संवैधानिक न्यायालय ने ''सुरक्षा, संरक्षण, रखरखाव और बहाली'' के अधिकार के साथ एक कानूनी इकाई के रूप में अट्राटो नदी बेसिन को मान्यता दी है।

> उपभोक्तावादी विश्वदृष्टि

आधुनिकता, पूंजीवाद और उपभोक्तावाद इस गहरे मानवकेंद्रित दृष्टिकोण से उत्पन्न होते हैं कि मनुष्य प्रकृति से अलग हैं और इसके नियमों को पार कर सकते हैं। यह मानव असाधारणता, पृथ्वी को संसाधनों के संग्रह के रूप में देखती है जो मानव संतुष्टि के उद्देश्य से मौजूद हैं। चूंकि संसाधनों को दुर्लभ समझा जाता है, इसलिए अधिक हिस्सेदारी हासिल करने के लिए दूसरों को पछाड़ना सर्वोपरि महत्व का समझा जाता है। यह विश्वदृष्टि आज की अधिकांश कानूनी प्रणालियों का आधार है। कानून, प्रकृति (मनुष्यों के अलावा) को ''संपत्ति'' के रूप में परिभाषित करता है और मालिक को इन ''परिसंपत्तियों'' के संबंध में व्यापक निर्णय लेने की शक्तियां प्रदान करता है और साथ ही उनसे लाभों पर एकाधिकार करने की शक्ति देता है। यह आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों के लिए आधार प्रदान करता है जो धन और शक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उन निर्णयों को वैध बनाते हैं जो पृथ्वी समुदाय और जीवन के सामूहिक हितों पर मनुष्यों के एक छोटे से अल्पसंख्यक के अल्पकालिक आर्थिक हितों को प्राथमिकता देते हैं।

> पर्यावरण–केंद्रित विश्वदृष्टि

दूसरी ओर, यह मान्यता कि प्रकृति के अधिकार हैं, एक पर्यावरण–केंद्रित विश्वदृष्टि पर आधारित है जो मनुष्यों को पृथ्वी के एक विशेष जीवन रूप या पहलू के रूप में देखती है जो पृथ्वी समुदाय के भीतर एक अद्वितीय, लेकिन प्रमुख भूमिका नहीं निभाता है। उदाहरण के लिए, न्क्त्क्म् की प्रस्तावना और पहला लेख पृथ्वी को परस्पर संबंधित प्राणियों के एक स्व–विनियमन, जीवित समुदाय के रूप में संदर्भित करता है जो सभी प्राणियों को बनाए रखता है और परिणामस्वरूप पूरे पृथ्वी समुदाय की अखंडता और स्वास्थ्य को बनाए रखने को प्राथमिकता देता है। प्रकृति अधिकारों के पैरोकार, विज्ञान की शाखाओं जैसे क्वांटम भौतिकी, जीव विज्ञान और पारिस्थितिकी के निष्कर्षों को इंगित करते हैं ताकि यह सबूत मिल सके कि ब्रह्मांड का हर पहलू आपस में जुड़ा हुआ है और व्यापक रूप से आयोजित मान्यताओं का खंडन करता है कि मनुष्य प्रकृति से अलग और श्रेष्ठ हैं। यह दृष्टिकोण प्राचीन ज्ञान और परंपराओं, और स्वदेशी लोगों के विश्वज्ञान से भी प्रेरणा पाता है, जो पृथ्वी को जीवन के पवित्र समुदाय के रूप में देखते है और जिसमे मनुष्यों को अन्य प्राणियों के साथ सम्मानजनक संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी न्यायशास्त्र और प्रकृति अधिकार मुख्यधारा के ''विकास'' सम्भाषण के हर पहलू और पूंजीवाद तथा पितृसत्ता के लिए एक मौलिक चुनौती पेश करते हैं। वे मानवता की भूमिका, मानव समाजों के मौलिक उद्देश्य और मानव कल्याण को बढ़ावा देने के तरीकों की एक अलग समझ प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, एक पर्यावरण–केंद्रित परिप्रेक्ष्य से, विकास को उस प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है जिससे एक व्यक्ति जीवन के समुदाय के साथ अंतर्संबंध या ''अंतर–अस्तित्व'' के माध्यम से अधिक गहराई, जटिलता, सहानुभूति और ज्ञान विकसित करता है। यह विकास के समकालीन अर्थ का विरोधी है, जिसमें जीडीपी बढ़ाने के लिए जटिल प्राकृतिक प्रणालियों का शोषण और अवनति शामिल है।

> एक नया आंदोलन और एक नया घोषणापत्र

2008 के बाद से, प्रकृति अधिकार और पृथ्वी न्यायशास्त्र दुनिया भर में सामाजिक आंदोलनों, पर्यावरण और सामाजिक न्याय कार्यकर्ताओं और स्वदेशी लोगों के सम्भाषणो का एक प्रमुख पहलू बन गया है। ये अवधारणाएं ''प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने'' के बारे में संयुक्त राष्ट्र के भीतर चर्चाओं का एक केंद्रीय विषय बन गई हैं, और कई ग्रीन और पर्यावरण–समाजवादी राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों में शामिल की गई हैं। प्रकृति अधिकार और पृथ्वी न्यायशास्त्र समकालीन पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याओं की गहरी जड़ों को संबोधित करते हैं। वे एक ऐसा घोषणापत्र प्रदान करते हैं जो जाति, वर्ग, राष्ट्रीयता और संस्कृति से परे हैय इस समझ पर आधारित हैं कि ब्रह्मांड कैसे कार्य करता है – यह एक ऐसी समझ है जो एंथ्रोपोसेंट्रिक, यंत्रवत और न्यूनीकरणवादी विश्वदृष्टि की तुलना में अधिक सटीक है। प्रकृति अधिकार एक वैश्विक अधिकार–आधारित आंदोलन के लिए एक आधार प्रदान करते हैं जो स्वीकार्य मानव व्यवहार के मानदंडों को बदल सकता है जैसा कि मानवाधिकारों के साथ हुआ है। इन शक्तियों का मतलब है कि यद्यपि प्रकृति अधिकार आंदोलन अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, इनका प्रभाव और अधिक तेजी से बढ़ने की संभावना है और इनमे गहरा वैश्विक प्रभाव होने की क्षमता है। ■

सभी पत्राचार कॉर्मैक कलिनन को <cormac@greencounsel.co.za> पर प्रेषित करें।

> महामारी के बाद की प्रवृत्तियाँ और आधुनिकता के चरण

जोस मौरिसियो डोमिंग्यूज, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ रियो डी जनेरियो, ब्राजील, और समाजशास्त्रीय सिद्धांत (आर सी 16) और ऐतिहासिक समाजशास्त्र (आर सी 56) पर आईएसए अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

वर्ष 2019–20 में दुनिया को प्रभावित करने वाले कोरोनावायरसः कोविड–19 महामारी ने राज्य और समाज के बीच की अभिव्यक्ति में एक बड़ा बदलाव किया। 2008 से, नवउदारवाद नियंत्रण में था। इस महामारी ने अचानक उसे सामने ला दिया जिसे शायद *आपातकालीन कीनेसियनवाद* कहा जा सकता है और सभी देशों को बचाए रखने के लिए सामाजिक नीति का विस्तार। कुछ महीने या कुछ दिन पहले जो अकल्पनीय था वह संभव हो गया: किए गए उपाय और अर्थव्यवस्था और सुरक्षा जाल में फेंके गए धन की मात्रा आश्चर्यजनक थी।स्थिति का सामना करने की अपनी सभी ''क्षमताओं '' के साथ राज्य की एक अद्भुत वापसी हुई।[1]

क्या हम एक युगांतरकारी परिवर्तन की बात कर सकते हैं, या यह केवल कम महत्व का परिवर्तन है जिसे हम देखते हैं? क्या यह परिवर्तन चलेगा? क्या यह नीति के अन्यथा स्थिर प्रक्षेपवक्र में विराम चिह्न का क्षण है?[2] निम्नलिखित में मैं आधुनिकता के चरणों की पूर्व चर्चा के साथ, अर्थव्यवस्था और सामाजिक नीतियों में राज्य के हस्तक्षेप के संबंध में एक उत्तर तैयार करूंगा। सख्ती से राजनीतिक व्यवस्था के संबंध में, समाज के कई हिस्सों में गहन परिवर्तनों की मांग के बावजूद निरंतरता बनी रहती है। उदार लोकतंत्र एक मिश्रित शासन है, और 1980 के दशक से (*उन्नत कुलीनतंत्र राजनीतिक व्यवस्था* की ओर) अधिक कुलीनतंत्र और कम लोकतंत्र की ओर रुझान, उलटा नहीं हुआ है। निगरानी में भी स्पष्ट वृद्धि हुई है। राजनेता मोटे तौर पर खुद से, अपनी शक्ति से और अमीरों से सम्बंधित रहते हैं, यद्यपि अधिक मजबूत सामाजिक नीतियों के लिए दबाव बढ़ रहा है। व्यक्तिवाद व्यापक है, और महामारी ने शायद अधिकांश रक्षात्मक और निजी–उन्मुख प्रवत्तियों को उकसाते हुए इसे बढ़ा दिया है, जैसे एक सदी पूर्व के ''स्पेनिश फ्लू'' के परिणाम स्वरुप सामाजिकता में तीव्रीकरण। यह निश्चित रूप से यह एक ऐसा मुद्दा है जो समाजशास्त्रीय विश्लेषण की प्रतीक्षा कर रहा है। मुझे यहां जो कहना है वह केवल आंशिक रूप से नवीकृत पार्टी–राज्य–कम–पूंजीवाद प्रणाली की दुनिया पर लागू होता है, जहां राज्य की उपस्थिति बहुत अधिक तीव्र है और एक अधिक सत्तावादी राजनीतिक व्यवस्था संचालित होती है। हालाँकि, सामाजिक नीतियों के संबंध में, सामाजिक उदारवाद की व्यापकता बहुत कुछ बताती है।

> आधुनिकता और उसके चरण

आधुनिकता– राजनीतिक आधुनिकता सहित– एक आकस्मिक विकासवादी छितराव है। हालाँकि इसने पहले से संकारणों के साथ अधिक वैश्विक विशेषताओं वाले विकसित सभ्यतागत तत्वों पर अधिक भरोसा किया है और इसकी प्रमुख ताकतों ने सत्तावादी सामूहिकता द्वारा प्रस्तुत अपेक्षाकृत अल्पकालिक चुनौतियों को हराया। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, यह तीन विशिष्ट चरणों में विकसित हुआ है (जैसा कि ऑफे, लैश और उरी, कैस्टेल्स, वैगनर, डोमिंग्यूज और अन्य के काम से दिखाया गया है)। पहला उदार और बाजार–उन्मुख था (या इसे एक कार्यक्रम के रूप में माना जाता था); यह उसी समय औपनिवेशिक था (हालांकि अमेरिका पहले से ही स्वतंत्र थे)। दूसरा दुनिया भर में राज्य–आधारित था। हालांकि उदारवादी आर्थिक और न्यायिक संरचना बनी रही, ''वास्तविक समाजवाद'' (अधिक उचित रूप से अधिनायकवादी सामूहिकता कहा जाता है) ने उदारवादी और बाजार के बुनियादी ढांचे को त्यागते हुए आधुनिकता से उधार लिए गए राज्य तत्वों को कट्टरपंथी बना दिया। फिर एक तीसरा चरण, अधिक जटिल, अधिक व्यक्तिवादी, नेटवर्क की अधिक उपस्थिति के साथ– प्रबलित बाजार और राज्य के साथ– और नवउदारवाद के तत्वावधान में आरम्भ हुआ।

क्या हम, महामारी के बाद की दुनिया में, एक नए चरण के उद्भव के साक्षी हैं, या यह केवल एक मोड़ है जो तीसरे चरण के भीतर आया है? पार्टी–राज्य डोमेन के बाहर, नवउदारवाद हाल तक शहर में प्रमुख था (और इसके समर्थक इसके प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं)। हालाँकि, हम यह मान सकते हैं कि नवउदारवाद के साथ आधुनिकता के तीसरे चरण का जुड़ाव, चाहे वह दुनिया पर कितनी भी गहरी छाप छोड़े, चाहे कुछ भी हो, केवल आकस्मिक था ।

> राज्य, अर्थव्यवस्था और सामाजिक नीति

महामारी से पहले ही, नवउदारवाद को अर्थव्यवस्था से निपटने के लिए बहुत सीमित रूप में देखा गया था; अधिक या कम स्पष्ट रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से, सरकारें पहले से ही अपने कुछ सिद्धांतों से दूर जा रही थीं, और अब शक्तिशाली एजेंट समस्या के बारे में अधिक जागरूक प्रतीत होते हैं। परिवर्तन को लागू करना अधिक जटिल रहा है, हालांकि, विसंगतियों, प्रतिरोध और अस्पष्टता के कारण ये अक्सर हाल के घटनाक्रमों की विशेषता रहे हैं। यद्यपि मैं इस मुद्दे को यहां विकसित नहीं कर सकता, चीन और पश्चिमी देशों के बीच भू–राजनीति और प्रतिस्पर्धा भी वर्तमान परिवर्तनों की पृष्ठभूमि के रूप में दिखाई दे रही है। चीन लंबे समय से अब नवउदारवाद और मजबूत राज्य हस्तक्षेप के जटिल मिश्रण का उपयोग कर रहा है।

>>

''क्या हम एक युगीय परिवर्तन की बात कर सकते हैं? या फिर यह कम महत्व वाले परिवर्तन हैं जिन्हे हम देखते हैं? क्या ये परिवर्तन बने रहेंगे?''

यूरोपीय संघ का उदहारण ले लें। हम भविष्य के तीन संभावित परिदृश्यों को देख सकते हैंः एक रूढ़िवादी (हमेशा की तरह); एक कुछ अराजक और संघर्षवादी; और एक परिवर्तनकारी, जिसमें कराधान में परिवर्तन के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन (विशेष रूप से ऊर्जा संक्रमण के माध्यम से), डिजिटलीकरण और सामाजिक नीति में सुधार की चुनौतियों का सामना करने के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। बाजार से उधार लिए धन के साझा कोष के साथ द नेक्स्ट जनरेशन इयू प्रोजेक्ट ''यूरोपीय राज्य'' को मजबूत बनाते हुए इयू को इन संभावनाओं में से तीसरे की ओर ले जाता है जो ताकतवर देशों के भी कार्य आसान कर सकते सकता है (उन्हें मिश्रित करके जैसे, 2030 तक प्रोद्योगिक नवीनीकरण करने के उद्देश्य से फ्रांस की पुनः स्थापित योजना को 40 फीसदी तक वित्त पोषित करना)। कराधान के सम्बन्ध में, निगमों पर 15 फीसदी वैश्विक समान कर दर के आलावा, कर मुक्त योजनाओं ओर सामान्य रूप से कर चोरी से बचने के लिए, ज्यादा विमर्श नहीं हुआ है (सिवाय संयुक्त राज्य के जहाँ अमीरों पर कर घटाया है)। बहरहाल, निगमों पर एक वैश्विक कर की दर, जिस पर विशेषज्ञों और राजनेताओं ने महामारी फैलने के समय कुछ देर चर्चा की, अभी भी सीमित हो सकती है, जैसा कि आलोचकों का तर्क है, लेकिन यह अभूतपूर्व है। क्या इसकी ताकत बढ़ेगी, यह तर्कपूर्ण है (उदाहरण के लिए, जर्मनी में, आगे के ऋण को रोकने वाले संवैधानिक अनुच्छेद का सम्मान करने से बचने के लिए, बिना किसी प्रयोजन के, रणनीतियाँ अपनायी गई हैं), लेकिन इस दिशा में एक आंदोलन आगे बढ़ने की संभावना है। बहरहाल, राजनीतिक व्यवस्था इन नियामक परिवर्तनों की मध्यस्थता करेगी। अमेरिका में, अगस्त 2022 में भयंकर तकरार के बाद, मुद्रास्फीति से निपटने के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की 740 बिलियन–डॉलर की परियोजना, नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा जीवाश्म ईंधन के प्रतिस्थापन के लिए जोर, और दवाई की लागत को कम करने की अंतिम स्वीकृति, हालांकि वामपंथियों की अपेक्षा से कहीं अधिक कम, एक सफलता थी।

विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय आर्थिक ढांचे के नवीनीकरण को वित्त पोषित करने के प्रस्ताव हैं, विशेष रूप से डिजिटलीकरण के संदर्भ में, लेकिन साथ ही अधिक सामान्य चीजें जैसे पुल ओर सड़क और अमेरिका और यूरोप दोनों में चल रहे जलवायु परिवर्तन को कम करने में सक्षम ऊर्जा स्रोतों में संक्रमण की अनुमति। माइक्रोचिप के विशिष्ट होने के साथ, सामरिक, विशेष रूप से उच्च–प्रौद्योगिकीय क्षेत्र सबसे पहले खतरे में हैंय राज्य के भीतर बहुत अधिक धन ओर नए जीव ऐसे लक्ष्यों और नवाचारी उत्पादों के राज्य द्वारा खरीद को प्रोत्साहित करेंगे (ऐसी रणनीति की उपादेयता इस बात से जुडी थी कि कोरोना वायरस के टीके राज्य द्वारा कैसे समर्थित थे)। औद्योगिक नीति वापसी कर रही हैः हालांकि यह उदार–पूंजीवादी देशों में अपने उत्कर्ष से बहुत अलग है (यानि कि अधिक ''सांकेतिक'')। यह बीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही और इक्कीसवीं के प्रारम्भ की तुलना में कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है। कुछ योजना की वापसी की बात करते हैं, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संक्रमण के संबंध में। किसी भी घटना में, कुल मिलाकर बजटीय सीमाएँ बहुत नरम हो गई हैं –जबकि खर्च लोचदार हो गया है, जिसमें कई बेल–आउट ऑपरेशन भी शामिल हैं।

व्यापार और वित्तीय विनियमन में, एक वास्तविक परिवर्तन हो रहा है। दशकों तक, इस धारणा के साथ कि वे आत्म–पराजित हो गई थीं, अविश्वास नीतियों को महत्व नहीं दिया गया। रीगन सरकार के बाद से, उन्हें उपभोक्ता कल्याण से संबंधित माना जाता था। इसलिए डंपिंग, अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराने के लिए कीमतों में कमी, जैसे को एक समस्या के रूप में नहीं देखा गया था। लक्ष्य उद्देश्य प्रतियोगिता की रक्षा करना था, न कि विशिष्ट प्रतिस्पर्धियों की। इसलिए विशाल अल्पाधिकारों का निर्माण करने वाले विलय और संलयन हस्तक्षेप के योग्य नहीं थे। अविश्वास नीतियों के अधिक व्यापक और विस्तृत होने के साथ इसे पूरी तरह संशोधित किया जा रहा है। इसके अलावा, विनियामक योजना एक विशिष्ट और अधिक सीमित अमेरिकी संस्थागत दृष्टिकोण से उपभोक्ताओं के लिए बाजार सेवाओं से निपटने के लिए विस्तारित हुई है, विशेष रूप से, सामाजिक नीति और अन्य गतिविधियों को शामिल करने के लिए बुनियादी एकाधिकार–जैसी सार्वजनिक वस्तुएं (टेलीफोन और पोस्ट, पानी और सीवेज, या ट्रेन और विमानन)।

फिर भी, सामाजिक नीति के संबंध में, हम ऐसा ही अधिक पाते हैं। दो–परतीय नीति– एक, संपन्न लोगों के लिए बाजार आधारितय दूसरी, निर्धन के लिए राज्य–प्रावधान– के साथ सामाजिक उदारवाद सामान्य ज्ञान बन गया है। अभी तक, लगातार बढ़ते हुए सामाजिक उदारवाद की स्थिरता को हिलाते हुए, सामाजिक नीति के उद्विकास में कोई विराम चिन्ह मजबूती से सामने नहीं आया है। जहाँ स्वास्थ्य सेवा अधिक सार्वभौमिक हो सकती है, अधिक सामान्य शब्दों में, पहली बार एक वैश्वीकृत, सामाजिक उदार प्रतिक्रिया उभरती हुई प्रतीत होती है। जहाँ पहले विशेष रूप से वैश्विक व्यवस्था के केंद्र (साथ ही कुछ सत्तावादी सामूहिकवादी देशों) और परिधि के बीच महत्वपूर्ण अंतर हुआ करते थे, पहला अधिक पुष्ट और सार्वभौमिक झुकाव वाली नीतियों के साथ वर्तमान में वैश्विक स्तर पर निर्विवाद रूप से सामाजिक उदारवाद को मजबूती से मिली हुई है। यह निर्धनता पर ध्यान देता है (समता पर न कि समानता)। व्यापक सामाजिक असंतोष के बावजूद, किसी भी संगठित ताकत ने पर्याप्त ताकत नहीं दिखाई है, या यहां तक कि वास्तव में कोशिश भी नहीं की है, ताकि सामाजिक नीति को सार्वभौमिकता और पूर्ण सामाजिक नागरिकता की ओर मोड़ा जा सके।

जो स्पष्ट रूप से प्रबल होने के लिए निर्धारित है वह नकद हस्तांतरण योजनाएं हैं। ऐसे सभी देशों में, लेकिन अन्य जगहों में भी, पाई निर्धनता से मुकाबला या राजनैतिक रूप से प्रबंधन लैटिन अमेरिकी न्यूनतम अनुदान और लक्ष्यीकरण[3] के अनुसार हो सकता है– या अपने वर्कफेयर तर्काधार के साथ अत्यंत नीच जर्मन *आर्बेइट्सलोसेन्गेल्ड* II (*Hartz IV* के रूप में जाना जाता है) का अनुसरण करते हुए। वे एक तेजी से समृद्ध और असमान दुनिया में एक दिखावा हैं। यह सच है कि ईसाई डेमोक्रेट्स (मेलोनी सरकार द्वारा हाल ही में अधिक कुत्सित बनाया गया *इतालवी रेड्डीटो दे सित्तादिनांजा* को देखें) के दृढ़ प्रतिरोध के बावजूद, योग्य बेरोजगारों के लिए थोड़े धन और अधिक उदार सार्वभौमिक प्रावधानों के मध्य नया बेहतर जर्मन बर्जरगेल्ड अंततः नए सामाजिक–लोकतान्त्रिक मार्गों का संकेत दे सकता है। बहरहाल, अभी जैसी स्थिति है, परिवर्तन सीमित रहेगा।

>>

> भविष्य

केवल समय ही बताएगाः यह संभव है कि विवेक और ज्ञान देर से ही आये। लेकिन हम कम से कम कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियों को उजागर कर सकते हैं जो पिछले कुछ वर्षों में प्रकट हुई हैं और संभवतः तीव्र होंगी। बेशक, यह सब विचारों और कार्यक्रमों, विशेष रूप से राजनीतिक संघर्षों, के खुलने पर निर्भर करता है, जिनके परिणाम, हालांकि, लगातार एक दिशा में इशारा करते प्रतीत होते हैं। इस प्रकार घटनाक्रम दुनिया भर में अब तक असमान रहे हैं।

हम आशा कर सकते हैं कि मानव इतिहास में परिवर्तन एक अधिक उदार, हरित और एकजुट युग का परिचय देगा। तथापि यह असंभव प्रतीत होता है; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आधुनिकता का एक नया चरण, या तीसरे के भीतर एक परिवर्तन, उभर नहीं रहा है। हालाँकि, इसकी अंतिम दिशा अभी भी अनिश्चित है। ■

सभी पत्राचार जोस मौरिसियो डोमिंग्यूज को
<jmdomingues@iesp.uerj.br> पर प्रेषित करें।

1. Domingues, José Maurício (2020), “From global risk to global threat: State capabilities and modernity in times of coronavirus”, *Current Sociology*, 70(1), 6-23.

2. Baumgartner, Frank and Jones, Bryan (2009) *Agendas and Instability in American Politics*. Chicago: Chicago University Press.

3. Domingues, José Maurício (2019) “Social liberalism and global domination”. In: Heriberto Cairo and Breno Bringel (Eds.) *Critical Geopolitics and Regional (Re) Configurations: Interregionalism and Transnationalism between Latin America and Europe*. London: Routledge, 49-62.

> सामाजिक विज्ञानों को (पुनः) खोलना: खुले विज्ञान की चुनौतियां

फर्नांडा बेइगेल, यूनिवर्सिड नेशनल डी कुयो और CONICET, अर्जेंटीना, और समाजशास्त्र के इतिहास पर आईएसए अनुसंधान समिति की संचालन समिति के सदस्य (आरसी 08) द्वारा

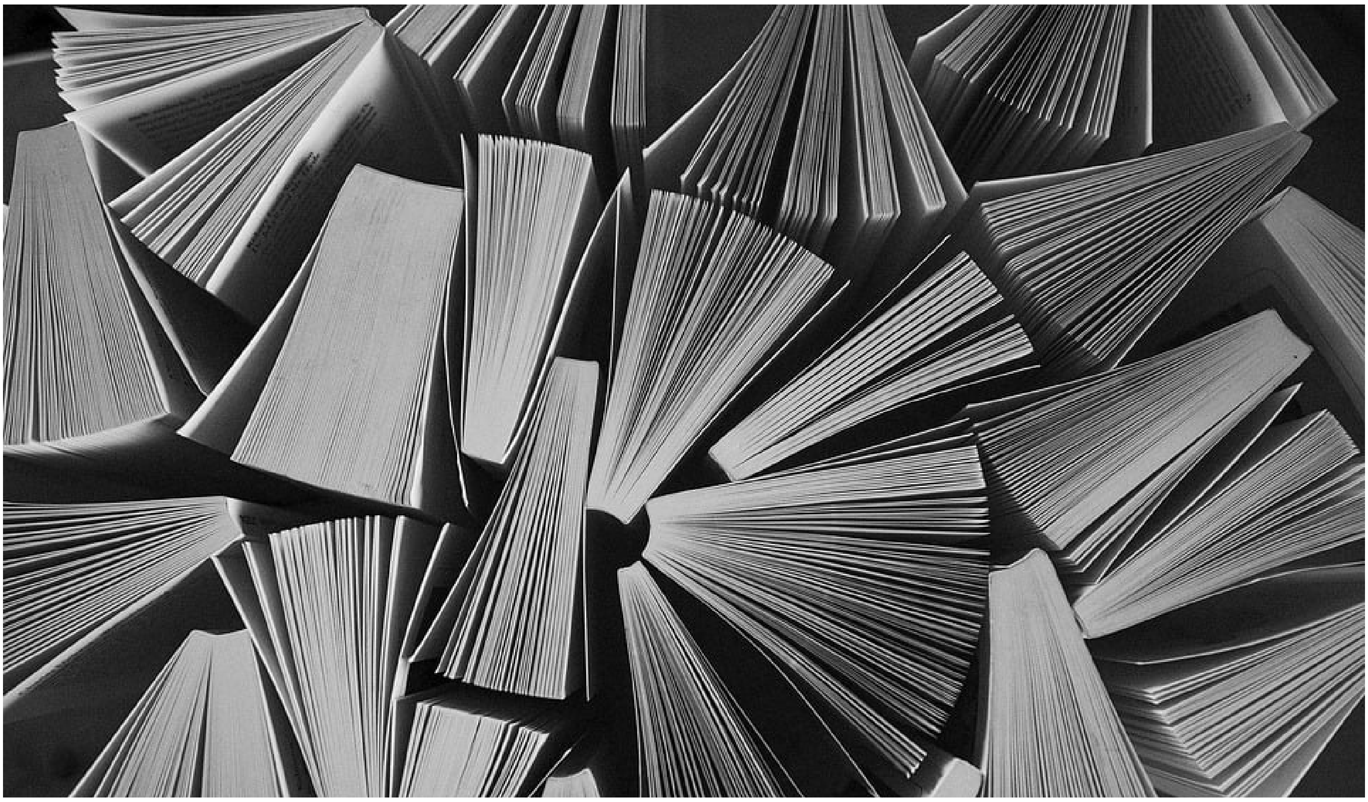

साभार: पिक्साबे

सन् 1996 में, आईएसए के पूर्व अध्यक्ष इम्मानुएल वालरस्टीन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से प्रसिद्ध गुलबेंकियन आयोग की रिपोर्ट में सामाजिक विज्ञान का पुनर्गठन करने का आह्वान किया। रिपोर्ट ने उन्नीसवीं शताब्दी में इन विषयों के विकास पर सवाल उठाया, जब उन्होंने यूरोपीय औपनिवेशिक राज्यों के विकास के साथ, अपने विशेष अनुभवों और टिप्पणियों को एक कथित सार्वभौमिक सैद्धांतिक निर्माण में बदल दिया। इन विषयों के समेकन और संस्थागतकरण के लिए उनमें से प्रत्येक को विशिष्ट पद्धतियों की आवश्यकता थी, और इसने सामाजिक के विश्लेषण को अलग करने वाले विभाजनों को मजबूत किया। "ओपन द सोशल साइंसेज" नारे के तहत, रिपोर्ट ने यूरोसेंट्रिज्म को छोड़ने और बहुभाषावाद, अंतःविषयता, अनुसंधान प्रक्रियाओं की पारदर्शिता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता की पहचान की।

हाल ही में, यूनेस्को ने इसकी "रिकमेन्डेशन ऑन ओपन साइंस" को अपनाया, जो समान चिंताओं पर आधारित है और इसका उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान के परिणामों (प्रकाशनों के लिए खुली पहुंच के माध्यम से) और प्रक्रिया (डेटा तक खुली पहुंच के द्वारा) को खोलना है। ओपन साइंस में सभी वैज्ञानिक विषयों और शैक्षणिक प्रथाओं के सभी पहलुओं को बुनियादी किया गया है, जिसमें बुनियादी और प्रयुक्त विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी सम्मिलित हैं। यह पारंपरिक विज्ञान के लिए विभिन्न ज्ञान प्रणालियों के लिए खुला होने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों के साथ सक्रिय सहयोग और समाज (नागरिक विज्ञान) से संबंधित समस्याओं के साथ सक्रिय जुड़ाव की भी सिफारिश करता है।

एक प्रकाशन से दूसरे के बीच 25 वर्षों के मध्य, इन दो वैश्विक परियोजनाओं के मध्य मुख्य अंतर खुले विज्ञान के डिजिटल चरित्र और सहयोगी बुनियादी ढांचे के माध्यम से अनुसंधान प्रक्रिया के खुलेपन (खुले डेटा, खुला मूल्यांकन) पर जोर देने में निहित है। दूसरी ओर, जो इन दो परियोजनाओं को एकजुट

>>

करता है, वह है संरचनात्मक असमानताओं के लिए चिंता जो ज्ञान परिसंचरण की प्रक्रिया को प्रभावित और साथ ही ज्ञान मीमांसात्मक विविधता और बहुभाषावाद सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

> सामाजिक विज्ञान डेटा के खुलेपन की रक्षा करना

अपनी ज्ञान मीमांसात्मक विशेषताओं, अध्ययन किए जाने वाले विषयों के साथ उनके संबंधों और जांच के तरीकों के कारण, सामाजिक विज्ञान और मानविकी, ओपन साइंसेज प्रोजेक्ट के लिए विशिष्ट चुनौतियां पेश करते हैं। उनकी शोध प्रक्रियाओं और एकत्र किए गए डेटा का अंधाधुंध खुलापन व्यक्तियों की गोपनीयता को प्रभावित करता है और सबाल्टर्न समुदायों को खतरे में डाल सकता है। हालांकि, नैतिक संहिता "हेबियस डेटा" मानदंड और व्यक्तिगत डेटा के उपयोग पर राष्ट्रीय कानून इन पहलुओं की सुरक्षा के लिए पर्याप्त ढांचा प्रदान करते हैं, यही कारण है कि सामाजिक विज्ञान और मानविकी में अनुसंधान डेटा साझा करने के प्रतिरोध पर चिंतन करना आवश्यक है।

टीम वर्क के कम आदी वाले विषयों में, इस प्रतिरोध का अधिकांश हिस्सा काम पर बौद्धिक संपदा अधिकारों को खोने या अकादमिक या सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों में व्यक्तिगत उपलब्धियों के लाभ को कम करने के डर से प्रेरित है। जैसा कि "ठोस" विज्ञानों में भी होता है, विज्ञान के सामाजिक मूल्य की घोषणात्मक मान्यता है, लेकिन यह स्वीकार करने में कठिनाई है कि सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित अनुसंधान सर्व–सामान्य के लिए अच्छा है। प्रत्यक्ष निहितार्थ यह है कि ज्ञान संचयी है, और हमें विभिन्न शोध टीमों से बार–बार एक ही जानकारी एकत्र करने से बचना चाहिए। इस क्षेत्र में, अनुसंधान की अनुभवजन्य कमजोरियों की अंतरंग पहचान से संबंधित कुछ अलग–थलग प्रतिरोध भी है जो सबूतों की खुली जांच के लिए खड़े नहीं होते है ।

वैज्ञानिक समुदाय के लिए डेटा को खुले तौर पर उपलब्ध कराने और सहयोगी बुनियादी ढांचे पैदा करने के मुख्य लाभों में से एक यह है कि ये प्लेटफॉर्म इंटरऑपरेबल हैं और उन लोगों, उनके संस्थानों, परियोजनाओं और ओपन एक्सेस आउटपुट के बारे में जानकारी के एकीकरण की अनुमति देते हैं जिन्होंने प्रत्येक डिजिटल वस्तु, का उत्पादन किया था। संस्थागत रिपॉजिटरी डिजिटल वस्तुओं के क्यूरेशन में एक अहम् भूमिका निभाती है। यह उम्मीद की जाती है कि विभिन्न प्रकार के डेटासेट और वैज्ञानिक उत्पादों को विद्वानों द्वारा मूल्यांकन, जो उन्हें गुणवत्ता की मुहर देता है, के साथ जमा किया जा सकता है। खुला मूल्यांकन, खुले विज्ञान का एक पहलू है जिस पर अभी तक विश्व स्तर पर सहमति नहीं बनी है, यह ज्ञान– संवाद का पक्ष ले सकता है और वैचारिक आपत्तियों या सैद्धांतिक विवादों को हल करने में मदद कर सकता है जो इन विषयों में नियमित रूप से होता है और अक्सर लेख के प्रकाशन को चुनौती देता है।

फिर भी, ओपन साइंस केवल फायदे की भविष्यवाणी नहीं करता है। इंटरऑपरेबिलिटी के कोड के रूप में अंग्रेजी का प्रमुख उपयोग असमानताओं को बढ़ावा देता है, अंग्रेजी में विज्ञान संचार के अतिरंजित समरूपीकरण को मजबूत करता है, और बिब्लियोडाइवर्सिटी को जोखिम में डालता है। इस बीच, वैज्ञानिक प्रकाशनों के लिए, मुख्य रूप से यूरोप में, "कोएलिशन एस" से "प्लान एस" जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से और लेखकों पर प्रत्यक्ष शुल्क (लेख प्रसंस्करण शुल्कः एपीसी) लागू करके खुली पहुंच के त्वरण को प्रेरित किया गया है। प्रकाशन उद्योग की अत्यधिक लाभ दरों को सुनिश्चित करने के लिए एपीसी की अंधाधुंध और क्रमिक वृद्धि पहले से ही वर्चस्ववादी और गैर–वर्चस्ववादी देशों में शोधकर्ताओं के बीच अधिक विभाजन पैदा कर रही है। ओपन साइंस की परियोजना, तनाव और संघर्षों के साथ एक चल रहा निर्माण है।

> यूरोसेंट्रिज्म पर सवाल उठाना और प्रासंगिक ओपन साइंस को लागू करना

इम्मानुएल वालरस्टीन द्वारा समन्वित गुलबेंकियान रिपोर्ट द्वारा शुरू किए गए सामाजिक विज्ञान को खोलने की परियोजना पर पुनर्विचार करने से ज्ञान की यूरोसेंट्रिक और औपनिवेशिक प्रणाली की नींव पर सवाल उठाने वाले कार्यक्रमों की जीवन शक्ति को पुनर्प्राप्त करना संभव हो जाता है जो आज खुली विज्ञान परियोजना का हिस्सा है। साथ ही, यह परियोजना में सामाजिक और मानव विज्ञान की अपेक्षाकृत सीमांत भागीदारी के बारे में सवाल उठाता है जिसे ये विषय अधिक उत्साहपूर्वक गले लगा सकते हैं। समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक और मानव विज्ञानों में किए गए शोध की विशिष्टता, नृवंशविज्ञान गतिशीलता और कमजोर सामाजिक समूहों के साथ ज्ञान के सह–उत्पादन दोनों में, अनुसंधान डेटा साझा करते समय कठिनाइयों का सामना करती है। इसके कारण विविध हैं और लोगों या संगठनों की जानकारी की संवेदनशील प्रकृति और उनके द्वारा निर्मित डेटा के प्रकार, वे कारण हैं, जिसके वजह से वे केवल संस्थागत रिपॉजिटरी में डेटासेट साझा करने के लिए स्थापित प्रारूपों में जगह पाते हैं।

इस अर्थ में, संस्थागत स्तर पर निर्माण क्षमता, सभी मानक सेटों को पुनर्प्राप्त करने और खुले विज्ञान सिद्धांतों और अच्छी प्रथाओं का प्रसार करने के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित अनुसंधान डेटा को खोलने और अध्ययन के प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल होने के लिए खुले डेटा मॉड्यूल के संशोधन और प्रासंगिकता में आगे बढ़ने के लिए शोधकर्ताओं से अधिक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

खुले विज्ञान के मुख्य आयामों में से एक, नागरिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान में भागीदारी विज्ञान विकसित करने के लिए एक समृद्ध सैद्धांतिक और व्यावहारिक क्षेत्र प्राप्त करता है। लैटिन अमेरिका ने दशकों से एक सैद्धांतिक परंपरा और भागीदारी विज्ञान के अपने तरीकों को विकसित किया है। फाल्स बोर्डा के योगदान के अलावा, पाउलो फ्रीयर की लोकप्रिय शिक्षा और दक्षिणी ज्ञानमीमांसा जैसे अनुभव मील के पत्थर हैं। अधिकांश लैटिन अमेरिकी विश्वविद्यालय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से विस्तार परियोजनाओं (तीसरे मिशन) को लागू कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों और समाज के बीच ये अंतर्क्रिया प्रथाओं का एक संचय प्रदान करती है जो ज्ञान के सह–उत्पादन को बढ़ावा देती है और खुले विज्ञान की भागीदारी प्रकृति को व्यापक बनाने के लिए उनके यात्राक्रम को स्थापित करती है।

इस अर्थ में, भागीदारी विज्ञान की नवीनता तब उत्पन्न नहीं होती है जब कुछ सामाजिक समूहों को वैज्ञानिकों के साथ सहयोग करने के लिए "आमंत्रित" किया जाता है, बल्कि तब जब यह विज्ञान के अधिकार और अन्वेषण के अधिकार से जुडी होती है। भागीदारी विज्ञान को प्रभावी ढंग से खुला रखने और बुनियादी मानव अधिकार के रूप में प्रयोग करने के लिए, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि शोधकर्ता सार्वजनिक धन के साथ एकत्र किए गए डेटा के मालिक नहीं हैं। और सबसे बढ़कर, सामाजिक अनुसंधान में भाग लेने वाले समुदायों को प्रसंस्करण और व्याख्या के अधिकार के बिना केवल सूचना के संग्रहकर्ता के रूप में यंत्रीकृत नहीं किया जा सकता है।

नागरिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान का विशेषाधिकार नहीं है। इसके विपरीत, सर्वेक्षण किए गए अनुभव ज्यादातर पर्यावरण विज्ञान से जुड़े हुए हैं। लेकिन दुनिया के कुछ क्षेत्रों – मुख्य रूप से अधिक

>>

परिधीय में – भागीदारी कार्रवाई के विज्ञान के निर्माण की परंपरा है जो पद्धतिगत सिद्धांतों की एक श्रृंखला प्रदान करती है जिन्हें बढ़ाया जा सकता है। विश्वविद्यालय स्तर पर, महत्वपूर्ण विस्तार की परंपरा में एकत्रित प्रथाओं और अनुभवों का सेट नागरिक विज्ञान और बहु–विश्वविद्यालय ज्ञान के विकास के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान के संचय का प्रतिनिधित्व करता है।

> लोकतंत्रीकरण, सूचनात्मक न्याय और असमानताओं का उन्मूलन

खुले और भागीदारी विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए सूचना विषमताओं और असमान शक्ति संबंधों को नष्ट करना अपरिहार्य है।खुली अनुसंधान प्रक्रियाओं के शासन की अधिक लोकतांत्रिक प्रणालियों की आवश्यकता है। स्वदेशी डेटा शासन के लिए केयर सिद्धांत (सामूहिक लाभ, नियंत्रण के लिए प्राधिकरण, जिम्मेदारी, नैतिकता) वैज्ञानिक प्रथाओं में ऐतिहासिक शक्ति असंतुलन को दूर करने की मांग के लिए एक वैचारिक ढांचा प्रदान करते हैं जो अकादमिक समुदाय, जन समुदायों के साथ करता है। फिर भी, मूल्यांकन और वित्त पोषण प्रणालियों के लिए विशिष्ट कार्यों और प्रोत्साहनों की आवश्यकता है, जो शामिल समुदायों की जरूरतों के अनुसार संस्थागत स्तर पर संदर्भित हों।

डिजिटल बुनियादी ढांचे में वैश्विक विषमताएं, ज्ञान परिसंचरण की भाषा और अकादमिक प्रतिष्ठा का संचय प्रत्येक देश और क्षेत्र में विज्ञान को खोलने की स्थितियों पर निर्णायक प्रभाव डालता है। इस परिप्रेक्ष्य से, वालरस्टीन के कार्यक्रम और खुले विज्ञान परियोजना के बीच संवाद आज अधिक उत्पादक हो रहा है। इसे जारी रखने के लिए पूरे वैश्विक दक्षिण के लिए खुली विज्ञान नीतियों को डिजाइन करने के लिए विज्ञान के विउपनिवेशीकरण से जुड़े कुछ चिंतन की आवश्यकता है। हमें अकादमिक कूटनीति के नए रूपों की कल्पना करने की भी आवश्यकता हो सकती है जो वैज्ञानिक दुनिया में विविध अभिनेताओं को एक साथ ला सकें, जैसे कि राष्ट्रीय पेशेवर संघ, क्षेत्रीय नेटवर्क, प्रकाशक, छात्र, लाइब्रेरियन, शोधकर्ता और अंतर्राष्ट्रीय संगठन।

अनुसंधान डेटा खोलना और इसे साझा करने और पुनः उपयोग के लिए स्वतंत्र रूप से सुलभ बनाना खुले विज्ञान का एक मुख्य मुद्दा है। लेकिन यह इन आंकड़ों की अंतरसंक्रियता के लिए क्षमताओं की गारंटी नहीं देता है, न ही यह परिणामों के सामाजिक उपयोग या एक विशेष समाज के लिए इसकी प्रासंगिकता का आश्वासन देता है। वैज्ञानिक विकास का वर्तमान तर्क एक ''मुख्यधारा'' उत्पादक मॉडल पर आधारित एक वैश्विक शैक्षणिक प्रणाली से जुड़ा हुआ है जो सभी स्तरों पर हानिकारक रहा है। अकादमिक समुदाय में आगे बढ़ने के लिए व्यापक रूप से आयोजित मान्यताओं को उखाड़ फेंकने के लिए कई चर्चाओं की आवश्यकता है।

इसकी विशिष्टता के कारण, स्वदेशी पैतृक ज्ञान के खुलेपन का अलग से विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, जो यूनेस्को में खुली विज्ञान सिफारिश के मसौदे के विस्तार के दौरान गहरी चर्चा का विषय था। इसका अर्थ स्वदेशी ज्ञान का जबरन खुलापन हो सकता है, इस विचार का मूल समुदायों द्वारा इस उद्देश्य के लिए बुलाए गए वैश्विक परामर्श में इन समुदायों द्वारा आलोचना की गई थी और इसने सिफारिश में पर्याप्त बदलाव और नए वाक्यांश का नेतृत्व किया। कुछ अध्ययन पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान के निष्कर्षण और इसके वस्तुकरण की प्रक्रियाओं को साबित करते हैं। स्टेविया, कॉर्डिलेरा डी अमम्बे में स्थित पराग्वे के गुआरानी परिवारों द्वारा निर्मित संज्ञानात्मक योगदान का एक आदर्श मामला है, जिन्होंने काआ हे के अस्तित्व और इसकी मिठास, इसे खोजने की जगह और इसके विकास के बारे में जानकारी की खोज की। राजसी महानगरों के वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं के तहत इसके निष्कर्षण और प्रसंस्करण ने इस सब्जी को शोषण प्रक्रियाओं का पक्ष लेते हुए पूंजीवादी आर्थिक तर्कसंगतता में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया। अन्य ज्ञान प्रणालियों के लिए विज्ञान खोलते समय, रिकमेन्डेशन ऑफ द यूनाइटेड नेशंस डिक्लेरेशन ऑफ द राइट्स ऑफ इंडिजेनस पीपल्स (2007) की सिफारिश और उनके पारंपरिक ज्ञान पर स्वदेशी समुदायों के स्वायत्त और अविभाज्य अधिकार की पुष्टि करना आवश्यक है।

तदनुसार, विज्ञान नीतियों का स्थानीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय आधार वैज्ञानिक संप्रभुता को विभिन्न आयामों में गैर–वर्चस्ववादी देशों के सार्वजनिक एजेंडे में सबसे आगे रखता हैय उदाहरण के लिए, वाणिज्यिक प्लेटफार्मों या प्रकाशकों द्वारा निकाले गए डेटा का प्रत्यावर्तन, स्वदेशी ज्ञान की स्वायत्त सरकार और वैश्विक मानदंडों और स्थानीय अनुसंधान मानकों के बीच एक प्रासंगिक संतुलन में विज्ञान की सामाजिक प्रासंगिकता की चर्चा। हमें ज्ञान मींमांसात्मक विविधता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में अवसंरचनात्मक विषमताओं को पहचानना चाहिए। इसी तरह, हमें ज्ञान सृजन की प्रक्रियाओं में सामाजिक असमानताओं और इसके प्रचलन में जाति, जातीयता, विकलांगता या लिंग की असमानताओं को मिटाने के लिए नीतियां बनानी चाहिए। ये विषमताएं बहु–स्तरीय हैं, और उनके समाधान भी जिन्हें सामाजिक, संज्ञानात्मक और सूचनात्मक न्याय के साथ संरेखित एक खुले विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए ढूंढना होगा। ■

सभी पत्राचार को फर्नांडा बेइगल को <fernandabeigel@gmail.com>
Twitter: @BeigelFernanda पर को प्रेषित करें।

> एकाधिक समाजशास्त्रों के लिए एक दक्षिणी अवधारणा

महमूद धौदी, ट्यूनिस विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया, और समाजशास्त्र के इतिहास (आरसी 08), धर्म के समाजशास्त्र (आरसी 22), और भाषा और समाज (आरसी 25) पर आईएसए अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

"कुल सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव" (TSCI), एक अवधारणा जिसका उपयोग आधुनिक सामाजिक विज्ञानों द्वारा नहीं किया जाता है, को एक प्रकार के सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो बिना किसी अपवाद के समुदाय या समाज में प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है। यानी कोई भी TSCI के मानदंडों से विलग नहीं हो सकता है। यह मुख्यधारा के समाजशास्त्रीय विचार के एकदम विपरीत है कि सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों से विचलित होना अपरिहार्य है। संयुक्त राज्य अमेरिका में विचलन पर कई प्रकाशन और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम हैं। मानव समाजों में विचलन की दमदार पृष्ठभूमि के मद्देनजर, मैं यहाँ दो मामलों का विश्लेषण करता हूँ जहाँ किसी सामाजिक सांस्कृतिक मानदंडों से विचलन नहीं होता है, पहला टुनिशिआई समाज का है और दूसरा सभी अरबी समाजों का। इस तरह TSCI की मेरी अवधारणा को "एकाधिक समाजशास्त्र" और "समाजशास्त्र को उपनिवेशित करने" के बढ़ते आह्वान के अनुरूप देखा जा सकता है। TSCI की यह अवधारणा निम्नलिखित दो विशिष्ट परिघटनाओं पर मेरी टिप्पणियों का परिणाम है।

> मादा पशुओं को रखने पर प्रतिबंध

टिप्पणियों से पता चलता है कि उत्तर पूर्वी ट्यूनीशिया (रास दजाबेल, रफरफ, घर एल मेल्ह, सोनिने, एल आलिआ और मेटलिन के शहरों में) के लोग सख्ती से मादा खच्चर, घोड़ों और गधों को नहीं रखते हैं। इन जानवरों की मादाओं को पालना एक बड़ा सामाजिक विचलन माना जाता है। इसे आस–पास के समुदाय के मानदंडों के अनुसार स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यहां कस्बों के निवासियों के मध्य ऐसे निषेधों की इतनी गहरी जड़ें है कि व्यापक सामाजिक–सांस्कृति कमान दंडों के अनुसार निर्जीव वस्तुओं तक को उनके स्त्रीलिंगीय नामों से पुकारने से भी बचने के लिए प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए, वे स्त्रीलिंग शब्द "कैमियोनेट" (वैन) को पुल्लिंग शब्द "कैमियन" (ट्रक) से प्रतिस्थापित करते हैं। यहां लोगों के व्यवहार पर इन सामाजिकदृसांस्कृतिक मानदंडों का प्रभाव सम्पूर्ण और अत्यधिक तीव्र है। इन समुदायों के सभी लोग केवल नर खच्चर, घोड़े और गधे रखते हैं।

जैसा कि मैंने कहा है, इन जानवरों की मादाओं को रखना स्थानीय संस्कृति में निंदनीय माना जाता है। यहां तक कि सार्वजनिक रूप से मादा जानवरों का उल्लेख करना या पुकारना भी आमतौर पर नकारात्मक प्रतिक्रिया लाता है जिसमें शर्मिंदगी से लेकर हिंसक क्रोध तक की प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। मादा जानवरों को रखने से इनकार करने की स्थानीय संस्कृति स्थानीय लोगों को ट्यूनीशिया के बाकी हिस्सों या उससे आगे इस मामले से संबंधित मौजूदा सामाजिक दृसांस्कृतिक मानदंडों के प्रति व्यवहारिक रूप से उदासीन बना रही है।

इस घटना की व्याख्या करने के लिए मेरी परिकल्पना यह है कि इस समाज का यह क्षेत्र ऐसे कई जानवरों की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। मादाओं की उपस्थिति के परिणामस्वरूप होने वाली संभावित निरंतर वृद्धि की तो बात ही छोड़ दिजिए। फिर भी जब ट्रैक्टर, ट्रक और कारों की कमी होती है तो यहां के निवासियों को अपने छोटे भूखंडों को जोतने और सामान ढोने के लिए कुछ जानवरों की आवश्यकता रहती है। इस लिहाज से केवल नर पशुओं को रखना उनकी जरूरतों को पूरा करना यहां अच्छी रणनीति बन गई है।

> हर पुरुष का खतना

जानवरों को रखने के लिए लागू TSCI की अवधारणा को अरब मुस्लिम दुनिया में और अधिक व्यापक रूप से लागू किया जा सकता है। सभी ट्यूनीशियाई मुसलमान पूरे देश में लड़कों के खतने की प्रथा का पालन करते हैं। अर्थात सभी वर्गों (निम्न, मध्य और उच्च वर्ग) के ट्यूनीशियाई परिवारों में कोई अपवाद नहीं है। वास्तव में खतना के सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड से विचलन के लिए कोई जगह नहीं है।

> समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

दोनों परिघटनाओं के मेरे विश्लेषण से दोनों के बीच समानता का पता चलता है। पहले मामले में, पूर्वोत्तर ट्यूनीशिया के सभी निवासियों ने मादा खच्चरों, घोड़ों और गधों को रखने से मना कर दिया। दूसरे में, सभी ट्यूनीशियाई मुसलमान पुरुष खतना के अभ्यास और उत्सव में संलग्न हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से ये दोनों घटनाएं सामान्य रूप से ट्यूनीशियाई समाज के भीतर और विशेष रूप से पूर्वोत्तर ट्यूनीशिया में समुदाय के पुरुषत्व के मूल्य के महत्व को रेखांकित करती हैं।

व्यवहारिक रूप से TSCI एक नई अवधारणा के रूप में प्रकट होता है जो जिसे बामुश्किल ही किसी पश्चिमी समाजशास्त्रीय साहित्य में पाई जाती है। स्वर्गीय इमैनुएल वालेरस्टीन ने यहां समझाए गए टीएससीआई की अवधारणा को मान्यता नहीं दी, जब उन्होंने अमेरिका में समाजशास्त्र में लिखा थाः "हम इसे इस रूप में ले सकते हैं कि समूह संस्कृति के मानदंड (सभी स्तरों पर) कभी भी पूरी तरह से सभी सदस्यों द्वारा नहीं देखे जाते हैं।"

इस लेख में उद्धरत ट्यूनीशियाई समाज और अरब मुस्लिम समाजों के सांस्कृतिक मानदंडों को उनका दावा प्रतिबिंबित नहीं करता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, अरब मुस्लिम और पश्चिमी समाजों के बीच अंतर्निहित संभावित सांस्कृतिक अंतर आज एकाधिक समाजशास्त्र और समाजशास्त्रों के वि–उपनिवेशीकरण के बढ़ते आह्वान के अनुकूल हैं। इसलिए समाज वैज्ञानिक वैध रूप से पूछ सकते हैंः क्या TSCI को गैर–अरब मुस्लिम समूहों और समाजों पर लागू किया जा सकता है?

उस प्रश्न के उत्तर के बावजूद, पिछले उदाहरणों में वर्णित शक्तिशाली TSCI के कारणों को समझना और समझाना विशेष रूप से मानव विज्ञानी और समाजशास्त्रियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस पहेली के उत्तर के लिए सांस्कृतिक प्रणालियों और मानव समाजों की सामाजिक संरचनाओं में गंभीर अनुसंधान की आवश्यकता है। ये उदाहरण ट्यूनीशियाई और अरब व्यवहार पर अपरिहार्य TSCI पर जोर देते हुए इस लेख की मुख्य परिकल्पना की विश्वसनीयता को रेखांकित करते हैं। ■

सभी पत्राचार महमूद धौदी को <m.thawad43@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र और समकालीन सभ्यता का संकट

महासभा की घोषणा
लैटिन अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन (ALAS)
समाजशास्त्र की XXXIII लैटिन अमेरिकी कांग्रेस

सोशल थ्योरी और लैटिन अमेरिका में अध्ययन के न्यूक्लियस के सामाजिक आंदोलनों वेधशाला के लिए (NETSAL-IESP/UERJ) ब्राजील के कलाकार और राजनीतिक वैज्ञानिक रिब्स द्वारा चित्रण (https://twitter.com/o_ribs और https://www.instagram.com/o.ribs/) साभार: रिब्स, 2021

वर्तमान वैश्विक अव्यवस्था के संदर्भ में, एक तरफ लैटिन अमेरिका और कैरिबियन समाज और उसके आंतरिक सहयोगियों के लिए प्रमुख क्षेत्रों की परियोजना की उन्नति के मध्य और वहीं दूसरी ओर जनसंख्या, जिनकी जिंदगी एक धागे से लटकी हुई सी है, की व्यापक स्तर पर मांगों के मध्य तनाव को अनुभव कर रहे हैं। पूंजीवाद वैश्विक बाजार में परिधीय समाजों के पुनः समावेश के नवीन स्वरूपों पर आधारित संचय के एक नए फेज में प्रवेश कर रहा है। पूंजीवाद वैश्विक बाजार में हाशिए के समाजों के समावेश के नए रूपों के आधार पर संचय के एक नए चरण में प्रवेश कर रहा है। रोजमर्रा की जिंदगी और उत्पादन विधियों में तकनीकी प्रगति का तेजी से समावेश, इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमारे परिधीय समाजों के लिए इसका अभिप्राय आतंरिक बाजारों का विनाश है। ऐसा तब होता है जब वे एक आधुनिक वैश्वीकृत क्षेत्र और विशाल बहुमत जो व्यवस्था के प्रकार्यात्मक उपभोक्ता तक सीमित हो जाते हैं (जिनकी आर्थिक गतिविधियां उत्पादन के पारंपरिक रूपों में स्थित हैं जो अभी भी मौजूद हैं, अनौपचारिक नौकरियों में या अन्य रूपों में मौजूद हैं)।

> >

हम गहरे सभ्यतागत और प्रणालीगत संकट के एक ऐतिहासिक क्षण का भी सामना कर रहे हैं। जिसमें जलवायु और पर्यावरण ीय आपातकाल, लोकतंत्र और अधिकारों के लिए झटके, क्षेत्रों का सैन्यीकरण और भोजन, ऊर्जा, प्रवासन एवं नैतिक–राजनीतिक संकट प्रमुख हैं। दशकों के नवउदारवाद ने सार्वजनिक सेवाओं को नष्ट कर दिया है। इस सिद्धांत ने अर्थव्यवस्था से परे व्यक्तिगत और सामूहिक विवेक तथा व्यक्तिवादिता को दृढ़ता से प्रभावित किया है। उसी समय, गहरी असमानताओं से हमारे समाज उत्तरोत्तर टूटें हैं जो कोविड 19 महामारी के बाद से अधिक स्पष्ट हो गए हैं।

> एक नए ऐतिहासिक चौराहे पर लैटिन अमेरिका

इस परिदृश्य में हमारा क्षेत्र स्वयं को एक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रोजेक्ट, जो संचय के नए प्रतिमानों का हिस्सा है और हमारे समय के वर्तमान चुनौतियों के मध्य उभरने की कोशिश करने वाले नए सामाजिक–राजनैतिक प्रोजेक्टों के निर्माण के मध्य फंसा हुआ पाता है। एक तरफ, वैश्विक भू–राजनैतिक पुनर्गठन, संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्चस्व के कमजोर पड़ने और शक्ति के नए ध्रुवों – विशेष रूप से चीन – के उभरने से हमारे क्षेत्र में वैश्विक अधिपत्य के विवाद में नए दबाब उत्पन्न होते हैं। दूसरी ओर नाराजगी उभरी है और नारीवाद, पर्यावरणवाद, युवा हितों, नस्लवाद–विरोधी, और स्वदेशी लोगों व समुदायों के एजेंडे की बढ़ती केंद्रीयता के साथ एक अलग तरह के समाज की आकांक्षा रखने वाले जोरदार राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन मजबूत हुए हैं। इस तरह, ठोस यूटोपिया पर आधारित पर्यावरण–सामाजिक संक्रमण की नई संभावनाएं और नीतियां प्रदेशों में विरोध और दैनिक विवादों में आकार ले रही हैं।

हालाँकि, इन विरोधी ताकतों के बीच लड़ाई बेमेल है। उन देशों में भी जहां लोकप्रिय विकल्प अधिक महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ने में कामयाब रहे हैं, राष्ट्रीय सरकारों तक भी पहुंचे हैं, सत्ता की परियोजना प्राधान्य है। यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में देखा जा सकता है जिनका पूंजीवादी पैटर्न और नवउदारवादी विचारधारा द्वारा निर्देशित होना निरन्तर जारी है, भले ही उनके परिणामों ने साबित कर दिया है कि मानवता को तबाही की तरफ बढ़ाते हुए वे विफल हैं। यह सीमा निर्धारित करता है और लोकप्रिय राजनीतिक ताकतों पर चुनौतियां लगाता है जो अत्यधिक उम्मीदों के बीच ताकत हासिल कर चुके हैं। अतः वे उन ताकतों के मध्य फँस गए हैं जो अपने प्राधान्य को और उनको समर्थन देने वाले क्षेत्रों कम होते हुए देखने के लिए तैयार नहीं हैं लेकिन वे अक्सर अपनी अपेक्षाओं को पूरा नहीं होते देख निराश होते हैं।

> समकालीन लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र की भूमिका

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि हम एक अभूतपूर्व चरण में प्रवेश कर चुके हैं। जहां इस भू–क्षेत्र की अधिकांश आबादी का भाग्य दांव पर है। इस प्रक्रिया को चित्रित करना, इसके परिणामों का अध्ययन करना, इसके भविष्य के विकास की परिकल्पना करना और प्रस्तावों को विस्तृत करना समाजशास्त्र की प्रकृति में है उसका दायित्व है। चूंकि स्थिति अभूतपूर्व है। इसलिए लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र को तात्कालिकताऔर शक्ति के साथ ज्ञानमीमांसीय, सैद्धांतिकी, पद्धतिगत और तकनीकी प्रयास करने की आवश्यकता है। लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र ने अपने पूरे इतिहास में यही किया भी है। उदाहरण के लिए, हमें उन नवप्रवर्तनों को याद करना चाहिए जो एक फलदायी निबंधकार शैली से तथा कथित वैज्ञानिक समाजशास्त्र में परिवर्तन, प्रतिबद्ध समाजशास्त्र और क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा वैज्ञानिक समाजशास्त्र पर काबू पाने, निर्भरता सिद्धांत और राजनीतिक पारिस्थितिकी द्वारा विकासात्मक सिद्धांत पर सवाल उठाना, नारीवादी सिद्धांतों के ज्ञानसंबंधी नवाचार या सामाजिक आंदोलनों की व्याख्या के लिए लैटिन अमेरिकी शैली का प्रस्ताव, जिन्होनें पश्चिमी दुनिया के वर्चस्व वादी सिद्धांतों को चुनौती दी, के परिवर्तन को चिन्हित करते हैं। इनमें से प्रत्येक नवाचार, जिसे हम पुनःनींव कह सकते हैं, ने सामाजिक परिवर्तनों का जवाब दिया।

इस बिंदु पर उन व्यावहारिक और सैद्धांतिक परिवर्तनों की पहचान करना, जिनका समाजशास्त्र को विश्लेषण करना है और जटिल वैश्विक व क्षेत्रीय व्यवस्था को समझना आवश्यक है। हमें यह पूछना चाहिए कि क्या जलवायु, गरीबी, विकास के मॉडल, सामाजिक आंदोलनों, सांस्कृतिक और पहचान परिवर्तन या औपनिवेशिक प्रश्न से संबंधित जटिल समस्याओं पर विचार करने के लिए ALAS कार्यसमूहों को पुनर्गठित करने और हमारी मुख्य बहसों की विषयगत प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

इस दस्तावेज में संक्षिप्त रूप में रेखांकित लैटिन अमेरिकी और कैरिबियाई समाज में गहरे परिवर्तन जो लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र को स्वयं को फिर से जीवंत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। साथ ही साथ उन सभी महत्वपूर्ण विरासतों को भी संरक्षित करते हैं, जो कई मायनों में ALAS के सत्तर वर्षों के साथ है। हमें परिवर्तन लाने हेतु समझने के कार्य करने के लिए अपने विचारों और दृष्टिकोणों में नवाचार लाने की आवश्यकता होगी। हमें समाजशास्त्र, सार्वजनिक विश्वविद्यालय और अपने क्षेत्र व दुनिया के समाजशास्त्रियों, जिन्होंने धमकियां, प्रतिशोध, कारावास और यहां तक कि हत्या का सामना किया है, की भी सख्ती से रक्षा करनी चाहिए। हम उन सभी के साथ एकजुटता से खड़े हैं और अपने विषय और इसके रुपांतरणीय व्यवसाय को मजबूत करने के लिए संयुक्त और अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाही का आह्वान करते हैं।

यह घोषणा केवल एक अपवाद के साथ देशों के संदर्भ या लेखकों के नामों के उल्लेख से बचती है: पाब्लो गोंजालेज कैसानोवा, महान मैक्सिकन समाजशास्त्री और ALAS के पूर्व अध्यक्ष, जिन्हें यह सभा उनके 100 वें जन्मदिन के अवसर पर बहुत अच्छे कार्यों के प्रति समर्पित समाजशास्त्री के रूप में उनके अनुकरणीय जीवन के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करती है। उनका कृतित्व और व्यक्तित्व लैटिन अमेरिका और कैरिबियन समाज की वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण के रूप में काम करता रहेगा। ■

मेक्सिको सिटी, 19 अगस्त, 2022

> बिखरा हुआ ब्राजील

एलीसीओ एस्तानक्यू, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, और सामाजिक वर्गों और सामाजिक आंदोलनों (आरसी 47) पर आईएसए अनुसंधान समिति के सदस्य, और **अगनाल्डो दे सौसा बारबोसा,** साओ पाउलो स्टेट यूनिवर्सिटी, ब्राजील द्वारा

एक लोकप्रिय इलाके में कपड़ों के बीच ब्राजील का झंडा लटका हुआ। साभार: चार्ल डूरंड, पिक्सेल्स

ब्राजील में गंभीर सामाजिक टूटन सुविख्यात हैं लेकिन चुनाव विवाद के हालिया संदर्भ में वे तीन आयाम विचार करने योग्य हैं जो एक अंतरराष्ट्रीय पाठक को देश के सामने आने वाले विरोधाभासों और चुनौतियों को समझने में मदद कर सकते हैं, जो एक साथ ऐतिहासिक, सामाजिक–आर्थिक, और राजनैतिक हैं।

> ऐतिहासिक आयाम

ईसाईकरण के पहले मिशन के 500 से अधिक वर्षों के बाद, दास व्यापार और औपनिवेशिक व्यवस्था के क्रूर प्रभाव ने एक ब्राजीलियाई अभिजात वर्ग की उत्पत्ति का गठन किया, जिसकी शाही अवधारणा को अपने स्वयं के गणतंत्रीय आंदोलनों तक बढ़ाया गया था। स्वतंत्रता की विजय के बाद, साम्राज्य की अशांत अवधि (1882–1889) में अभिजात वर्ग के विभिन्न अंशों के बीच एक तीव्र संघर्ष रहा। परिणामतः एक सच्ची राष्ट्रीय परियोजना को आगे बढ़ाना असंभव हो गया। प्रथम गणराज्य के उद्भव को शासी निकाय के सबसे रूढ़िवादी क्षेत्रों द्वारा समर्थित किया गया था जो, उन लोकप्रिय वर्गों को छोड़ कर, अभी भी गुलामी के उन्मूलन (1889) से नाराज थे। उसी समय, प्रमुख जमींदारों से जुड़े "कोरोनेलिस्मो" की घटना ने एक ऐसी प्रवृत्ति को मजबूत किया जो बीसवीं शताब्दी में गेटुएलियो वर्गास द्वारा प्रचारित पारी के आने तक ब्राजील की राजनीति को निर्धारित करती रही। इस बदले में, नए औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग, जो 1920 के दशक से विस्तृत हुआ था, ने पुराने जमींदारों और कॉफी बागान मालिकों से विरासत में मिली शोषक "स्थिति" को शामिल किया और "कोरोनेलिस्मो" के सत्तावादी लोकाचार को संरक्षित रखा। यह सच है कि पहली गेटूलियो वर्गास सरकार (1930–1945) के बाद ब्राजील में औद्योगीकरण और शहरीकरण का उछाल आया, जिसने देश को प्रगति की ओर अग्रसर किया। हालाँकि, नए उद्यमी अभिजात वर्ग की ओर से गेटुलियो के विकासवादी अभियान के बावजूद, बढ़ते सैन्यवाद ने शासक वर्ग की अभिजात्य महत्वाकांक्षाओं को भी निर्धारित करना जारी रखा। जिसकी परिणति राष्ट्रपति की आत्महत्या (1954) और बाद में बल द्वारा सत्ता पर नियंत्रण कर तख्तापलट (1964) में हुई।

> समाजिक–आर्थिक आयाम

समाजिक–आर्थिक स्तर पर, 1970 और 80 के दशक ने नए व्यापार संघवाद सहित ब्राजील के राजनीतिक एजेंडे पर सामाजिक आंदोलनों को रखा जहां लूला दा सिल्वा केंद्रीय व्यक्ति थे, जिन्होंने सैन्य शासन के अंत का मार्ग प्रशस्त किया। विद्रोह की लहरों की गतिशीलता वह इंजन बन गई जिसने लोकतंत्र को मजबूत किया। साथ ही सामाजिक एजेंडा जिसे लूला दा सिल्वा ने बाद में क्रियान्वित किया। फिर भी एक "लुलिस्ट" जीत के भूत ने "कोलोरडीमेलो" के साथ अवसरवाद की जीत में योगदान दिया। जिससे ब्राजीलियाई सोशल–डेमोक्रेटिक पार्टी और फर्नांडो हेनरिक कार्डसो (मध्यम–दक्षिणपंथी) का उदय संभव हो गया। यद्यपि, सरकार के एक बहुत सफल चरण के बाद, "रियल प्लान" (नई मुद्रा को प्रारम्भ करने वाले वित्तीय सुधार) के सन्दर्भ में, 1990 के दशक के अंत से उच्च बाह्य ऋण और एक ऐसी कर नीति जो वित्तीय पूंजी को लाभ पहुँचाती थी, के साथ आर्थिक ठहराव आ गया जिसने आर्थिक अस्थिरता, अधिक अनौपचारिक श्रम, कम तनख्वाह और बढ़ती असमानता को अग्रेषित किया।

> राजनीतिक आयाम

समकालीन ब्राजीलियाई समाज का राजनीतिक आयाम एक विभाजन को दर्शाता है जिसमें राजनीतिक–चुनावी क्षेत्र व्यावहारिक रूप से बीच में विभाजित होता है। यहाँ ब्राजील की राजनैतिक व्यवस्था के कुछ सूक्ष्मांतर का स्मरण करना सही होगा। एक ऐसा शासन जो राष्ट्रपति वादी है, लेकिन नामिक नहीं या, अन्य शब्दों में, एक तथा–कथित " राष्ट्रपति गठबंधन" है, एक अलिखित नियम जिसमें राष्ट्रपति की स्थिरता संसदीय समझौतों पर मोटे तौर पर निर्भर है। प्रोफेसर सिसरो अराउजो के शब्दों में, यह एक प्रकार

>>

का "अदृश्य कक्ष" है जो फर्नांडो हेनरिक कार्डोसो के दिनों से, "अनौपचारिक रूप से राज्य की शक्ति के समानांतर बन गया है जो आधिकारिक शक्ति के सभी कार्यों के साथ जुड़ा हुआ है। इसमें राजनीतिक प्रतिनिधित्व (सभी स्तरों पर) और आर्थिक शक्ति के बीच एक स्वच्छंद संबंध शामिल है। विशेष रूप से वह जो सार्वजनिक संसाधनों से जुड़ा है और उन पर निर्भर है।" इसके अलावा, राष्ट्रपति, संघीय कांग्रेस, राज्य के राज्यपालों, राज्य कांग्रेस और सीनेट के आम चुनावों के मामले में, ब्राजील में मतदान में एक साथ कई मतपत्र शामिल होते हैं। इसके लिए शिखर सम्मेलन में अंतहीन सौदेबाजी और लेन–देन के साथ कई वार्ताएं होती है। दूसरे शब्दों में स्पष्ट कहे तो इस प्रक्रिया में हेरफेर करना आसान है और यह स्वयं राजनीतिक दलों और लोकतंत्र को बदनाम करने में योगदान करता है।

> पैशाचिक चुनाव

पुराने विभाजन हाल की चुनावी बहस में परिलक्षित हुए है। वास्तव में, "विचारों की बहस" से अधिक, यह चुनावी आधिपत्य के विवाद थे जिसमें एक नजर रणनीति और गठबंधन पर थी तो दूसरी चुनावों पर। हितों के विरोध का एक मनिचियन आख्यान में अनुवाद किया गया जिसने मुख्य प्रतिद्वंद्वी को राक्षस बनाने के लिए निरंतर दबाव डाला। यह दुश्मन की शैतानी छवि थी जिसे दोनों ओर से पेश किया गया जिसने हाल के अभियान में नफरत को निर्णायक कारक के रूप में स्थापित किया। सिरोगोम्स और सिमोन टेबेट (पहले दौर में कुल 7.2 प्रतिशत के साथ) द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए "तीसरे तरीके" की शून्यता का सामना करते हुए बोल्सनारो और लूला ने जमीनी स्तर को जुटाया और एक दूसरे पर एक राष्ट्र के रूप में ब्राजील और उसके लोगों के खिलाफ पैशाचिक इरादे रखने का आरोप लगाते हुए अनिर्णीत लोगों को आकर्षित करने की कोशिश की। यूरोप की भांति, इन दिनों में भय और नाराजगी के विस्तार को चुनावी हथियार के रूप में काम में लिया जाता है।

> नफरत और टाला गया तख्तापलट

मीडिया, ईसाई चर्चों और डिजिटल नेटवर्क (जैसे व्हाट्सएप) की मदद से प्रमुख आर्थिक हितों (विशेष रूप से कृषि व्यवसाय क्षेत्र) को गहरी जड़ें जमा चुकी मजदूर विरोधी भावनाओं से उकसाया गया है जिसने खुद को (वर्गीय) घृणा की भाषा में बदल दिया जो न केवल वर्कर्स पार्टी और लूला डी सिल्वा के खिलाफ, बल्कि वामपंथी, समाजवादी, साम्यवादी, आदि कहे जाने वाली हर चीज के खिलाफ थी। औसत और लोकप्रिय तबके की तार्किकता व्यवहारिक रूप से दुख की ओर आसन्न आर्थिक गिरावट पर हैरानी से क्षीण हो गयी थी। इस कारण से, बोल्सनारो ने ईंधन की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए अलग–अलग उपाय करने की कोशिश की। (भले ही इसका मतलब राज्य की सार्वजनिक सेवाओं को गिरवी रखना हो) यह फिर भी अपर्याप्त साबित हुआ। इस वजह से लूला डा सिल्वा ने भविष्य के बारे में बात करने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया। उनके लिए अपनी पहली सरकारों की सफलता को याद करना काफी था जब ब्राजीलियाई लोग विशेष रूप से गरीब लोग, इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में अपना "स्वर्णिम काल" जी रहे थे। चुनाव पूर्व चरण में तख्तापलट की धमकी एक लंबी अवधि के लिए छिपी हुई थी। लेकिन तब न्यायपालिका के मुख्य निकाय (विशेष रूप से सुपीरियर इलेक्टोरल कोर्ट और इसके अध्यक्ष, एलेक्जेंडर डीमोरेस) तख्तापलट की बाधाओं के रूप में सामने आए जिन्होंने सैन्य बलों के सबसे कट्टरपंथी क्षेत्रों को निष्प्रभ करने में सफलता पाई।

> रोडब्लॉक और सामान्यीकरण

अंत में, ब्राजील के समाज में असली तनाव लूला डा सिल्वा की जीत के बाद सामने आया जिसमें पराजित उम्मीदवार ने हार को स्वीकार नहीं किया और परिणाम घोषित होने के दो दिनों से अधिक समय तक तो चुप रहा। मुख्य राजमार्गों पर सैंकड़ों बाधाओं और विधानसभा के प्रारम्भ के पहले ब्रासीलिया की तीन सरकारी शक्तियों की इमारतों पर होने वाले विनाश के साथ सबसे अधिक कट्टरपंथी सामाजिक क्षेत्रों की प्रतिक्रियाओं ने खुलासा किया कि एक तरफ, लोकतंत्र की पूर्ण रूप से अवहेलना करते हुए लूला का राष्ट्रपति पद पर लौटना और दूसरी तरफ, न्यायिक व्यवस्था के प्रति नई चुनौतियां जो सामने आ गयी। एक ओर यह उसके खिलाफ घृणास्पद आक्रोश प्रकट करती है। इसके कई सूत्रधार अब बोलसोनारिज्म से जुड़ी शक्तिशाली ताकतों की सेवा में रणनीतिक रूप से अधिनियमित आपराधिक कार्रवाई के मजबूत सबूतों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। तथ्य यह है कि कार्यवाहक राष्ट्रपति ने खुद को दूर कर लिया और ट्रक ड्राइवरों व प्रदर्शनकारियों के विमुद्रीकरण का आह्वान किया। भले ही देर से और असंबद्ध रूप से सबसे अधिक उत्साही आत्माओं को शांत किया। जबकि संस्थागत स्तर पर संक्रमण की तैयारी और शुरुआत एक "सामान्यीकरण" का संकेत देती है। जो अपेक्षित है एक आशाजनक नए चक्र का मार्गप्रशस्त करने के लिए। यह एक कठिन कार्य है पर असंभव नहीं। ■

सभी पत्राचार
एलीसीओ एस्तानक्यू को <elisio.estanque@gmail.com> Twitter: @ElisioE एवं
अगनाल्डो दे सौसा बारबोसा को <agnaldo.barbosa@unesp.br> पर प्रेषित करें।

> ईरान: यह विरोध नहीं है, यह एक क्रांति है

ईरानीयन वाईसेज, द्वारा

"महिला, जीवन, स्वतंत्रता", के नारे के साथ ईरान के समर्थन में सड़क प्रदर्शन, 2022। साभार: फ्लिकर

13 सितंबर, 2022 को सककेज की एक 22 वर्षीय कुर्द–ईरानी महिला महसा अमिनी को तेहरान में तथाकथित नैतिकता पुलिस ने उसके कथित अनुचित पहनावे के कारण गिरफ्तार किया था। हिरासत में पीटे जाने से लगी चोट के कारण कोमा में जाने के बाद अमिनी की तीन दिन बाद अस्पताल में मौत हो गई।

अमिनी की मौत ने पूरे ईरान में विरोध की एक लहर छेड़ दी। जिसने न केवल लिंग अलगाव को समाप्त करने के लिए बल्कि इस्लामी गणराज्य को उखाड़ फेंकने के लिए भी आह्वान किया। ईरानी शासन के कई अनाचारों और सुधारवादियों के विश्वासघात के कारण अब प्रदर्शनकारी सुधारों में विश्वास नहीं करते हैं बल्कि वे एक क्रांति के लिए प्रयासरत हैं।

> ईरान में विरोध की लहर

वर्तमान विरोध आंदोलन के एक हिस्से के रूप में, कई युवा लड़कियों और महिलाओं ने अपने सिर के स्कार्फ उतार फेंके और राज्य के अनिवार्य हिजाब और अपने शरीर पर नियंत्रण के प्रतिरोध स्वरुप जानबूझ कर संकेत में उन्हें सार्वजनिक रूप से जलाया। जबकि महिलाओं ने पिछले चार दशकों में अक्सर विरोध प्रदर्शनों में एक सक्रिय और अभिन्न भूमिका निभाई पर लिंग का मुद्दा कभी भी विरोध के एजेंडे में इस तरह शामिल नहीं रहा था, 1979 के विरोध प्रदर्शनों को छोड़कर जब महिलाओं ने कानून द्वारा अनिवार्य रूप से सरकार की योजनाओं का विरोध किया। मौजूदा विरोध आंदोलन में छात्रों ने पहली मांग विश्वविद्यालयों के कैफेटेरिया में लैंगिक अलगाव को खत्म करने के लिए की थी।

सार्वजनिक रूप से विरोध करने वाली युवा महिलाओं की दृश्यता के बावजूद, शक्तिशाली नारा "नारी, जीवन, स्वतंत्रता" विरोध के केंद्रीय संदेश के रूप में, बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक और कलात्मक उत्पादन में महिलाओं और लिंग के प्रमुख प्रतीक हो गए और लिंग का मुद्दा मजबूती से उठा। विरोध करने वालो का एजेंडा और उनकी मांगें बहुआयामी हैं। यह अब महिलाओं और लिंग तक सीमित नहीं हैं। इन विरोध प्रदर्शनों ने लिंग की परवाह किए बिना ईरानियों को विभिन्न पीढ़ीगत, सामाजिक, जातीय, धार्मिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि से एकजुट किया है। देश के सभी हिस्सों से महिलाएं, पुरुष, छात्र, शिक्षक, डॉक्टर, व्यापारी, कार्यकर्ता या नागरिक स्वयं सेव कइन विरोध प्रदर्शनों और हड़ताल में शामिल हुए हैं। इसलिए यह एक बहुत व्यापक सामाजिक आंदोलन के रुप में उभरा हैं।

पर्दे का पेचीदा मुद्दा उन कई मुद्दों में से एक है जिसे इस्लामिक गणराज्य 1979 से ही हल करने में नाकामयाब रहा है। अपनी इस्लामी पहचान और चरित्र को बनाए रखने के लिए राज्य ने अनिवार्य हिजाब और लिंग अलगाव जैसे मुद्दों पर कड़ी पकड़ बनाई है। राज्य अब अपने आपको एक गतिरोध में अटका हुआ पा रहा है। कोई समझौतावादी समायोजन या कानूनी परिवर्तन करने में असमर्थ है। भले ही ईरान की लगभग आधी आबादी अनिवार्य पर्दा फरमान के विरोध में है।

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कदाचारों और शासन द्वारा कुप्रबंधन के उदाहरणों ने कई ईरानियों के असंतोष, हताशा और निराशा को बढ़ाया है। 2017, 2018, 2019 और 2021 में बेरोजगारी, गैसोलीन की कीमतों में वृद्धि, खराब जल आपूर्ति, असमानता, वायु प्रदूषण और आर्थिक कुप्रबंधन जैसे कुछ मुद्दों पर विरोध प्रदर्शन आम रहे है। महसा अमिनी की मौत सरकार से मोहभंग ईरानियों के लिए खतानाक साबित हुई।

अब ईरानी प्रदर्शनकारी व्यवस्था में सुधार या सुधार की मांग नहीं करते हैं, नही वे अब सुधारों में विश्वास करते हैं। यहां 1990 के

>>

दशक के अंत और 2009 के हरित आंदोलन के बीच की अवधि में कानून, राजनीतिक सुधारों और महिलाओं के अधिकारों में बदलाव के बारे में एक जीवंत संवाद देखा गया। लेकिन कई सुधारवादी व्यक्तियों की क्रूर कार्रवाई, गिरफ्तारी, हाउस अरेस्ट, यातना और जबरन स्वीकारोक्ति के साथ, सुधारों का युग पूरी तरह से रुक गया है।

> "हम अब डरते नहीं हैं, हम लड़ेंगे"

नवंबर 2022 में, न्यायपालिका के प्रमुख घोल म हुसैन मोहसेनी–एजेई ने प्रदर्शनकारियों को यह कहकर बात करने के लिए एक टेबल पर आमंत्रित किया कि "मैं तैयार हूं चलो बात करते हैं। अगर हमने गलतियां की हैं तो हम उन्हें सुधार सकते हैं।" लेकिन विरोध करने वाले ईरानियों ने इसे विश्वासघात की एक और रणनीति कहकर उनके प्रयास को खारिज कर दिया। उन्होंने नारों के साथ जवाब दिया: "यह विरोध नहीं है, यह एक क्रांति है।"

ईरान में ये प्रदर्शनकारी इस हद तक चले जाते हैं कि इस्लामी गणतंत्र के अंत की मांग करने लगते हैं। वे अपनी निडरता और दृढ़ संकल्प को इंगित करने के लिए "तानाशाह की मौत" या "खामनेई की मौत" का जाप करते हैं। दीवारों और बैनरों पर लिखते हैं "हम अब डरते नहीं हैं, हम लड़ेंगे"। वे नए निर्माण में एक क्रांति का नेतृत्व करने का दावा करते हैं। इस्लामी गणराज्य के कई महत्वपूर्ण प्रतीकों को नष्टकर जला देते है। जिनमें पुलिस और बसीज स्टेशन, "इस्लामिक रिपब्लिक स्ट्रीट" या "फिलिस्तीन" जैसे सड़क चिह्न शामिल हैं। साथ ही इस्लामिक गणराज्य के संस्थापक रूहुल्लाह खुमैनी या इस्लामिक रिवोल्यूशन रीगा र्डकॉर्प्स (IRGC) के कमांडर कासिम सुलेमानी की मूर्तियाँ, बैनर, खुमैनी और वर्तमान धार्मिक नेता अलीखा मेनेई की तस्वीरें भी।

ईरानी शासन शुरुआती तीन हफ्तों में अपनी प्रारंभिक प्रतिक्रिया में आश्चर्यजनक रूप से धीमा और झिझका हुआ था। संभव है यह संयुक्त राष्ट्र महासभा के कारण हो। जो सितंबर के अंत में न्यूयॉर्क शहर मेंहो रहा था या खामेनेई की चुप्पी और जनता के बीच से नदारत हो जाना।

शासन की अधिनायकवादी प्रकृति का संकेत राज्य द्वारा पूरे विरोध आंदोलन में कई तरह की प्रतिक्रियाओं को नियोजित कर दिया गया। इनमें इंटरनेट बंद करनाय व्यापक शासन समर्थक प्रदर्शन आयोजित करना, विरोध करने वाली भीड़ पर रबड़ की गोलियों और पेंट बॉल से गोली चलाना, प्रदर्शनकारियों और कलाकारों को गिरफ्तार करना, प्रदर्शनकारियों की प्रतिष्ठा को बदनाम करना, विरोध के समर्थन में हार्न बजा रहे प्रदर्शनकारियों के वाहनों को नष्ट करना, ईरानी डायस्पोरा की निंदा करना, विरोध के लिए विदेशी शक्तियों को दोष देना, और तथ्यों, नारों और घटनाओं को गलत ढ़ंग से प्रस्तुत करना।

भले ही राज्य के अधिकारियों जैसे कि गार्डियन का उंसिके सदस्य और विशेषज्ञों की सभा अहमद खातमी या ईरान के आईआरजीसी के कमांडर होसैन सलामी ने विरोध करने वाले ईरानियों को निषादन जैसे गंभीर परिणामों की धमकी दी है। तब भी विरोध प्रदर्शनों में कोई कमी नहीं आयी। तब भी नहीं जब यातना, बलात्कार और कैदियों को फाँसी देने के पहले मामले सार्वजनिक हुए।

ईरान में विरोध आंदोलन के इन पहले महीनों के बाद अभी भी यह जानना जल्दबाजी होगा कि विरोध प्रदर्शन किस ओर बढ़ रहे है। यह देखा जाना अभी बाकी है कि मौन और अनुपस्थित ईरानी तथा असंतुष्ट पादरियों का विशाल बहुमत अंततः इन प्रदर्शनों में शामिल होगा या नहीं। इस बीच नेताओं का एक उभरता समूह है जो प्रदर्शनकारी संगठन और गठबंधन बनाना शुरू करते हैं। एक संभावित तख्तापलट के बाद के लिए विशिष्ट मांगे तैयार करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में दृश्यता की प्रारंभिक अवधि के बाद, संघर्ष अक्सर नियमितीकरण की गति में प्रवेश करते हैं और शेष विश्व में समाचारों से बाहर हो जाते हैं। यह देखा जाना बाकी है कि क्या यह फिर से होगा और ईरानी शासन के प्रति अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की स्थिति क्या होगी। ■

सभी पत्राचार ***ग्लोबल डायलॉग*** एडिटर्स को <globaldialogue.isa@gmail.com> पर पर प्रेषित करें।

ISA PUBLICATIONS

GLOBAL DIALOGUE

ISA International Sociological Association

https://globaldialogue.isa-sociology.org/

@isagdmag

www.isa-sociology.org